परमादरणीय श्रीनीलाम्बर शर्मा
महाभागानां शुभकरकमलयोः
सादरं समर्पयति
[signature] ११।८।९३

श्रीपरमात्मनेनमः

कैलाशवासि सन्तसम्राट् श्री पूर्णगिरि जी महाराज

स्मृतिकल्पलता

अंक—१

श्रीवैक्रम सं० २०५०

# ★ श्री पूर्णवैष्णवाऽऽर्योदय पुष्पांजलिः ★

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐


प्रकाशक एवं वितरकः—

श्री गुरु पूर्णगिरिसंस्थान

श्री ऐरावती गंगा तटवर्ति

लखनपुर

( जम्मू प्रान्त )

मूल्य—भक्तिभाव से नित्य स्वाध्याय

१९९३ ई०

## श्रीपूर्णाऽऽविर्भावः

जम्बुप्रान्ते तविषि सरितः स्रोतसां कल्पमूले
गौरीकुण्डे हिमगिरिसुतास्नानपुण्योदकेषु ।
अत्रेर्वंशे परमतपसाराधानाद्यैश्च धन्ये
गण्ये मान्ये द्विजवरगृहे जन्मपूर्णं प्रभूणाम् ।
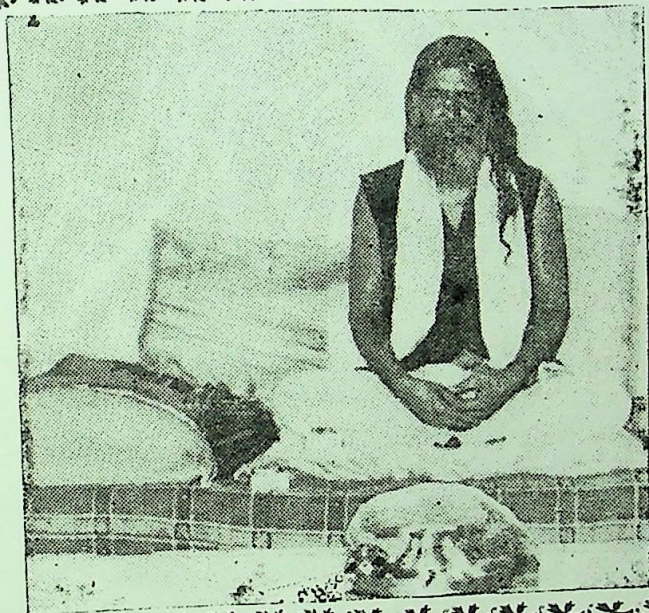
## श्रीपूर्णशिवसायुज्य प्राप्तिः

श्री) पूर्णात्मानो रसयुगनखे २०४६ वैक्रमे श्रावणे मा
गौरीकुण्डे पथिकसुखदं रम्यहर्म्यं विधाय ॥
कर्कस्थेऽर्के धवल दलभाक् पक्षतौ बुद्धवारे
योगेनान्त्ये जनुभुवि महादेवलोकं प्रपन्नाः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

# श्रीपूर्णवैष्णवाऽऽर्योदय पुष्पाञ्जलिः ॥

## भारतीय कर्मकाण्डप्रथा की कसौटी का महत्व

अलौकिक प्रतिभाशाली महामनीषी महर्षियों ने अलौकिक वैदिक विज्ञानसागर को मन्थन कर जो ज्ञान प्राप्त किया। उस वेद को हमारे तक पहुंचाने वाली एकमात्र कर्मकाण्ड की परम्परा है। कर्मकाण्ड कायिक-वाचिक-मानसिक तीनों प्रकार के मलों को जड़ से उखाड़ने वाला एक मात्र साधन है। चित्त के विक्षेप को निर्मूलन समर्थ उपासनाकाण्ड का निदान भी कर्मकाण्ड ही है। चित्तपर छाये हुए आवरण को दूर करने वाले ज्ञानकाण्ड का बालोपदेश भी कर्मकाण्ड ही है। भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निकले हुए वचनामृत के अनुसारः—

"नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥"

कोई भी व्यक्ति क्यों न हो वह एक क्षणभर भी विनाकर्म किये नहीं रह सकता। क्योंकि प्राकृतगुणों के अधीन होकर प्रत्येक व्यक्ति को कर्म करने के लिये विबश होना पड़ता है। कर्मों की विवशता प्रकृति पर आधृत है प्रकृति को शास्त्रों में 'परा' कहा गया है अतः सन्त तुलसीदास जी के मतानुसार "पराधीन सपने हुं सुख नाहीं" अर्थात् प्रकृतिजन्य होने वाले कर्म स्वप्न में भी सुख नहीं दे सकते। अतएव महर्षिओं ने प्रातः जागने से रात के समय सोने तक शास्त्रोक्त कर्मकाण्ड के विधान निश्चित कर दिये हैं। उनके अनुसार चलने वाले व्यक्ति स्वतन्त्ररूप से कर्मकाण्ड में लगे रहें तो वे कभी भी बन्धनों में नहीं पड़ते ना ही दुःखों द्वारा जकड़े जाते हैं।

शास्त्रोक्त कर्मकाण्ड केवल भारतभूमि की उपज है। भारत भिन्न देशों में मानव दुर्वासनाओं के पुजारी बन कर अनुदिन दुर्वासनाराधन का ही प्रचार कर संसार भर को डुबोने की युक्तियों के अनुसन्धान में संलग्न हैं।

सर्वश्रीमहावीर, महात्माबुद्ध, ईसा, मूसा, मुहम्मद आदियों ने भी कर्मकाण्ड, मूर्तिपूजादि के विरुद्ध खुलकर प्रचार किया किन्तु उनकी चलाई संस्थाओं में सनातनधर्म से भी अधिक प्रतीकवाद स्वरूप जैनमन्दिर, बौद्धमन्दिर गिरिजाघर, चर्च, मस्जिदें आदि के रूप में दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं। ये सभी वृहत्कर्मकाण्ड की ओर अनुदिन वृद्धिशील हैं अतः सिद्ध होता है, कि कर्मकाण्ड किया नहीं जाता, अपितु स्वयं हो जाता है। वही यदि शास्त्रोक्तपद्धति से गुरुमार्ग द्वारा किया जाए तो अद्‌भुत चमत्कारी एवं जगत् के लिए परमहितकारी रहेगा।

इस कर्मकाण्ड के उद्भव एवं विकास की ओर ध्यान दें तो शास्त्रिय मार्ग का आश्रय लेना पड़ेगा हमारे प्रत्येक कर्मकाण्ड के आदि में कलश को कर्मपात्र के रूप में प्रयुक्त किया जाता है और कलश की उत्पत्ति समुद्रमन्थन से प्रकट की गई है समुद्र मन्थन द्वारा भौगोलिक स्थान का ज्ञान इस प्रकार होगा कि समुद्रमन्थन का मन्थदण्ड मन्थर, मन्दर, मद्रसंज्ञक पर्वत को प्रयुक्त किया था उसे त्रिकूट मणिपर्वत के पर्याय से ग्रहण किया जाता है उस में "अधोमध्योर्ध्व" विष्णु भगवान् सम्भाले हुए हैं अतः वह "वैष्णवत्रिकूट-मणिपर्वत" मन्थन के रूप में आजभी अहोरात्र के प्रतिक्षण कर्मकाण्ड करने का सतत प्रचार अनादिकाल से करता आरहा है वह डुग्र देश की भूमि में स्वतः सम्भवी सदामुक्त द्वार, प्रतिक्षण कर्मकाण्ड की प्रतीक पूजा के अनन्तर जय जय कारों द्वारा गुंजायमान प्राकृत त्रिपिण्डी रूप में ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर की तीनों शक्तिएं ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी के रूप में विराजमान हैं वहीं मन्दर कन्दर में सप्तर्षि कामधेनु आदि देवताओं के आकार प्राकृतरूप में साकार हैं। यह तीनों शक्तिएं समस्त विश्व की आकर्षक प्रतीत होती हैं।

डुग्रभूमि में डोगरा प्रान्त प्राचीन कर्मकाण्ड परम्परापों को आज भी यथावत् पालन करता आरहा है। यहीं बाणगङ्गा, बालगङ्गा,

चरणगङ्गा के रूप में आकाशगङ्गा त्रिधारा होकर वह रही है। डुगर, डुग्र, डोगरा, डोंगरा, डोगरी, डोंगरी शब्द पर व्याकरण आधार से विचार करें तो "डुकृञ् करणे" धातु से ही कर्ता, कर्म, करण, कारण, क्रिया आदि शब्द निष्पन्न होते हैं— डु कृ ञ् से डु और ञ् की इत्संज्ञा लोप किये जाते हैं तो 'कृ' शेष मूल धातु रह जाता है डु और उसके अनुबन्ध हैं डु प्रत्यय धातु के अर्थ में कृत्रिमता लाने के लिए प्रयुक्त है इस का लोप होते ही "ड्वितो क्त्रिः" सूत्रसे "त्रि" प्रत्यय के साथ ही "त्रेर्मप्" से "मप्" होकर कृत्रिम बनता है डोगरा शब्द में प्राकृत रूप में डु अनुबन्ध को नहीं त्यागा 'डु कृ' को स्वीकार किया एवं गृ घृ से बने गृ शब्दे, गृ निगरणे, गृ विज्ञाने इन धातुओं का कृ के स्थान में आदेश करके डुकृ, डुगृ, डुघृ, डुगृ से हो डुकृ डुकर, डोकरा डुग्र डोगरा, डुगर डोंगरी, डुघर, डोंघरा आदि शब्द बनते हैं डुकर डुक्र डोकरा, प्राचीन कर्मकाण्ड प्रिय, डुग्र, डोगरा डोगरी से सेचन, शब्द विज्ञाननिष्ठ, पर्वतप्रधान प्रकृति का सूचक है नेपाल में भी कृ के स्थान में गृ करने पर भी "गरना" करना अर्थ में ही रहता है जैसे नेपाली में "कि गर्नु छ ?" हिन्दी में "क्या कर रहे हो ?" अर्थ ही रहता है। उधर अंग्रेजी में इसी डु=Do को क्रियार्थक माना है, अतः डुग्र अर्थ सार्थक एवं संस्कार युक्त देश का एवं देशीय व्यक्ति का बोधक है डोंगरा, या डूंगडा, डूंगडी डोंगडी शब्द मथने के पात्र के लिये प्रयुक्त होता है अथवा डुगर्गरी, डोगर्गरी, शब्द से प्रतीत होता है यह समग्र डोगरा देश ही मन्थन पात्र और वैष्णव त्रिकूट मणिपर्वत ही 'मन्थ' मन्दराचल पर्वत है अतः भौगोलिक स्थिति से परीक्षण करें तो मं=५, थ=७ अंकानां वामतो गति न्याय से ७५° अंश "हरि ओमक नगरी[1]" से पूर्व रेखांश एवं डु=३, गृ=३,=३३° अंश नाडी वृत्त (विषुववृत्त) से उत्तर अक्षांश के सम्पात पर जो देश आए अर्थात् भूमध्यरेखा से उत्तर ३३° अक्षांश और याम्योत्तरगामिनी ग्रीनवीचीय भूमध्य रेखा से पूर्व ७५° पूर्वापरगामिनी रेखांश का सम्पात श्रीवैष्णव त्रिकूटमणिपर्वत पर ही आता है। वही समुद्र मन्थन प्रदेश है वही वैष्णव भूमि त्रिकूट पर्वत है जो "वैष्णव देवी मन्दिर" के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। मन्थपात्र रूप (डोगरा देश) ही है कामधेनु और उच्चैःश्रवा की उत्पत्ति का

१. ग्रीनवीचनगरी।

स्थान सुरभिसर (सरुंहीसर) है वहां सरोवर और उसकी पूर्वभूमिका आकार गोखुर के आकार का है वहीं "घोड़ा कुप्पड़" रूप घोड़े के खुर के आकार का एक विशाल पर्वतखण्ड है। एवं कौस्तुभमणि तथा चन्द्रमा के निकलने का मूल स्थान मणिसर या मानससर है। एवं अन्यान्य प्रमाण भी उपस्थित किए जा सकते हैं जैसे त्रिकूट पर अग्निकुण्ड, सूर्यकुण्ड और चन्द्रकुण्ड हैं अमृत वितरण के समय सूर्यकुण्ड और चन्द्रकुण्ड के मध्य भैरवघाटी में आज भी राहुशीर्ष (भैरो का सिर) एव वैष्णव द्वार में केतु के रूप में राहु का कबन्ध 'भैरव का धड़' बताया जा रहा है। आद्याकुमारी के स्थान में लक्ष्मी का उद्भव स्थान प्रत्यक्ष है हाथी मत्था ऐरावत का प्रतीक सर्वविदित है ही। "आर्यावर्त" की मौलिक स्थिति का द्योतक आर्यश्रीनगर (रियासी नगर) आज भी डोगरे देश में आर्यों के श्रीगणेश की ऐतिहासिक प्राचीनता को प्रकट करता आ रहा है। अतः यही समुद्र मन्थन प्रदेश शास्त्रिय लक्षणों द्वारा सिद्ध होता है मन्दर कन्दर के अन्दर प्राकृतरूप से चतुर्दश रत्न बने हुए दृग्गोचर होते हुए शास्त्र प्रमाणों के साक्षी हैं। "श्रीपूर्णवैष्णवार्योदय पुष्पाञ्जलिः" जैसे प्रस्तुत लघुकाय ग्रन्थ में वैष्णवदेवी सहस्रनाम पूजाविधि सहित ५७ संख्यक शार्दूल विक्रीडित छन्दों में प्रस्तुत किया गया है। शार्दूल विक्रीडित छन्द में १९ अक्षर एक पाद में होते हैं चारों पादों में १९×४=७६ अक्षर एवं ७६×५७ श्लोकों में ४३३२ अक्षर बृहस्पति कक्षा वृत्तमें एक बार भ्रमण करने की दिवस संख्या ४३३२ को प्रकट करते हैं। एक वार पाठमात्र में ४३३२ दिनों के पाठ का महत्व प्राप्त होता है।

भारतीय सनातनधर्म का समग्र कर्मकाण्ड आकाशीय सूर्यचन्द्रादि ग्रहों की गतिविधि पर आधृत है यहां शास्त्रविरुद्ध मनमानी को स्वीकार नहीं किया जाता। जैसे सूर्यचन्द्र और भूमि एक सीध पर हों तो अमावस्या मानी जाती है फिर चन्द्रमा सूर्य से १२°-१२° अंश पर एक-एक तिथि बनाता जाता है पञ्चमी के दिन ६०° अंश में दो राशि तथा पञ्चमी तिथि दोनों की पूर्ति होती है एवं १८०° अंश पर छः राशि और पूर्णिमा तिथि की पूर्ति में षोडशीकला का आरम्भ माना जाता है इसी प्रकार २४०° पर आठ राशि और कृष्ण पञ्चमी, ३००° अंश पर १० राशि और कृष्ण दशमी, ३६०° अंश

कर सूर्य और पृथ्वी के मध्य में चन्द्रमा एक सीध पर आकर चक्रपूरा कर लेता है यहां भूः=अग्नि भुवः=चन्द्रमा (वायु) एवं स्वः=सूर्यनारायण तीनों व्याहृतियों के स्वरूप हैं पृथ्वी (अग्निः) की १० कला, सूर्य १२ कला, और चन्द्रमा की १६ कला भारतीय निगमागम में स्वीकार किया है। तीनों का योग १०+१२+१६=३८ कला हो जाती हैं। अतः पञ्चमी से पंचोपचार, दशमी से १० दशोपचार, षोडशी से षोडश १६ उपचार और ३८ से अष्ट-त्रिंशोपचार ही शास्त्र सम्मत है। १६ षोडशी का आधे पर अष्टोपचार षोडशी को द्विगुणाकर ३२ उपचार भी शास्त्र सम्मत हैं। शेष शतोपचार, सहस्रोपचार, लक्षोपचार आदि राजोपचार महाराजोपचार, महाराजाधिराजो-पचार के रूप में भी प्रयुक्त किये जाते हैं। सभी उपचारों में सूर्यचन्द्र के प्रभाव से विशेष गुण सम्पन्न वस्तुओं की ही भूमि में उत्पत्ति के आधार पर सभी उपचारों का प्रयोग किया जाता है। यही गण्डतिथि स्थावर जंगम संसार के लिये घातक मानी जाती हैं। इनमें उत्पन्न उपद्रवों को शान्त करने के लिये देवताओं की पूजा के व्याज (बहाने) से आत्मकुटुम्बरक्षार्थं उपचारों की रचना की गयी है।

प्रतिपदा से अमावास्यातक सभी तिथिएं नक्षत्र, योग, करणादि सभी में व्रत मुहूर्तादि आकाशीय ज्योतिष्पिण्डों के आधार पर वैदिक विज्ञान सम्मत हैं। जन्म से मरणदिन से ११, १३, १६, ३० दिन सूतक पातकादि का विधान भी वैदिक विज्ञानपर निर्भर है।

तिथियों की वृद्धि और ह्रास दोनों आकाशीय ज्योतिष्पिण्डों के आधारपर होते हैं उनमें वृद्धिक्रम एकोत्तर वृद्धि से चलकर दसदिन तक चलता है उस गतिवृद्धि में ह्रास होता जाता है जैसे पहले दिन एक घटी, दूसरे दिन दो घटी, तीसरे दिन तीन घटी, इसी प्रकार दशम दिन १० घटी तक वृद्धि होती है एकोत्तर वृद्धि गणनाक्रम से दशमें दिन के वाद ग्यारहवें दिन ग्यारह घटी वृद्धि न होकर १० घटी ही वृद्धि होती है दशमें दिन तक ५५ घटी होती है ११वें दिन ५५+१०=६५ घटी होती है अतः एकादशी तिथि की वृद्धि ह्रास होने से नरकादि में पतन के भय से एकादशी में व्रत, उद्यापन, दान, पुण्यादि से ऊर्ध्वगति प्राप्त होती है। अतः दशम दिन तक ही ब्राह्मण,

क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के सूतक और पातक की अवधि मानी जाती है अतः दशम दिन में सूतक, पातकोत्तर प्रायश्चित्तस्नानादि विहित हैं। ब्राह्मण को ११वें या बारहवें दिन, क्षत्रिय को १३वें, वैश्य को १६ या १७वें दिन जातक का नामकरण और मृतक की नारायणबलि और्ध्वदैहिक क्रियादि विहित है। जातक के नामकरण संस्कार से आयुष्य वृद्धि एवं मृतक की और्ध्वदैहिक क्रिया उसकी नरक पतनादि से सुरक्षा और स्वर्गादि का द्वार खुलजाता है।

३६० अंशात्मक सौर वर्ष में ३६५.२५६३६२८ दिनात्मक सावन सौर वर्ष होता है। इतने समय में ३७१.०६२३६०५ दिनात्मक चान्द्रवर्ष माना जाता है जिसमें ५.८०६०२८०७ दिन क्षय हो जाते हैं। अतः ३६५.२५६३६२८÷३=१२१.७५२१२०६ सौर वर्ष के त्रिभाग का मूल लिया तो $\sqrt{१२१.७५२१२०६}$=११.०३४१३४३५ यह संख्या सौर वर्ष का ३३.१०२४०३०७वां भाग समझें स्वल्पान्तर से सौर वर्ष में प्रायः ३३ संख्या प्रायः ११ बार सम्पन्न होती है एवं ११ संख्या ३३ बार प्रयुक्त होती है अतः ११ या १२वें दिन ब्राह्मण के सूतकोत्तर या पातकोत्तर कृत्य विहित हैं। इसी अर्थ का प्रतिपादक आरती मन्त्र वेदों में उपलब्ध होता है।

ॐ ये देवासो दिव्येकादशस्थ पृथिव्यामध्येकादशस्थ ।
अप्सुक्षितो महिनैकादशस्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥

भू. चन्द्र. सूर्य का सम्बन्ध देवता लोगों की आरती उतारता हुआ ११ दिन भूलोक में फिर ११ दिन अन्तरिक्ष में और फिर ११ दिन दिव्यलोक में देवताओं को प्रसन्न करता है इसी प्रकार एक सौर वर्ष में ३३-३३ दिन की ११ आरती उतारता रहता है। अत वैदिक आरती के तीनों मन्त्रों का यही रहस्य है।

## ग्रहजातक

ग्रहजातक भी महत्वशील तत्व है। इससे तिथिनक्षत्र के योग से सूर्यादि का विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है उस समय किसी भी विवाह, विद्या, कृषि, प्रवेश, निर्गम, वस्त्र, प्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, गुरुदीक्षा, व्यापार, मुकद्दमा,

नौकरी आदि में नितान्त असफलता का अनुभव होता है। १. सूर्यजातक— दशमीतिथि भरणीनक्षत्र का योग। २. चन्द्रजातक— त्रयोदशी व चतुर्दशी चित्रायोग। ३. भौमजातक— दशमी उत्तराषाढायोग। ४. बुधजातक— नवमी धनिष्ठायोग। ५. गुरुजातक—एकादशी उत्तराफाल्गुनीयोग। ६. शुक्रजातक—नवमी ज्येष्ठायोग। ७. शनिजातक—अष्टमी रेवतीयोग (किन्तु सौराष्ट्र, महाराष्ट्र में वैशाख कृष्णअमा एवं उत्तर भारत में ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को शनिजयन्ती लगाई जाती है अतः अमावस्या कृत्तिका योग जाने)। ८. राहुजातक— पूर्णिमा भरणीयोग। ९. केतुजातक— अमावस्या आश्लेषायोग। इसी प्रकार का एक और योग भी सन्तान जन्म में घोर उपद्रवकारी देखा गया है—

घोरसंकटकारी योग—

रवि शनि मंगल तीनों रेखा, अश्विनी भरणी अश्लेषा।
आप मरे औरों को मारे, आसपास के घर उजाड़े॥

नामधारे तो पण्डित मारे, विवाह समय मण्डप जल जावे।
इस की शान्ति शीघ्र करावे, नहीं तो घर से बहिर भगावे॥

उक्तवारों व नक्षत्रों के योग आने पर नक्षत्राधीश एवं वाराधीश देवता का जप और गण्डमूल शान्तिवत् समग्रकृत्य अनिवार्य हैं।

भगवन्नाम महिमा का भी शास्त्रों में अद्भुत वर्णन आता है। उसके बिना सर्वशास्त्रज्ञ होने पर भी मनुष्य को प्रेत, पिशाच या ब्रह्म राक्षसादि योनियों में भटकना पड़ता है। इस जप रहस्य द्वारा सन्त लोग अनधीत होने पर भी मुक्त हो गये हैं। सन्तमत राधास्वामी पथ प्रवर्त कभी लिखते हैं कि—

कबीरा धारा अगम की सद्गुर देई लखाय।
ताहो को उलटा करी जपे स्वामी संग मिलाय॥

धारा का उलटा राधा के साथ स्वामी शब्द जोडकर जप का विधान सन्त कबीर की वाणी से उद्धृत है।

सिक्ख (शिष्य) सम्प्रदाय प्रवर्तक सन्त शिरोमणि गुरु नानकदेव जी भी भगवन्नाम महिमा गाते-गाते नहीं अघाते। अपने ग्रन्थ में भगवान् की अनन्त नामावली प्रस्तुत की है। उनके अनुयायी सन्तो ने गुरु शब्द के उच्चारण को व्याकरण के आधार पर हे गुरो ! हे गुरू ! हे गुरवः ! से बहुवचन को लेकर दशगुरुओं को समक्ष रखकर दसवार उच्चारण किया तो "वाहेगुर" मन्त्र अपने आप प्रकट होकर शिष्य सम्प्रदाय के जपमहत्व को परमगति का सूचक है। भगवन्नाम महिमा में मनमाना अर्थ करना भी प्रमाद है उसके फलस्वरूप पाणिनि, पतञ्जलि, पिङ्गल जैसे महर्षियों और भट्टोजिदीक्षित जैसे उद्भट पण्डितों को भी पशुओं या जलचरों द्वारा मर कर पैशाचिक योनियों के बन्धन में पड़कर यमयातना भुगतनी पड़ती है।

"तस्यपरमाम्रेडितम्" यहां आम्रेडित का अर्थ वैयाकरण लोग "म्र ृ उन्मादे" आङ्+म्रेडितम् उन्मादरोगवश दो से अधिक वार किसी शब्द का उचारण किया जाए उसकी आम्रेडित संज्ञा होती है। ऐसा अर्थ करने से कुछ वैयाकरण पण्डितों को पिशाच बनना पड़ा ऐसा लोक प्रवाद है। वास्तव में इसका अर्थ है "आम्र इव ईडितम्" आम्र फलास्वादनमिव मुखे बाह्याभ्यन्तरी कृत्य समभ्यस्तं आम्रेडितसंज्ञं भवति। अमातिथिः, आम्र वृक्षः, वसंतऋतुः पुंस्कोकिलः इतिचतुर्णां संयोग एव पुंस्कोकिलः कुहूकुहू शब्दंसमुच्चारयति इसमर्म को संस्कृतसाहित्यमर्मज्ञ, रामरसायनमर्मज्ञ, तिथितत्ववेता देवज्ञ या साक्षात् शुक्राचार्य हो जान सकता है। आम्र शब्द का शीघ्रातिशिघ्र उचारण करने से ही "वाल्मीकि भये ब्रह्मसमाना" ऐसा संत चक्रचूडामणि तुलसीदास का मत है। अब भी उच्चारण करते २ स्वयं ही आम्र आम्रशब्द राम राम के रूप में परिणत हो जाता है।

इस "श्रीपूर्णवैष्णवाऽऽर्योदय पुष्पाञ्जलि" में मानवमात्र की आध्यात्मिक उन्नति के लिए समस्त विषयों को पांच भागों में विभक्त किया गया है। सर्वप्रथम भूमिका में कर्मकाण्ड की विशेषता एवं उससे आत्मोन्नति की अनिवार्यता प्रकट की गई है। ग्रन्थारम्भ के मुखपृष्ठ में गुरुदेव जी का चित्र, उनकी प्रशस्ति एवं हिन्दी में संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है। ग्रन्थारम्भ श्रीगणेश, गुरु, दत्तात्रेयस्तुति, शिवस्तुति परक पञ्चाक्षर, महिम्न,

शिवतत्त्व एवं दत्तात्रेय जी के २४ गुरुओं की परिचिति प्रथम भाग में प्रस्तुत है। प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठना, नित्यकृत्य, स्नान, त्रिकालसन्ध्या, तर्पण, बैष्णोपनिषद्, संक्षिप्त पूजा, श्रीकृष्ण पूजा, कलशस्थापन पूर्वक गणेशपूजा, माला द्वारा जपविधि, बैष्णवी सहस्रनाममाला, शिवार्चनविधि, मुख्य देवताओं के स्तोत्र, संकल्प में तिथि, वासादि का अंग्रेजी तारीख से ज्ञान, परदेवी सूक्त, हनुमत् स्तोत्र कुशकण्डिका होमपर्यन्त द्वितीय भाग में प्रस्तुत है। आरती परिचय एवं उपयोगी आरतिएं एवं वन्दनाएं। डोगरीके प्रसिद्धकवि दत्तदेव का कमलनेत्रस्तोत्र भगवन्नाम का महत्त्व उपनिषदों के प्रमाणों द्वारा सिद्ध रामनाम की महिमा पर्यन्त चतुर्थभाग में प्रतिपादित है। षडक्षर राममन्त्र विधान, गायत्री रामायण, वैदिक रामायण, आदित्यहृदय (वाल्मीकि) एक श्लोकी रामायण, भागवत, महाभारत, दुर्गा ग्रहजातक एवं शिवजी की आरती और गुरु जी के शिवसारूप्यमोक्षपर्यन्त विषय पञ्चम भाग में प्रस्तुत हैं। इस से स्वामी १०८ श्रीपूर्णगिरि जी महाराज के शिष्यवर्ग में अवश्य भक्तिरस का सञ्चार होगा। ऐसे सन्त सम्राट् कभी शरीर छोड़ भी दें तो वे आत्मरूप से सर्वव्यापक होते के कारण अपने शिष्यों के हृदय में जागरूकता एवं प्रभु भक्ति रसायन का सञ्चार करते ही रहते हैं। वे अपने बनाये हुए मन्दिर यज्ञशाला आदियों में अवश्य विद्यमान रहते हैं। गुरु शब्द सुनते ही शिष्य के हृदय में नवीन चेतना का उदय हो जाता। मनुष्य को श्रद्धा एवं भक्ति से कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए अन्यथा कुमार्ग में जान देनी पड़ती है।

## स्वामी १०८ श्रीपूर्णगिरि महाराज जी का संक्षिप्त परिचय।

जगज्जननी भगवती श्री गौरी जी की परमपावन तपोवन गौरीकुण्ड जो आज भी शुद्धमहादेव के शुद्धिक्षेत्र में विद्यमान है वहां श्रीलालजीगिरि के घर में जन्म लेकर छोटी आयु में ही भगवच्चिन्तन में मग्न रहते थे १९ वर्ष की आयु में सेना में भरती होकर भगवद् भजन एवं निःशुल्क रोगी सेवार्थ अचूक चिकित्सा के करने में निपुण रहे सेवानिवृत्त होकर जूनागढ संन्यासी अखाड़ा से दीक्षित होकर अखण्ड ब्रह्मचारी रहकर बनी (चम्यालय), कुकुराला, माड़ा, सुन्दरीकोट, महानपुर भूंडे, भड्डू, फिनेतर, कोध, ब्रह्म।

कलवाल, छन्न रोडेयां मुट्ठीनारन आदि स्थानों को तीर्थरूप में परिणत करने के लिये अनेक प्रकार के यज्ञ करते कराते, देवी देवताओं के मन्दिर निर्माण के साथ २ ही भूले भटके लोगों को मार्ग दिखाते एवं उन के जीवन का उद्धार करते हुए लखनपुर में ऐरावती नदी के तट पर समस्तकिले का सुधार कर वहां शंकराचार्य का मन्दिर बनाकर किले के बाहिरी भाग में एक विशाल यज्ञशाला (पञ्चकुण्डी) के साथ भोजनशाला आदि का प्रबन्ध करने के पश्चात् १९८७ ई० में गौरीकुण्ड पहुंच कर वहां के मन्दिरों का जीर्णोद्धार एवं यात्रियों के निवासार्थ विशाल भवन निर्माण कर अनन्त शिष्यों के हृदय सम्राट सिद्ध परिव्राट् वैक्रम संवत् २०४६ श्रावण कृष्ण अमावस्या के पर्व पर पुनः गौरीकुण्ड पहुंच कर श्रावण शुक्ला प्रतिपदा बुधवार ( २ अगस्त १९८९ ई०) प्रातः सूर्योदय जैसे पुण्य समय समाधि में स्थित हो कैलाशाधीश महादेव के रूप में सारूप्यमोक्षभाव को प्राप्त हुए। उन्हीं की सत्प्रेरणा से अंतिम निर्वाणात्मक पुण्यश्लोक लिखा गया है। ऐसे महात्माओं के दर्शन, स्मरण एवं ध्यान द्वारा भी सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं

व्यास (गुरु) पूर्णिमा पर्वोत्सव — विदुषां वशंवदः—
वैक्रम सं० २०५० शनिवार — विहारीलाल शर्म वासिष्ठ
आषाढ प्र० २० (३।७।९३) — श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ
२३, श्री रघुनाथपुरी जम्मू (तविषी) — शास्त्रीनगर जम्मू (तविषी)

卐 ॐ श्रीगणेशाय नमः 卐

# श्रीपूर्णवैष्णवाऽऽर्योदय पुष्पाञ्जलिस्थ विषय सूचिका

| विषय | पृष्ठ सं० |
|---|---|


भाग—४



| विषय | पृष्ठ सं० |
|---|---|


भाग—५

## स्व० स्वामि श्री १०८ पूर्णगिरि गुरु प्रशस्तिः

जम्बुप्रान्ते तविषि सरितः स्रोतसां कल्पमूले
गौरीकुण्डे हिमगिरि सुतास्नान पुण्योदकेषु ।
शुद्धिक्षेत्रे जगति विदिते गोमुखीवाद्वितीये
गङ्गाद्वारे भुवनमहिते धूर्जटेः काशीकूटे ।१।

जाताऽत्रैव प्रवरसरितां देविका ब्रह्मसूत्रं
त्रैधावृत्वा तविषिसरितं दक्षवामभ्रमन्ती ।
उत्त्रैवेण्यामुधमपुर भू मण्डले जन्दराहे
गुप्ता साक्षाद्भवति नियतं भूतलं पावयन्ती ।२।

अत्रेर्वंशे परमतपसाराधानाद्यैश्च धन्ये
गण्ये मान्ये द्विजवरगृहे जन्मपूर्णं प्रभूणाम्
वाल्येऽपी मे सकल कृतिषु कौशलं दर्शमाना
भृत्ये कृत्ये ऽप्यधिकनिपुणाः सैनिकेष्वग्रगण्याः ।३।

भृत्यन्तेऽमी यतिवरगणे पूजनीयेषु पूज्याः
भूंढेवन्यां फणिधरपुरे कौघभड्डू मुनीशे
सुन्द्रीकोटे किशनपुरके सुःकरालालयेऽर्च्ये
साडा विश्वस्थलिपुरवरे सान्द्रिहट्टें च थें च ।४।

प्लेसक्षेत्रे लखनपुरभू भद्रबाहुपुराख्ये
कल्पालाख्ये नरनमुठिके छन्निनाम्नीह धाम्नि

देवीदेव प्रतिमभवनानीह निर्मापयन्तः
यज्ञैर्यागैरनुदिनममी वेदिपूजानुसारम् ।५।

पौनः पुन्यं लखनपुरगा यज्ञशिक्षार्थमेते
रम्यं हर्म्यं सशिवशिवा शंकराचार्य सध्यम् ।
ऐरावत्या महितपुलिने यज्ञशालां विशालां
पञ्चप्रख्यैरचलनवलैः कुण्डकैः शोभमानाम् ।६।

वेदीमेकांस्थपति रचितां दूरतो दीप्यमानां
निर्माप्याशु क्रतुवर हितं सेवकैः शिष्यवर्य्यैः
युक्तामुक्ता अपि च जगतां धन्यमान्या वदान्या
मर्यादाया ह्यचल द्रढ़िमां शिक्षणार्थं प्रसक्ताः ॥

श्रीगणेशायनमः

## श्रीगणेशवन्दना

गलद्दानगण्डं मृलद्भृङ्गषण्डं
चलच्चारुतुण्डं जगत्प्राणिशौण्डम्
कनद्दंतकण्डं विपद्भंगचण्डं
शिवत्प्रेमपिण्डं भजे वक्रतुण्डम् ॥

## गुरुवन्दना

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तो गृहाण परमेश्वर ॥

# ॐ श्रीगुरुदत्तात्रेयाष्टकः

हरिः ॐ गुरुजी दिगम्बर, दत्तजी दिगम्बर, अलखजी दिगम्बर, स्वामीजी दिगम्बर, चढ़ावें खाकम्बर, पहिने पीताम्बर, बिछि है बाघम्बर, कानों में कुण्डल, हाथ कमण्डल, चरण खड़ाऊँ, गुरुजी तले है धरती, गुरु ऊपर अम्बर, परमहंस महामुनी । श्री सती अनुसुया माता जी के खेलन नन्दन, चढ़त चन्दन, झूलत नन्दन, दर्शन देओ श्रीगुरुदेवदत्त दिगम्बरम् । टेक० ॥

हरि ॐ गुरु जी पूर्व दिशा में गुरुजी प्रकट भये, दत्तजी प्रकट भये, अलख जी प्रकट भये, स्वामी जी प्रकट भये, श्री वेदपूजा पुजावितम्, श्रीवेदपूजाकि अधिक महिमा, गुरु सरस लीला हो दर्शन देओ श्रीगुरुदेवदत्त दिगम्बरम् ।१।

हरिः ॐ गुरु जी दक्षिणदिशा में गुरुजी प्रकट भये, दत्तजी प्रकट भये, अलख जी प्रकट भये, स्वामी जी प्रकट भये, श्री दण्ड कमण्डलु पुजावितम्, श्रीदण्डकमण्डल की अधिक महिमा गुरु सरस लीला हो, दर्शन देओ श्रीगुरुदेवदत्त दिगम्बरम् ।२।

हरि ॐ गुरु जी पश्चिम दिशा में गुरुजी प्रकट भये, दत्त जी प्रकट भये, अलख जी प्रकट भये, श्री गोला-ठुमरा पुजावितम् श्रीगोलाठुमरा कि अधिक महिमा, गुरु सरस लीला हो, दर्शन देओ, श्रीगुरुदेवदत्त दिगम्बरम् ।३।

हरि ॐ गुरु जी उत्तर दिशा में गुरु जी प्रकट भये, दत्तजी प्रकट भये, अलखजी प्रकट भये, स्वामी जी प्रकट भये, श्री धूनि-

ाउड़ी पुजावितम्, श्रीशीशमुकुट की अधिक महिमा, गुरु सरस ीला हो, दर्शन देओ श्रीगुरुदेवदत्त दिगम्बरम् ।४।

हरि ॐ गुरु जी आकाशलोक में गुरुजी प्रकट भये, दत्तजी ।कट भये, अलखजी प्रकट भये, स्वामी प्रकट भये, श्री शीश ुकुट पुजावितम्, श्रीशीशमुकुट की अधिक महिमा, गुरु सरस ीला हो, दर्शन देओ श्रीगुरुदेवदत्त दिगम्बरम् ।५।

हरि ॐ गुरुजी मृत्युमण्डल में गुरुजी प्रकट भये, दत्तजी ।कट भये, अलखजी प्रकट भये, स्वामीजी प्रकट भये, श्री कोटि लिङ्ग पुजावितम, श्रीकोटिलिङ्ग की अधिक महिमा, गुरु सरस ीला हो, दर्शन देओ श्रीगुरुदेवदत्त दिगम्बरम् ।६।

हरि ॐ गुरु जी पाताललोक में प्रकट भये, दत्त जी प्रकट भये, अलख जी प्रकट भये, स्वामी जी प्रकट भये, श्री चरण - पादुका पुजावितम्, श्रीचरणपादुका की अधिक महिमा, गुरु सरस लीला हो, दर्शन देओ श्रीगुरुदेवदत्त दिगम्बरम् ।

हरिः ॐ गुरुजी दिगम्बर, दत्त जी दिगम्बर, अलख जी दिगम्बर, स्वामी जी दिगम्वर, चढ़ावें खाकम्बर, पहिनें पीताम्बर, बिछि है बाघम्बर, कानों में कुण्डल, हाथ कमण्डल, चरण खड़ाऊँ, गुरुजी तले है धरती, गुरु ऊपर अम्बर, वरमहंस महासुनी, श्रीमती असुइया माता जी के खेलत नन्दन, चढ़त चन्दन, झूलत नन्दन, दर्शन देओ श्रीगुरुदेवदत्त दिगम्बरम् । टेक ।

## (श्री गुरु पदाश्रय प्रार्थना)

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ।१।

मन्दारमालाकुलितालकायै
कपालमालाङ्कितकन्धराय ।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराये
नमः शिवायै च नमः शिवायः ।२।

श्री अखण्डानन्दबोधाय शोकसन्तापहारिणे ।
सच्चिदानन्दरूपाय शङ्कराय नमो नमः ।३।

## अथ शिव-पञ्चाक्षर-स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ।१।

मातङ्गचर्माम्बरभूषणाय
समस्तगीर्वाणगणार्चिताय ।
त्रैलोक्यनाथाय त्रिपुरान्तकाय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ।२।

शिवामुखाम्भोजविकासनाय
दक्षस्य यज्ञस्य विध्वंसनाय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ।३।

वसिष्ठकुम्भोद्भगौतमार्य-
मुनीन्द्र वंद्याय गिरीश्वराय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषभध्वजाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ।४।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ।५।

शिवपञ्चाक्षरिमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।६।
इति पञ्चाक्षरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

## अथ शिववन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरः साक्षाति् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोपदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं पूजामूलं गुरोः कृपाः ।।

अखण्ड मण्लाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेव नमस्कारं केशवं प्रति गच्छति ।।

केशवं क्लेशनाशाय दुःखनाशाय माधवम् ।
श्रीहरिः पापनाशाय गोविन्दं मोक्षदायकम् ।।

मन्त्र सत्यं पूजनं च सत्यं देव निरंजनम् ।
गुरुर्वाक्यं सदा सत्यं सत्यमेकं पवं पदम् ।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष महेश्वरः ।।

प्रातःकाले शिवं दृष्ट्वा निशापापं विनश्यति ।
आजन्नकृतमध्याह्ने सायाह्ने सप्त जन्मनि ।।

मेरुकाञ्चनदानानां गवां कोटिशतैरपि ।
पञ्चकोटि तुरङ्गानां तत्फलं शिवदर्शनात ।।

हरि ॐ त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।।

माला कमण्डलु लसत् कर पक्ष युग्मे ।
मध्यस्थ पाणि युगले डमरु त्रिशूलौ ।।

यस्योर्ध्वपाणिपटले शुभ शंख चक्रः ।
वंदेऽदितित्रिवरद भुजषट्क युक्तम् ।।

आकाशे कारिकालिङ्गं पाताले बटुकेश्वरम् ।

मृत्युलोके महाकालं सर्वलिङ्गं नमोऽस्तुते ॥

जटाधरं पाण्डुरङ्गं शूलहस्तं दयानिधिम् ।
सर्वरोगहरं देवं दत्तात्रेयमहं भजे ॥

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ॥

## अथ शिवमहिम्नःस्तोत्रस्य पूर्वपीठिका

गजाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

### अन्धक उवाच

कृत्स्नस्य योऽस्यजगतः सचराचरस्य,
कर्ताकृतस्य च तथा सुखदुःखदाता ।
संसारहेतुरपि यः पुनरन्तकाले,
तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।१।

यं योगिनो विगत मोहतमो रजस्का,
भक्त्येकतानमनसो विनिवृत्तकामाः ।
ध्यायन्ति येऽखिलधियोऽमितदिव्यमूर्तिं,
तं शङ्करं शरणद शरणं व्रजामि ।२।

यश्चन्द्रखण्डममलं विलसन्मयूखं,
बद्धा सदा सुरसरिच्छिरसा बिभाति ।

यस्यार्धदेहभयजाद्   गिरिराजपुत्रीं,
तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।३।

यः, सिद्धचारणनिषेवित पादपद्मो,
गङ्गामहोर्मिविषमां गगनात् पतन्तीम् ।
मूर्ध्नादधे सजननीं त्रिजगत् पुनन्तीम्,
तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।४।

कैलाश शैलशिखरं प्रविकम्प्यमानम्,
कैलाश शृङ्ग सदृशेन दशाननेन ।
यः पादपद्मपरिपीडन - सेव्यमानं,
तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।५।

यक्षाध्वरे च नयने च तथा भगस्य,
पूष्णस्तथा दशनपंक्तिमशातयद्यः ।
व्यष्टम्भयत्कुलिशहस्तमहेन्द्रमीश,
तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।६।

येनासकृदितिसुताश्च दनोः सुताश्च,
विद्याधरोरगगणाश्च वरैः समग्रैः ।
संयोजिता मुनि वराः फलमूलभक्षा-
स्तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।७।

एवं कृतेऽपि विषयेष्वपि सक्तभावा,
ज्ञानेन च श्रुतिगणैरपि तेन युक्ताः ।

यं संश्रिताः सुखभुजः पुरुषा भवन्ति,
तं शङ्कर शरणदं शरणं व्रजामि ।८।

ब्रह्मेन्द्रविष्णुमरुतां च सषण्मुखानां,
योऽदाद्वरान्सुबहुशो भगवान्महेशः ।

सूतं च मृत्युवदनात् पुनरुज्जहार,
तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।९।

आराधितस्तु तपसां हिमवन्निकुञ्जे,
धूम्रव्रतेन तपसा च परैरगम्यः ।

संजीवनीं समददाद् भृगवे महात्मा,
तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।१०।

क्रीड़ार्थमेव भगवान्भुवनानि सप्त,
नानानदीविहगपादपमण्डितानि ।

सब्रह्मकानि ससृजे सुकृताभिधानि,
तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।११।

यः सव्यपाणि कमलाग्र नखेन देव-
सा पञ्चमं प्रसभमेव करालरन्ध्रम् ।

ब्रह्मा शिरस्तरणि पद्मनिभं च कर्ता,
तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि ।१२।

यः पठेत् स्तुतिमिवां शुचिकर्मा,
यः शृणोति सततं शिव भक्तः ।

विप्रः संसदि सदा शुभकर्मा,

सः प्रयाति शिवलोकमखडम् ।१३।

इति शि० म० स्तोत्रस्य पूर्वपीठिका सम्पूर्णा

## अथ शिवमहिम्नःस्तोत्रप्रारम्भः

### पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।

अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ।१।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।

स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ।२।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् ! किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।

मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ।३।

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।

अभव्यानामस्मिन् वरद ! रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ।४।

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन् मुखरयति मोहाय जगतः ।५।

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर ! संशेरत इमे ।६।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्याद् ऋजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ।७।

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद ! तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितं
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ।८।

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन ! तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ।९।

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिहरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश ! यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ।१०।

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर ! विस्फूर्जितमिदम् ।११

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ।१२।

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद ! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो
र्न कस्याऽप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ।१३।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ।१४।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखा ।
स पश्यन्नीश ! त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ।१५।

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ।१६।

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ।१७।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ।१८।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन् नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर ! जागर्ति जगताम् ।१९।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा कृतपरिकरः कर्मसु जनः ।२०।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता–
मृषीणामार्त्त्विज्यं शरणद ! सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ।२१।

प्रजानाथ नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।२२।

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन ! पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देव यमनिरत ! देहार्धघटना––
दवैति त्वामद्धा बत वरद ! मुग्धा युवतयः ।२३।

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर ! पिशाचाः सहचरा–
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद ! परमं मङ्गलमसि ।२४।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ।२५।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह—
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ।२६।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा—
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद ! गृणात्योमिति पदम् ।२७।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहाँ—
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् ! प्रत्येकं प्रविचरति देव ! श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ।२८।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव ! दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर ! महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन ! यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिसर्वाय च नमः ।२९।

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ।३०।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद ! चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।३१।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनीं पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।३२।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले--
ग्रंथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।३३।

अहरहरनद्य धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् य ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ।३४।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थ-स्नानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।३५।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं सर्वमीश्वरवर्णनम् ।
अनौपम्यं मनोहारि पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।३६।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।३७।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ।३८।

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ।३९।

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ।४०।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ४१।

यदक्षर पद भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! प्रसीद परमेश्वर ! ।४२।

## श्री शिवताण्डवस्तवराजः ॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजंगतुङ्गमालिकाम् ।।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।१।

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरी- -
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ।२।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबंधुबन्धुर–
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगंबरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ।३।

जटाभुजंगपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा––
कदम्बकुंकुमद्रवत्प्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।

मदान्दसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ।४।

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ।५।

ललाटचत्वरज्ज्वलद्धनंजयस्फुलिंगभा-
निपीतपंचसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरम्
महाकपालिसम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ।६।

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ।७।

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर—
त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिंपनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ।८।

प्रफुल्लनीलपंकजप्रपञ्चकालिमप्रभा—
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदंतमन्तकच्छिदं भजे ।९।

अखर्व सर्व मंगला कलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ।१०।

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुंगमंगल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ।११।

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ।१२।

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन् ।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् सदा सुखी भवाम्यहम् ।१३।

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धमेति संततम् ।

हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम् ।१४।

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ।१५।

इति महापण्डित रावणकृतंशिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

卐 卐 卐

## भगवान् दत्तात्रेय जी के २४ चौवीस गुरु

एक बार धर्मके मर्मज्ञ राजा यदुने देखा कि एक त्रिकालदर्शी तरुण अवधूत ब्राह्मण निर्भय विचर रहे हैं, तब उन्होंने उनसे पूछा—'ब्रह्मन् ! आप कर्म तो करते ही नहीं, फिर आपको यह अत्यन्त निपुण बुद्धि कहां से प्राप्त हुई, जिसका आश्रय लेकर आप परम विद्वान् होने पर भी बालक के समान संसार में विचरते हैं। संसार के अधिकांश लोग काम और लोभ के दावानल से जल रहे हैं, परन्तु आपको देखकर ऐसा मालूम होता है कि आप उससे मुक्त हैं । आप तक उसकी आंच भी नहीं पहुंच पाती, ठीक वैसे ही जैसे कोई हाथी वन में दावाग्नि लगने पर उससे छूट कर गङ्गाजल में खड़ा हो। आप सदा-सर्वदा अपने स्वरूप में ही स्थित हैं। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आपको अपने आत्मा में ही ऐसे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव कैसे होता है ?'

ब्रह्मवेत्ता दत्तात्रेय जी ने कहा—'राजन् ! मैंने अपनी बुद्धि से गुरुओं का आश्रय लिया है, उनसे शिक्षा ग्रहण करके मैं इस जगत् में मुक्तभाव से स्वच्छन्द विचरता हूं। तुम उन गुरुओं के नाम और उनसे ग्रहण की हुई शिक्षा को सुनो —

पृथिवी वायुराकाशमापोऽग्निश्चन्द्रमा रविः ।
कपोतोऽजगरः सिन्धुः पतङ्गो मधुकृद् गजः ।।
मधुहा हरिणो मीनः पिङ्गला कुररोऽर्भकः ।
कुमारी शरकृत् सर्प ऊर्णनाभिः सुपेशकृत् ।।
एते मे गुरवो राजंश्चतुर्विंशतिराश्रिताः ।
शिक्षावृत्तिभिरेतेषामन्वशिक्षमिहात्मनः ।।
( श्रीमद्भागवत ११।७।३३-३५ )

'राजन! मैंने पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, कबूतर अजगर, समुद्र, पतंग, मधुमक्खी, हाथी, मधु निकालनेवाला, हरिन, मछली, पिङ्गला वेश्या, कुररपक्षी, बालक, कुआरी कन्या, बाण बनानेवाला, सर्प, मकड़ी और भृङ्गी कीट—इन चौबीस गुरुओं का आश्रय लिया है और इन्हीं के आचरण से इस लोक में अपने लिये शिक्षा ग्रहण की है।'

(१) पृथिवी—मैंने पृथिवी के धैर्य और क्षमारूपी दो गुणों से धीरज और क्षमाका उपदेश ग्रहण किया है। धीर पुरुष को चाहिये कि वह कठिन-से-कठिन विपत्तिकाल में भी अपनी धीरता और क्षमावृत्ति को न छोड़े। मैंने पृथिवी के विकार—पर्वत और वृक्षों से परहित की शिक्षा ग्रहण की है।

(२) वायु—शरीर के अन्दर रहने वाला प्राणवायु जिस प्रकार आहारमात्र की आकाङ्क्षा रखता है और उसकी प्राप्ति से संतुष्ट हो जाता है, उसी प्रकार साधक जीवन-निर्वाह-हेतु ही भोजन करे, इन्द्रियों की तृप्ति-हेतु नहीं तथा शरीर के बाहर रहनेवाली वायु जैसे सर्वत्र विचरण करते हुए भी किसी में आसक्त नहीं होती, उसी प्रकार साधक को चाहिए कि वह अपने को शरीर नहीं, अपितु आत्मा के रूप में देखे। शरीर और उसके गुणों का आश्रय होनें पर भी उनसे सर्वथा निर्लिप्त रहे। यही मैंने वायु से सीखा है।

(३) **आकाश**—'चर-अचर जितने भी सूक्ष्म-स्थूल शरीर हैं, उनमें आत्मरूप में सर्वत्र स्थित होने के कारण सभी में ब्रह्म है।' इसका उपदेश मुझे आकाश ने दिया। घट-मठ आदि पदार्थों के कारण भिन्न-भिन्न प्रतीत होने पर भी आकाश एक और अपरिच्छिन्न (अखण्ड) ही है।

(४) **जल**—जैसे जल स्वभाव से ही स्वच्छ, स्निग्ध, मधुर और पवित्र करनेवाला है, उसी प्रकार साधक को स्वभाव से ही मधुरभाषी और लोकपावन होना चाहिये।

(५) **अग्नि**—राजन्! मैंने अग्नि से तेजस्वी और ज्योतिर्मय होने के साथ ही यह भी शिक्षा ग्रहण की कि जैसे अग्नि लम्बी-चौड़ी या टेढ़ी-सीधी लकड़ियों में रह कर उनके समान ही रूपान्तरित हो जाती है, वास्तव में वह वैसी है नहीं, वैसे ही सर्वव्यापक आत्मा भी अपनी माया से रचे हुए कार्य-कारण-रूप जगत् में व्याप्त होने के कारण उन-उन वस्तुओं के नाम-रूप ग्रहण कर लेता है, वास्तव में वह वैसा है नहीं।

(६) **चन्द्रमा**—कालकी अदृश्य गति के प्रभाव से चन्द्रकला घटती और बढ़ती हुई प्रतीत होती है, वास्तव में चन्द्रमा तो सर्वदा एक-सा ही रहता है, उसी प्रकार जीवन से लेकर मरण-पर्यन्त शरीरिक अवस्थाएं भी आत्मा से अलिप्त हैं। यह गूढ़ ज्ञान मैंने चन्द्रमा से ग्रहण किया।

(७) **सूर्य**—सूर्य से मैंने दो शिक्षाएं प्राप्त कीं—अपनी प्रखर किरणों द्वारा जल-संचय और समयानुसार उस संचय का यथोचित वितरण तथा विभिन्न पात्रों में परिलक्षित सूर्य स्वरूपतः भिन्न नहीं है, इसी प्रकार आत्मा का स्वरूप भी एक ही है।

(८) **कबूतर**—कबूतर से अवधूत दत्तात्रैय जी ने जो शिक्षा ग्रहण की उसके लिये उन्हें यदु के समक्ष एक लम्बा आख्यान प्रस्तुत करना पड़ा, जिसका भावार्थ संसार से आसक्ति न रखना है।

(९) **अजगर**—अनायास रूखा-सूखा प्रारब्धवश जो भी प्राप्त हो जा उसी में संतोष करना, कर्मेन्द्रियों के होने पर भी चेष्टारहित रहना, यह मैं अजगर से सीखा है।

(१०) **समुद्र**—समुद्र ने मुझे सर्वदा प्रसन्न और गम्भीर रहन सिखाया। समुद्र के शान्त भावों की तरह साधक को भी सांसारिक पदार्थ की प्राप्ति और अप्राप्ति पर हर्ष-शोक नहीं होना चाहिये।

गरुड़पुराण में कहा है—

**कुरङ्गमातङ्गपतङ्गभृङ्गमीना हता पञ्चभिरेव पञ्च।**
**एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च॥**

पतंगा, हाथी, हरिण, भृंग और मछली मात्र एक ही इन्द्रिय के वश में होकर मोहान्ध होने से नष्ट हो जाते हैं तो फिर मनुष्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्धके लिये पांच इन्द्रियों के माध्यम से विषयासक्त होने पर कैसे बचा रह सकता है? भगवान् दत्तात्रेय जी के अनुसार आसक्ति मात्र एक ही विषय से सम्बन्धित होने पर नाश का कारण होती है, अतः मनुष्य को सामान्य जीवों की अपेक्षा अधिक सावधानी की आवश्यकता है क्योंकि वह पांच इन्द्रियों के माध्यम के विषयों में आसक्त हो जाने की स्थिति में रहता है।

(११) **पतंग**—रूप पर मोहित होकर प्राणोत्सर्ग कर देने वाले पतंगे की भान्ति मायिक पदार्थों के हेतु बहुमूल्य जीवन का विनाश न हो, यह मैंने पतंगे से सीखा है।

(१२) **मधुमक्खी**—साधक को चाहिये कि वह मधुमक्खी की भांति संग्रह न करे। अपने शरीर के लिये उपयोगी रोटी के कुछ टुकड़े कई घरोंसे मांग ले।

(१३) **हाथी**—साधक को चाहिये वह भूल कर भी पैर से भी काठ की भी बनी स्त्रीका स्पर्श न करे अन्यथा हाथी-जैसी दुर्दशाको प्राप्त होगा।

(१४) **मधु निकालनेवाला**--राजन् ? जैसे मधुमक्खियों द्वारा कठिनाई से संचित किये गये मधु का दूसरा ही उपयोग करता है, इसी प्रकार कृपण व्यक्ति भी अपने संचित धन का न तो स्वयं उपयोग करता है और न शुभ कार्यों में व्यय ही कर पाता है । अतः गृहस्थ को अपने अर्जित धन को शुभ कार्यों में लगाने की शिक्षा मैंने भौरी पुरुष से ग्रहण की ।

(१५) **हरिण**- वनवासी संन्यासी यदि विषय सम्बधी गीत में आसक्त हुआ तो हरिन की भांति व्याध के बन्धन में पड़ जाता में, जैसे ऋषि ऋष्यशृंग ।

(१६) **मछली**—नृपनन्दन ? मछली तो गन्धा स्वाद के लोभ में मृत्यु को प्राप्त होती है यह सभी जानते हैं, अतः इन्द्रिय - संयम का पाठ मैंने मत्स्य गुरु से सीखा ।

(१७) **पिंगला**--अबतक यदु तन्मयता पूर्वक प्रत्येक गुरु के विषय में सुन रहे थे। अचानक बोल उठे— 'महामुने ? क्या वेश्या भी आपकी गुरु रही ?'

'हां नृपराज ! पिंगला वेश्या की अपने रमण स्थल पर वस्त्राभूषणों से अलंकृत ग्राहकों की प्रतीक्षा को मैंने देखा है । रात्रि भर प्रतीक्षा के पश्चात् भी जब उस धन - लोलुपा वेश्या के पास कोई नहीं आया तब वह निराश हो गयी और उसे वैराग्य हो गया । उसने अपने चित्त को इङ्गित कर जो पश्चात्ताप का गीत गाया वह मैंने सुना । कुछ पंक्तियां तुम भी सुनो—

**यदस्थिभिर्निर्मितवंशवंश्य-**

**स्थूणं त्वचा रोमनखैः पिनद्धम् ।**

क्षरन्नवद्वारमगारमेतद्
विण्मूत्रपूर्णं मदुपैति कान्या ॥

(श्रीमद्भा० ११ । ८ । ३३)

'यह शरीर एक घर है। इस में हड्डियों के टेढ़े - तिरछे बांस और खंभे लगे हैं। चर्म, रोग और नाखूनों से यह छाया गया है । इसमें से मल - मूत्र के निकलने के नव दरवाजे हैं, इसके अतिरिक्त और क्या है? मेरे अतिरिक्त ऐसी कौन पतिता स्त्री होगी जो इस स्थूल शरीर को अपना प्रिय समझ कर सेवन करेगी ।' राजन! "**आशा हि परम दुःखं नैराश्यं परमं सुखम् ।**' (श्रीमद्भा० ११ । ८ । ४४) के कारण आशा का परित्याग करने वाली इस वेश्या से मैंने शिक्षा ग्रहण की ।

**(१८) कुरर पक्षी**--इस पक्षी की चोंच में जब तक मांस का टुकड़ा था तभी तक अन्य पक्षी इसके शत्रु थे। जैसे ही उसने टुकड़ा छोड़ दिया, उसके पास से सभी पक्षी दूर हो गये। इस से मुझे त्याग की शिक्षा मिली ।

**(१९) बालक**--बालक को जैसे मान अपमान और परिवार की चिन्ता नहीं होती, उसी प्रकार मुझे भी अपने मान - अपमान की चिन्ता नहीं करनी चाहिये, अतः मैंने बालक को भी गुरु माना ।

**(२०) कुंआरी कन्या**--धान कूटती कन्या के हाथों में अनेक चूड़ियों के शब्द से जो ग्लानि हो रही थी, वह उस समय दूर हो गयी जब दोनों हाथों में केवल एक - एक चूड़ी ही रही, इसलिये मैंने कन्या से अकेले ही विचरण करने की शिक्षा ग्रहण की ।

**(२१) बाण - निर्माता**--इस व्यक्ति को मैंने अपने बाण बनाने के कार्य में इतना तल्लीन देखा कि राजा की सवारी भी गाजे - बाजे के साथ इसके सामने से निकल गई पर यह अपने कार्य में दत्त - चित्त रहा । इससे मैंने यह शिक्षा ली कि साधक अभ्यास के द्वारा अपने मनको वश में कर उसे सावधानी से लक्ष्य में लगा दे ।

(२२) **सर्प**—राजन् ! इससे मैंने कई गुण ग्रहण किये । जैसे एकाकी विचरण, किसी की सहायता न लेना, कम बोलना और मठ या घर न बनाना ।

(२३) **मकड़ी**—मकड़ी तो सर्वान्तर्यामी सर्व शक्तिमान् प्रभु के पूर्वकल्प में बिना किसी अन्यसहायक के अपनी माया से रचित संसार के अद्भुत कौशल का दर्शन कराती है। मकड़ी अपने हृदय से मुंह के द्वारा जाला फैलाकर उसी में रमण करती है और उसे निगल भी जाती है ।

(२४) **भृंगीकीट**—राजन् ! मैंने इस कीड़े से यह शिक्षा ग्रहण की यदि प्राणी स्नेह, द्वेष अथवा भय से जान - बूझकर एकाग्ररूपसे अपना मन किसी में लगा दे तो उसे उसी वस्तु का स्वरूप प्राप्त हो जाता है, जैसे भृंगीद्वारा पकड़े गये कीड़े का हो जाता है ।

दत्तात्रेय जी ने अपने चौबीस गुरुओं का वर्णन कर उपसंहार करते करते हुए कहा—'**राजन्**' ! अकेले गुरु से ही यथेष्ट और सुदृढ़ बोध नहीं होता, उसके लिये अपनी बुद्धि से भी बहुत कुछ सोचने - समझने की आवश्यकता है। देखो ! ऋषियोंने एक ही अद्वितीय ब्रह्म का अनेक प्रकार से गान किया है । (यह तो तुम्हें स्वयं ही निर्णय करना होगा ।)'

शिक्षाङ्क १९८८ ई० से उद्धृत ।

卐 卐 卐

प्रबोधनवेला (ब्राह्ममुहूर्तः):—

**रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः ।**
**स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः सम्प्रबोधने ॥** विष्णु पुरा

रात के अन्तिम प्रहर से ब्राह्ममुहूर्त आरम्भ होता है ।
इसी में जागना शास्त्रसम्मत है ।

**सौम्यादौ स चतुर्नादात् त्रिनादाद् याम्यसंक्रमे ।**
**सार्धत्रिवादनाद् ब्राह्मो मुहूर्तो वैषुवोदये ॥**

उत्तरायण के आरम्भ में चार बजे प्रातः, दक्षिणायन के प्रारम्भ तीन बजे प्रातः दिनमान रात्रिमान के एक बराबर होने पर दोनों विषु सक्रान्तियों में साढे तीन बजे प्रातः ब्राह्म मुहूर्त माना गया है । इसमें जाग से चतुर्वर्ग फल प्राप्ति होती है ।

प्रभाते करदर्शनम्:—

**कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।**
**करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥** आचार प्रद

भूमिवन्दनाः—

**समुद्रवसने ! देवि ! पर्वतस्तनमण्डिते ! ।**
**विष्णुपत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्वमे ॥**

मदन पारिजा

जलवन्दनम्: —

**गङ्गे ! च यमुने ! चैव गोदावरि ! सरस्वती ! ।**
**तविषि ! चन्द्रभागे ! च जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु ॥**

उषः जलपानम्:—

**विगतघन निशीथे प्रातरुत्थाय नित्यं**
**पिबति यदि नरो यो घ्राण रन्ध्रेण वारि ॥**

स भवति मतिपूर्णश्चक्षुषा तार्क्ष्यतुल्यो
बलिपलितबिहीनः सर्वरोगैर्विमुक्तः ॥
स्नेहे पीते क्षते शुद्धावाध्माने स्तिमितोदरे ॥
हिक्कायां कफ वातोत्थे व्याधौ तद्वारि वारयेत् ॥

घी आदि स्निग्ध पदार्थ पीकर जुकाम, जखम, जुलाबादि लेकर उदर दोष, हिचकी, वात, कफ के विकार में, किसी भी प्रकार की व्याधि होने पर प्रातः जलपान निषिद्ध है ।

शौच दिशाः—

प्रातः उटकर निर्ऋतिकी ओर जितनी दूर सम्भव हों वहां सूर्य की ओर पीठ कर के शौच करे । छाया, अन्धकार, रात के समय वा दिन यथा सुख मुख करके शौच करे ।

शौचेनियमाः—

शौच से पहिले सिर कानादि को भली भान्ति वस्त्रादि से ढककर कच्छ शिखादि को खोलकर यज्ञोपवीत को कानपर रखकर मैत्र मूत्रादि कृत्य करे ।

शौचे मृत्तिका सेवनम्ः—

आर्द्रामलकमात्रास्तु ग्रासा इन्दुव्रते स्मृताः ।
तथैवाहुतयः सर्वाः शौचे देयास्तुमृत्तिकाः ॥

हरे आमले के बराबर चान्द्रायण व्रत में विहित ग्रास मात्रा की तरह शुद्धमृत्तिका की शौच में अपानाहुति विहित है। शौचशुद्धि के पश्चात् स्वास्थ्योपयोगी निम्बादि की दातुन (दन्त धावन) करे।

दन्तकाष्ठ (बनस्पति) प्रार्थनाः—

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजाः पशून् वसूनि च ।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ! ॥

दातुन के पश्चात् १२ गण्डूष (करूली) करके मुख प्रक्षालन करना लिखा है । फिर

सूर्यप्रार्थना:—

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तर सहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥

तुलसीवन्दना:—

महाप्रसाद जननीं सर्वसौभाग्यवर्धिनी ।
आधिव्याधिहरा नित्यं तुलसि ! त्वं नमोऽस्तुते ॥

गोवन्दना:—

गावो मे अग्रतः सन्तु गावो में सन्तु पृष्ठतः ।
गावो मे हृदये सन्तु गवांमध्ये वसाम्यहम् ॥

प्रातः स्मरणम्: —

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः ।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च ।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

सप्तार्णवः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त ।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः ।
नभः सशब्दं महता सहैव कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

इत्थं प्रभाते परमं पवित्रं पठेत्स्मरेद्वा श्रृणुयाच्च तद्वत् ।
दुःस्वप्ननाशस्त्विह सुप्रभातं भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात् ॥

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः ।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ॥

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥

सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् ।
जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः ॥

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।
पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ॥

नानात्पूर्वं तैलाभ्यङ्गः—

तैलाभ्यङ्गः कार्यः शनि दिवसे न तुरवेर्न पर्वसु च ।
संक्रान्ति विष्टिवैधृति कुजदिवसेष्वष्टमीषष्टचोः ॥

नौर्तलाभ्यङ्गे वैशिष्टयम् —

शनैश्चरदिने प्राप्ते तैलाभ्यंगं करोति यः ।
नापमृत्युर्भवेत्तस्य यावदन्योऽर्कनन्दनः ॥ लल्लभट्टः

तेल की मालिश शनिवार को करना श्रेष्ठ है किन्तु रवि, मंगल, संक्रान्ति, भद्रा, वैधृति, षष्ठी, अष्टमी के दिन तैलाभ्यङ्ग निषिद्ध है । शनि के दिन तैलाभ्यङ्ग से पुनः शनि तक दुर्घना से सुरक्षा होती रहती है एवं सभी कष्ट दूर रहते हैं ।

प्रातः स्नाने दशगुणाः—

गुणा दश स्नानपरस्य साधो रूपं च तेजश्च बलं च शौचम् ।
आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्च यशश्च मेधा ॥

रूप, तेज, बल, पवित्रता, आयुः, आरोग्य, लाभालाभ में समता, दुःस्वप्नशान्ति, यश और बुद्धि की वृद्धि होती है ।

असामर्थ्ये सप्तविधगौणस्नानानिः—     मुसलस्नानेनाष्टौ विधानि

१. मन्त्रस्नान (आपोहिष्ठादि से केवल जल की छिटकी मात्र) ।
२. पार्थिवस्नान (मिट्टी मात्र मलदेनी)
३. आग्नेयस्नान (भस्मादि से स्नान)
४. वायव्यस्नान (गोबर स्नान)
५. दिव्य स्नान (सूर्य की धूप का सेवन)
६. वारुण स्नान (डुबकी लगाकर स्नान)
७. मानस स्नान (सभी तीर्थों का स्मरण करते आत्मचिन्तन)
८. मुसल स्नान (नाक कान मूंदकर डुबकी लगानी)

**उक्तं च– निरुद्ध कर्ण नासस्तु मुसलस्नान माचरेत् ।**

स्नानार्थजलाशयनिर्णयः—

**उत्तमं तु नदीस्नानं मध्यं सरस्तडागयोः ।**
**अधमं कूपवापानां भाण्डस्नानं वृथा वृथा ।।**

कूर्मपुराणे

स्नानदिशाः—

**स्रोतसोऽभिमुखो मज्जेद्यत्रापः प्रवहन्ति च ।**
**स्थावरेषु च सर्वेषु प्रवाहाभिमुखस्तथा ।**
**गृहेगृहमुखः कूपे तडागे सूर्यसन्निधौ ।**
**प्रातः संक्षेपतः स्नानं शौचार्थे तु तदिष्यते ।**
**नद्यादौ तु प्रवाहाभिमुखो वा स्नानमाचरेत् ।**
**यायाःसमुद्रगा नद्यस्तासु स्नानन्तु सम्मुखम् ।**
**सर्वेषां शाखिनामेवं विना वाजसनेयिनाम् ।**

गृहस्नानेविशेषः

**गृहस्नाने न तु प्रोक्तं मार्जनं तर्पणादिकम् ।**
**नान्तराचमनं प्रोक्तं पश्चादाचम्यशुद्धयति ।**

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे (भारतखण्डे) जम्बुद्वीपे वैष्णव क्षेत्रे ऐरावतीचन्द्रभागयोर्मध्ये श्रीमल्लवणाब्धेरुत्तरे तीरे श्रीशालिवाहनशाके बौद्धावतारे अस्मिन्वर्तमाने अमुकनाम-संवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकवासरे अमुकतिथौ मम आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम इह जन्मनि कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकज्ञातस्पर्शास्पर्शासनभोजन-शयनगमनादिकृतकर्मदोषनिरासद्वारा त्रिविधतापोपशमनार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शीतोदकेन उष्णोदकेन वा प्रातःस्नानमहं करिष्ये ॥

तीर्थस्मरणम्:—

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदवरीनर्मदा ।
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वतीदेविका ॥

क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डकी ।
पूर्णा पूर्णजलैःसमुद्रसहिताः कुर्वन्तु नः मङ्गलम् ॥

कुरुक्षेत्र गया गङ्गा प्रभास पुष्कराणि च ।
एतानि पुण्यतीर्थानि स्नानकाले जपेन्नरः ॥

श्रीपरमात्मने नमः

# अथ त्रिकालसन्ध्या

प्रातःकाल और मध्याह्न - सन्ध्या के समय पूर्व की ओर तथा सायं-काल की सन्ध्या के समय पश्चिम की ओर मुख करके शुद्ध आसन पर बैठ कर तिलक करे ।

नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर शरीर पर जल छिड़के ।

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा ।**
**यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥**

दहिने हाथमें जल लेकर यह संकल्प पढ़े, संवत्सर, मास, तिथि, वार, गोत्र तथा अपना नाम उच्चारण करे । ब्राह्मण हो तो 'शर्मा' क्षत्रिय 'वर्मा' और वैश्य हो तो नाम के आगे 'गुप्त' शब्द जोड़कर बोले ।

**ॐ तत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं प्रातः(सायं)सन्ध्योपासनं कर्म करिष्ये ॥**

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़े ।

**पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ॥**

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ कर आसन पर जल के छींटे दे ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

फिर बायें हाथ में बहुत - सी कुशा लेकर और दहिने हाथ में तीन [कुश]ा लेकर पवित्री धारण करे, इसके बाद ॐके साथ गायत्री-मन्त्र पढ़ [क]र चोटी बांध ले और ईशान दिशा की ओर मुख करके आचमन करे।

नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर पुनः आचमन करे ।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥
समुद्रादर्णवादधि–संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

तदनन्तर ॐके साथ गायत्री - मन्त्र पढ़ कर रक्षाके लिये अपने चारौं [ओ]र जल छिड़के । नीचे लिखे एक - एक विनियोग को पढ़कर पृथ्वी पर [ज]ल छोड़ता जाए अर्थात् चारों विनियोगों के लिये चार बार जल छोड़े।

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता
शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः ॥

ॐ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाज-
गोतमात्रिवसिष्ठकश्यपाऋषयो गायत्र्युष्णि-
गनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दाँस्यग्निवाय्वा-
दित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवता
अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः ॥

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः ।

ॐ शिरसः प्रजापतिऋ्षिस्त्रिपदा गायत्री छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता यजुः प्राणायामे विनियोगः ॥

फिर आंखें बंद करके नीचे लिखे मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करे । पहले अंगूठे से दहिना नथुना बंदकर बायें नथुने से वायु को अन्दर खैंचे और ऐसा करता हुआ नाभि देश में नील कमल दल के समान नील वर्ण चतुर्भुज भगवान् विष्णु का ध्यान करे, यह पूरक प्राणायाम है। इसके बाद अंगूठे और अनामिका से दोनों नथुने बन्द करके वायु को अन्दर रोक ले, यों करता हुआ हृदय में कमल के आसन पर विराजमान, रक्त वर्ण चतुर्मुख ब्रह्मा का ध्यान करे, यह कुम्भक प्राणायाम है । अनन्तर अंगूठा हटाकर दहिने नथुने से वायु को धीरे - धीरे बाहर निकाल दे । इस समय त्रिनेत्रधारी शुद्ध श्वेतवर्ण शंकर का ललाट में ध्यान करे यह रेचक प्राणायाम है।

नीचे लिखे मन्त्र का तीनों ही प्राणायाम के समय तीन-तीन बार या एक - एक बार जप करने का अभ्यास करना चाहिये ।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

( प्रातःकाल का विनियोग और मन्त्र )

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे ।

सूर्यश्च मेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ कर आचमन करे।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं मानमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

( मध्याह्न का विनियोग और मन्त्र )

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे।

आपः पुनन्त्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर आचमन करे।

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्।
पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्।
यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम।
सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहँ स्वाहा ॥

( सायंकाल का विनियोग और मन्त्र )

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे।

ॐ अग्निश्च मेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर आचमन करे।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण

**शिश्ना ग्रहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं मामममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥**

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे ।

**ॐ आपो हि ष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्द आपो देवता मार्जने विनियोगः ।**

इसके उपरान्त नीचे के मन्त्रों द्वारा तीन कुशों से मार्जन करे, कुशों के अभाव में तीन अंगुलियों से करे, सात पदों से सिर पर जल छोड़े । आठवें से भूमि पर और नवें पदसे फिर सिर पर मार्जन करे ।

**ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः ।१।**
**ॐ ता न ऊर्जे दधातन ।२।**
**ॐ महे रणाय चक्षसे ।३।**
**ॐ यो वः शिवतमो रसः ।४।**
**ॐ तस्य भाजयतेह नः ।५।**
**ॐ उशतीरिव मातरः ।६।**
**ॐ तस्मा अरं गमाप वः ।७।**
**ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ।८।**
**ॐ आपो जनयथा च नः ।९।**

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वी पर जल छोड़ दे ।

**द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुपछन्द आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः ॥**

दहिने हाथ में जल लेकर नीचे लिखे मन्त्र को तीन बार पढ़े, फिर उस जल को सिर पर छिड़क दे ।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दे ।

अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववतो देवता
अश्वमेधावभृथे विनियोगः ॥

दहिने हाथ में जल लेकर उसे नाकसे लगाकर श्वास आते या जाते समय एक बार या तीन बार नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर जल पृथ्वीपर छोड़ दे ।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ।
समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दे ।

अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता
अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

इस मन्त्रको पढ़कर आचमन कर ले ।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायाँ विश्वतोमुखः ।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम् ॥

फिर सूर्यके सामने एक चरण की एड़ी (पिछला भाग) उठाये हुए या एक चरण से खड़ा होकर ओंकार और व्याहृतियों के सहित गायत्री-मन्त्रको तीन बार जप करके पुष्प मिले हुए जलसे सूर्यको तीन अञ्जलि दे ।

नीचे लिखे चारों विनियोगों को एक-एक पढ़कर चार-बार जल पृथ्वीपर छोड़ दे ।

**उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।। उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।। चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।। तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।।**

नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़कर सूर्य का उपस्थान करे। उपस्थान के समय प्रातःकाल और सायंकाल अञ्जलि बांधकर और मध्याह्न में दोनों बाहों को ऊपर उठाकर खड़ा रहे।

**ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।। ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ।। ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षँसूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।। ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँशृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।**

इसके बाद बैठकर या खड़े-खड़े ही अंगन्यास करे।

एक-एक को पढ़ता जाय और जिस न्यास में जिस अंग का नाम हो उस अंगपर हाथ लगाता जाय तथा अन्तिम से एक ताली बजाकर चारों ओर चुटकियां बजा दे। यों तीन बार करे।

ॐ हृदयाय नमः ॐ भूः शिरसे स्वाहा ॐ भुवः शिखायै वषट् ॐ स्वः कवचाय हुम् ॐ भूर्भुवः नेत्राभ्याँ वौषट् ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ॥

नीचे लिखे तीनों विनियोगों को एक-एक पढ़कर पृथ्वीपर तीन बार जल छोड़ दे।

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णो जपे विनियोगः ॥ त्रिव्याहृतीनाँ प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुमश्छंदास्यग्निवाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः । गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः ।

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर इसके अनुसार गायत्रीदेवी का ध्यान करे।

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता ।
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दे।

तेजोऽसीति देवा ऋषयो गायत्री छन्दः शुक्रं दैवतं गायत्र्यावाहने विनियोगः ॥

नीचे लिखे मन्त्रों से विनयपूर्वक गायत्रीदेवी का आवाहन करे।

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि ।
प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत् ॥

फिर गायत्री के कम-से-कम १०८ मन्त्रों का जप करे, प्रातःकाल और मध्याह्न के समय सूर्य के सामने खड़ा होकर और सायंकाल पश्चिम की ओर मुख करके बैठकर जप करना चाहिये।

गायत्री-मन्त्र

**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।**
**धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥**

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुए प्रदक्षिणा करे।

**यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।**
**तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥**

॥ इति सन्ध्या ॥

हरिः ॐ तत्सत्। हरिः ॐ तत्सत्। हरिः ॐ तत्सत्

# अथ सन्ध्याकालनिर्णयः

उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका ।
कनिष्ठा सूर्यसहिता प्रातःसन्ध्या त्रिधा स्मृता ।१।

मध्या मध्याह्ने ।२।

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा लुप्तभास्करा ।
कनिष्ठा तारकोपेता सायंसन्ध्या त्रिया स्मृता ।३।

इति सन्ध्याकालनिर्णयः

卐

# अथ देवर्षिपितृ तर्पणम्

सव्यकृत्वा देवतीर्थेन देवतर्पणम्:—

ब्रह्मा विष्णु महेशाश्च वेदाश्छन्दांसि वत्सराः ।
देवाः यज्ञास्तथा नागा गन्धर्वाप्सरसां गणाः ।
क्रूराः सर्पाः सुपर्णाश्च तरवो जम्भकादयः ।
विद्याधरा जलधरास्तथैवाकाशगामिनः ।
निराधाराश्च ये जीवा पापे धर्मे रताश्च ये ॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु श्रद्धया देवतर्पणात् ।

यज्ञोपवीत कण्ठी करके ऋषि तीर्थ से ऋषितर्पणः—

सनकश्च सनन्दश्च सनच्चैव सनातनः ।
कपिलश्चासुरी चैव वोढुः पंचशिखस्तथा ॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु श्रद्धया ऋषितर्पणात् ।

मरीच्यत्र्यङ्गिरा चैव पुलस्त्य पुलहः क्रतुः ।
वशिष्ठ प्रचेता भृगुर्जाबालि नारदादयः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु श्रद्धया ऋषितर्पणात् ।

सव्य होकर देवतीर्थ से देवपितृ तर्पणः—

कव्यवाडनलः सोमो यमश्चार्यम संज्ञकाः ।
अग्निष्वात्तस्तथा सौम्यो हविष्मांश्चैव उष्मपाः ।
सुकाली बर्हिषच्चैवं आज्यपाः पितरश्च ये ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु श्रद्धया पितृतर्पणात् ।

पितृसव्य होकर पितृतीर्थ से पितृ तर्पणः—

आदित्योऽसौ पितापूज्यः वसूरूपः पितामहः ।
रुद्ररूपश्च प्रपितामहस्तेभ्यः स्वधा नमः ।

गायत्री रूपिणी माला सावित्री च पितामही ।
सरस्वती मयी साक्षात् तृप्यतां प्रपितामही ।
त्रिकं मातामहाद्यं च मातामह्यादिकं त्रिकम् ।
ते सर्वेतृप्तिमायान्तु श्रद्धया पितृतर्पणात् ।
आचार्या मातुलाः श्यालाः पितृव्याः श्वशुरादयः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु श्रद्धया पितृतर्पणात् ।
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षि पितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ माता महादयः ।
अतीत कुल कोटीनां सप्तद्वीप निवासिनाम् ।
आब्रह्म भुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ।
ये बान्धवाऽबान्धवा ये येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु श्रद्धया पितृतर्पणात् ।
वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृतिप्रवराय च ।
अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे ।
यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च ।
वैवस्वताय कालाय सर्व प्राण हराय च ।
औदुम्बराय नीलाय दध्नाय परमेष्ठिने ।
वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः ।
पाश हस्त कृतान्ताय इताधिपतये नमः ।

**कर तीर्थ**—अंगुलियों के आग्रभाग देवतीर्थ, कनिष्ठा के नीचे ऋषितीर्थ तर्जनी और अंगुष्ठमध्यमें पितृतीर्थ, अगुष्ठाग्र से नीचे मध्यपर्व तक अग्नितीर्थ अंगुष्ठमूल ब्रह्म (प्रजापति) तीर्थ जाने ।

इति देवर्षिपितृतर्पणम् ॥

सूर्यायार्घ्यप्रदानम्:

ॐ हंसः सूर्यायस्वाहा

अथ नेत्रोपनिषत्

सर्वरोगोपशमनार्थं रविव्रतपूर्वकमादित्यहृदयं नेत्रोपनिषदं वा पठेत्। अयातश्चाक्षषीं पठित सिद्धविद्यां चक्षूरोगहरां व्यख्यास्यामो यथा चक्षूरोगाः सर्वतो नश्यन्ति चक्षुषो दीप्तिर्भवति।

## अथ चाक्षुषीविद्योपनिषत्

ॐ अस्याश्चाक्षुषविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छन्दः सविता देवता, चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ चक्षुश्चक्षुश्चक्षुस्तेजः स्थिरोभव माँ पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय। मम ज्ञातरूपं तेजो दर्शम दर्शय। यथाहमन्धो न स्यां तथा कृपया कल्याणं कुरु कुरु। मम यानि यानि पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक दुष्टकृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्यभास्कराय। ॐ नमः करुणाकराय अमृताय। ॐ नमो भगवते सूर्याय। अक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। य इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति न तस्य कुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्या सिद्धिर्भवति। ॐ विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं ज्योतिरूपं तपन्तं सहस्र रश्मिभिः शतधाऽऽवर्तमानः पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः। ॐ नमो भगवते आदित्याय अवाग्वादिने स्वाहा॥ इत्युपनिषत्

# अथ पूजा विधानम्

पञ्चोपचारा :—

**ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम् ।**
**नीराजनं प्रणामश्च पञ्च पूजोपचारकाः ।**

जप्या

५ वृहत्पच्चोपचार :— १ ध्यान, २ आवाहन, ३ भक्ति पूर्वक यथाश निवेदन, ४ नीराजन (आरती), ५ प्रणाम । ये बड़े पञ्चोपचार हैं
५ लघुपञ्चोपचार :— गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य ये छोटे पञ्चोपच हैं । ज्ञानमाला

दशोपचारा :—

**अर्घ्यं पाद्यं चाचमनं स्नानं वस्त्रनिवेदनम् ।**
**गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारा दशक्रमात् ।**

१० उपचार :— अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्रार्पण, गन्ध, पु धूप, दीप, नैवेद्य । (ज्ञानमाला)

षोडशउपचार :—

**आसनं स्वागतं पाद्यमर्घमाचमनीयकम् ।**
**मधुपर्कार्पणं स्नानं वसनाभरणानि च ।**
**सुगन्धः सुमनो धूपो दीपो नैवेद्य एव च ।**
**माल्यानुलेपने चैव नमस्कारो विसर्जनम् ॥**

१६ उपचार :— आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ, आचमन, मधुपर्क, स्ना वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य माल्यार्पण, लेपन, इन षोडशोपचारों के वाद नमस्कार विसर्जन करें ।

१६ उपचार :— आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, व यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल (दक्षिणा आरती नमस्कार) प्रदक्षिण मन्त्रपुष्पाञ्जलि ये १६ उपचार हैं ।

चण्टीवादन :—

**पाद्ये धूपे च दीपे च नैवेद्ये शंखशोधने ।**
**स्नाने, नीराजने चैव घण्टी सप्तसु वादयेत् ॥**

पाद्य, धूप, दीप, नैवेद्य, शंखशुद्धि, स्नान और आरती के समय इन सात उपचारों में घण्टी बजाना चाहिये ।

नमः, स्वधा, स्वाहा, वौषट् प्रयोग :—

**पाद्यासनाभरण चन्दन स्वागतेषु**
**वस्त्रे नमो मधुपृकाचमने स्वधा च ।**
**स्वाहार्घ धूपक प्रदीप निवेदनेषु**
**वौषट् पठेत्स्नपन पुष्पकदानयोश्च ॥**

अर्चाविधानमाला

पाद्य, आसन, आभरण, चन्दन, स्वागत, वस्त्र इन उपचारों के साथ नमः, मधुपर्क, आचमन में स्वधा; अर्घ, धूप, दीप, नैवेद्य इन उपचारों के साथ स्वाहा; और स्नान, पुष्प अर्पण में वौषट् का प्रयोग किया जाता है ।

अन्यच्च : — ज्ञानमाला

**धूपे दीपे च नैवेद्ये वह्निहोमे तथैव च ।**
**स्वाहा शब्दः प्रयोक्तव्यः शेषे चैव नमस्कृतिः ।**

धूप, दीप, नैवेद्य, अग्नि में आहुति देते समय स्वाहा शब्द प्रयोग करे एवं शेष कृत्यों में नमः शब्द का प्रयोग सर्वत्र विहित है ।

उपचारार्पण में स्नाननियम :—

**पाद्यं पादाम्बुजे दद्याद् दद्यादाचमनं मुखे ।**
**मधुपर्कं मुखाभ्यासे स्नानं सर्वकलेवरे ।**
**कटौ वस्त्रं यथाशोभं यथास्थानं च भूषणम् ।**

हृदि गन्धं तथा पुष्पं मूर्ध्नि मालां गलेषु च ।
अनुघ्राणं तथा धूपमनुचक्षुः प्रदीपकम् ।
देवाग्रेषु च नैवेद्यं समीपे दृष्टिगोचरे ।
आदावाचमनं पुष्पमुपचारं तदन्तरम् ।
मुद्राञ्च जलधारां च मुखवासं प्रकल्पयेत् ।
जलधारां ततो दद्यादुपचारान्तरान्तरे ॥

चरण कमल में पाद्य, मुखमें आचमन, मुखचालन में ताम्बू
सर्वाङ्गमें स्नान, कटिमें अधोवस्त्र, स्कन्धदेशमें उत्तरीय और यज्ञोपवी
यथास्थान भूषण, हृदय में गन्ध, सिर (केशमध्य) में पुष्प, गले में माल
घ्राण में धूप, नेत्रों में दीपक, देवता के आगे (समीप दृष्टिगोच
नैवेद्य रखे ।

पञ्चाङ्ग प्रणाम :—

बाहुभ्यां चैव जानुभ्यां शिरसा वचसा धिया ।
पञ्चाङ्ग कृत प्रणामोऽयं पूजासु नियतः स्वतः ।

अष्टाङ्ग प्रणाम : —

दोर्भ्यां पद्भ्यां च जानुभ्यांमुरसा शिरसा दृशा ।
मनसा वचसा चेति प्रणामोऽष्टाङ्ग ईरितः ॥

द्वादशशतिलक धारण :—

शिरः कण्ठे ललाटे च बाह्वोर्दक्षिण वामयोः ।
हृदिनाभौ च पृष्ठे च पार्श्वयोश्च द्वयं द्वयम् ॥

१ सिर, २ कण्ठ, ३ मस्तक, ४ दक्षिण भुजा, ५ वाम भुजा,
६ हृदय, ७ नाभि, ८ पीठ, ९ दक्षिण पसली के ऊपर, १० वाम
पसली के ऊपर, ११ दक्षिण पसली के नीचे, १२ वाम पसली के नीचे
तिलक स्वयं लगाकर भगवान् को भी लगाएं ।

द्वादशतिलकानि

ललाटे केशवं ध्यायेत्कण्ठे नारायणं तथा ।
नाभौ च माधवं देवं गोविन्दं हृदये तथा ।
वामपार्श्वे स्मरेद् विष्णुं दक्षिणे मधुसूदनम् ।
स्मरेत् त्रिविक्रमं मूर्ध्नि पृष्ठे च वामनं प्रभुम् ।
श्रीधरं वामबाहौ च हृषीकेशं च दक्षिणे ।
पद्मनाभं वामकर्णे दक्षे दामोदरं जपेत् ॥

## श्रीकृष्णपूजा विधिः ।

ध्यानम् :—

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात्
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्कृष्णात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ।

कच्छपाधार :— ॐ मं दशकलात्मने वह्निमण्डलायनमः ।
शंखम् — ॐ अ द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलायनमः ।
जलम् — ॐ उं षोडशकलात्मने चन्द्रमण्डलायनमः ।
ॐ सर्वतीर्थेभ्यो नमः ।
आसनम् — श्रीकृष्णाय आसने पुष्पासनं नमः ।
स्वागतम् — ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन बल्लभाय स्वाहा ।
पाद्यम् — श्रीकृष्णाय पादाम्बुजे पाद्यं नमः ।
अर्घ्यम् — ,, शिरसि अर्घ्यं स्वाहा ।
आचमनम् — ,, मुखारविन्दे आचमनीयं स्वधा ।
मधुपर्कः — ,, मुखाभ्यासे मधुपर्कं स्वधा ।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पुनराचमनीयम् | श्रीकृष्णाय | मुखे पुनः | आचमनीयं | स्वधा |
| स्नानम् – | ,, | सर्वाङ्गे | स्नानीयं | वौषट् |
| कटि वस्त्रम् – | ,, | कटिदेशे | कटिवस्त्रम् | नमः |
| उत्तरीयम् – | ,, | स्कन्धदेशे | उत्तरीयं | नमः |
| यज्ञोपवीतम् – | ,, | ,, | यज्ञोपवीतं | नमः |
| गन्धः – | ,, | हृद्देशे | गन्धविलेपनं | नमः |
| पुष्पाणि – | ,, | मूर्ध्नि | पुष्पकं | वौषट् |
| धूपः – | ,, | घ्राणदेशे | एष धूपः | स्वाहा |
| दीपः – | ,, | चक्षुषोः | एष दीपः | स्वाहा |
| नैवेद्यम् – | ,, | अग्रे | नैवेद्यं | स्वाहा |
| आपोशनम् – | ,, | मुखे | अमृतोपस्तरणमसि | स्वाहा |
| पुनर्नैवेद्यम् – | ,, | प्राणाय, अपानाय, व्यानाय, उदानाय समानाय | | स्वाहा। |
| पुनरापोशनम् – | ,, | मुखे | अमृतापिधानमसि | स्वाहा। |
| हस्तप्रक्षालनम्- – | ,, | करयोर्गन्धोदकं | | नमः। |
| मुखवासः- – | ,, | मुखे | ताम्बूलं | नमः। |
| विशेषार्घ्यम् – | ,, | मूर्ध्नि | विशेषार्घ्यं | स्वाहा। |
| नीराजनम् – | ,, | सर्वाङ्गे | नीराजनं | स्वाहा। |
| पुष्पाञ्जलिः – | ,, | पूजान्ते | पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि | नमः। |

प्रणामः— एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो-
दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म
कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ।।

अथनीराजनावतारक्रमः

**आदौ चतुष्पादतले च देव्या द्विर्नाभिदेशे सकृदास्यमण्डले ।**
**सर्वेषुचाङ्गेषु च सप्तवारमारार्तिकं भक्तजनः प्रकुर्यात् ।।**

नीराजन (आरती) क्रम माला

सर्वप्रथम चार वार चरण कमलों में, दो वार नाभि मण्डल में, एक बार मुखमण्डल में एवं सातबार सर्वाङ्ग भगवान् के शरीर में भक्तिप्रिय भगवत्प्रेमी को आरती उतारनी चाहिए । इसी प्रकार दीप-दर्शन में भी दीपको प्रत्यक्ष समीप रखकर फिर मस्तक से चरण मण्डल पर्यन्त एवं चरण कमलों से पुनः मस्तक पर्यन्त पारावतवत् (कबूत्तर) की तरह घुमाएं ।

## अथकलशस्थापनम्

**भूमिस्पर्शः**— उों महीद्यौः पृथिवी च नऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम् ।
षिपृतान्नो भरीमभिः ।।

**तण्डुलपुञ्जम्**— उों ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तᳬ राजन्पारयामसि ।।

**कलशस्थापनम्**— उों आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्ज्जा ।
निवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वतीः पुनर्म्मा विशताद्रयिः ।।

**जलपूरणम्**— उों वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी स्थोवरुणस्यऽ
ऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीत् ।।

**तीर्थजलम्**— इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमे स च तापरुष्ण्या ।
मरुद्वधे वितस्तयार्जीकीये शृणु ह्यासुषोमया ।।

**गन्धक्षेपः**— उों त्वां गन्धर्वा ऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ।।

**सर्वौषधीः**— उों याऽओषधीः पूर्वाज़ाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनैनु बभ्रूणामहᳬ शतंधामानि सप्त च ।।

**दूर्वा**— ओं काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।

**पञ्चपल्लवाः**— ओं अश्वत्थे वोनिषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाजऽइत्किलासथयत्सनवथ पुरुषम् ।।

**सप्तमृत्तिका**— ओं स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ।
यच्छानः शर्म सप्रथाः ।।

**पूंगीफलम्**— ओं याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
वृहस्पतिः प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः ।।

**पंचरत्नम्**— ओं परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे।

**सुवर्णखण्डम्**— ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।

**रक्तवस्त्रम्**— ओं सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासोऽअग्ने विश्वरूप ँ संव्ययस्व विभावसो ।।

**पूर्णपात्रम्**— ओं पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज ँ शतक्रतो ।।

**श्रीफलम्**— ओं याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः ।।

**वरुणावाहनम्**— ओं तत्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो हविर्भिः
अहेडमानो वरुणेह वोऽयुरुश ँ समानऽआयुः प्रमोषीः ।
अस्मिन्कलशे साङ्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं वरुण आवाहयामि

**देवतावाहनम्**— ओं कलाः कला हि देवानां दानवानां कलाः कलाः ।
संगृह्य निर्मितोयेन कलशस्तेन कथ्यते ।।
कलशस्य मुखे विष्णुर्ग्रीवायां तु महेश्वरः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मामध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सागराः सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
अर्जुनी गोमती सर्यू चन्द्रभागा सरस्वती ।।

कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी ।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ।।
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा परा ।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अङ्गैश्चसहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।।
शान्तिः पुष्टिश्च गायत्री सावित्री कलशेस्थिता ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ।।

प्रतिष्ठा— उों मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम्प्रतिष्ठ । कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।।

कलशस्थदेवपूजा उों कलशे आवाहितवरुणादि देवताभ्यो नमः पादयोः पाद्यम् हस्तयोरर्घ्यं । मुखे आचमनीयम् । सर्वांगेषु स्नानीयम् । गन्धाक्षत पुष्पधूपदीपनवेद्य दक्षिणादि यथासम्भवोपचाराणि समर्पयामि ।

प्रार्थना - उों देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भविधृतो विष्णना स्वयम् ।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानिदेवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयितिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वञ्च प्रजापतिः ।
आदित्यावसवोरुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः ।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपियतः कामफलप्रदाः ।।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञंकर्तुमीहे जलोद्भव ।।
सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।
अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम ।
उों नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ।।

# श्री गौरीगणेशपूजा

**आवाहनम्** — ॐ गणानान्त्वागणपति ँ हवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपति
हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम ।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।
ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम् ।।

**आसनम्** – ॐ वर्ष्मोस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः ।
इमन्तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ।।

**पाद्यम्** – ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ।।

**अर्घ्यम्** – ॐ धामन्ते विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्त रायुषि ।
आपामनीके समिथे यऽआभृतस्तमश्याममधुमन्तन्तऽऊर्मिम् ।।

**आचमनम्**— ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ।

**स्नानम्** — ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ।।

**पयःस्नानम्**— ॐ पयः पृथिव्यांम्पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधा
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।।

**शुद्धस्नानम्**— ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम
एवं सर्वत्र दधिघृतादि स्नानान्ते इति प्रयोज्यम् ।

**दधिस्नानम्**— ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयू ँ षि तारिषत ।।

**घृतस्नानम्** - ॐ घृतम्मिमिक्षेघृतमस्य योनिर्घृते श्रितोघृतम्वस्य धाम ।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतंवषभवक्षिहव्यम् ।।

**मधुस्नानम्**--मधुवाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता ।
मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमांऽऽअस्तुसूर्यः । माध्वीर्गावोभवन्तुनः ।।

शर्करास्नानम् — ओं अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्येसन्त ँ समाहितम् ।
अपा ँ रसस्ययोरसस्तंवो गृहण्म्युत्तमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वा ॥
जुष्टङ् गृहण्‌म्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

उद्वर्तनस्नानम् — ओं गन्थर्वस्त्वाविस्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्टयै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्यबाहुरसिदक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडऽईडितः । मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेणा धर्नणा विश्वस्यरिष्टयै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥

शुद्धस्नानम् —ओं मुद्धवालः सर्वमुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विता श्येतः श्येत क्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलित्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ।

वस्त्रम् — ओं युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सउश्रेयान् भवति जायमानः ।
तन्धीरासः कवयऽस्तनयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः ॥

यज्ञोपवीतम् — ओं यज्ञोपवीतम्परमम्पवित्रम्प्रजापतेर्यत्सहजम्पुरस्तात्
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंचशुभ्रं यज्ञोपवीतम्बलमस्तुतेजः ॥

चन्दनम् — ओं त्वाङ्गन्धर्वाऽअखनं स्त्वा मिन्द्रस्त्वा वृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजाविद्वान्यक्ष्यादमुच्यत ॥

अक्षतान् — अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत । अस्तौषतस्वभावनो
विप्रानविष्ठपामतीयोजान्विन्द्रते हरो ।

पुष्पाणि-- ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वाऽइवसजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

दूर्वाङ्कुरम् — ओं काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीः परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

सुगन्धतैलम् — ओं अहिरिवयोगैः पर्येति वाहुञ्ज्याया हेतिम्परिवाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ँ सम्परिपातु विश्वतः ।

धूपम् — ओं धूरसिधूर्वधूर्वन्तन्धूर्वतं योस्मान्धूर्वतितन्धूर्वयम्वयंधूर्वामः ।
देवानामसिवह्नितमम ँ सस्नितमंपप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतमम् ॥

**दीपम्**—ओं अग्नर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वा
अग्निर्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।
ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा ।।

**नैवेद्यम्** ओं अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणीः ।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।।

**हस्तप्रक्षालनम्**— ओं अꣳशुना ते ऽअꣳशुः पृच्यतां परुष परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदायरसी अच्युतः ।।

**फलम्**— ओं याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
वृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चन्त्वꣳहसः ।।

**ताम्बूलम्**— ओं उतस्माद् द्रवितस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिन
श्येनस्येवध्रजतोऽअङ्कसम्परिदधिक्राब्णः सहोज्जातिरित्रतः स्वाह

**आरार्त्तिकम्**— ओं आरात्रिः पर्थिवꣳ रजः पितुरप्रायिधामभिः ।
दिवः सदाꣳसि वृहती वितिष्ठ सऽआत्वेषं वर्तते तमः ।।
इदꣳ हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये
आत्मसनिप्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ।।
अग्निः प्रजाम्बहुलां मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त ।।

**पुष्पाञ्जलि**— ओं यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवस्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः
ओं राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वैश्रवंणायकुर्म
समेकामान्कामकामायमह्यं कामेश्वरोवेश्रवणोददातु कुवेर
वैश्रवणाय महाराजायनमः । ओं स्वस्ति साम्राज्य भौज्यं स्वरा
राज्य पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमय समन्तपर्यायिस्
सार्वभौमः सार्वागुपान्तादापराधात् पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽएकराडि
तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्नाहे ।
आविक्षितस्यकामप्रे विश्वेदेवाः सभासद इति ।
ओं विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतोवाहुरुतविश्वतस्पात्
सम्वाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैद्यावाभूमी जनयन्देव एकः ।

**प्रदक्षिणा**— ओं सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृता ।
देवा यद् यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ।।

**विशेषार्घ्यः** — ओं रक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्षत्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राताभव भवार्णवात् ।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरद त्वं वर देहि वांछितं वांछितार्थद ।।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ।
ओं भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहितमहागणाधिपतये नमः
विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

## प्रार्थना

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथनमोनमस्ते ।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ।।

नमस्तेब्रह्मरूपायविष्णुरूपाय ते नमः ।
नमस्तेः रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियायदेवायनमस्तुभ्यं विनायक ।।

लम्बोदरनमस्तुभ्यं सततं मदक प्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषुसर्वदा ।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति ।।
विद्या प्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भवनित्यमेव ।
अनयापूजया सिद्धिबुद्धिसहितोमहागणपतिः सांगः सपरिवारः प्रीयताम् ।

अथ

# गायत्री सावित्री सरस्वती व्याहृति चूडानां प्रमाणनिरूपणम् ।

व्याहृतिर्द्वादश वर्णाश्चतुर्विंशतिस्त्रिपदा ।
चूड़ा चतुर्दश ज्ञेया प्रणवं दश योजयेत् ।१।
गायत्र्याष्टाक्षरा ज्ञेया सावित्र्यष्टाक्षरा तथा ।
सरस्वती तथा प्रोक्ता जपकर्म्मण्युदाहृता ।२।

पूर्वोक्तश्लोकद्वयस्य विशेषव्याख्या लिख्यते ।

व्याहृतिगायत्री । यथा :-

भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम् ।

इति द्वादशवर्णा व्याहृतिगायत्री

त्रिपदागायत्री । यथा :-

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

इति चतुर्विंशत्यक्षरा त्रिपदागायत्री

शेषोक्ततकारस्तु हलन्तत्वान्न गणनीयः ।

चूड़ागायत्री यथा ।

आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ।

इति चतुर्दशाक्षरा चूड़ागायत्री

गायत्री—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् । अष्टाक्षरा
सावित्री—ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि । अष्टाक्षरा
सरस्वती—ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् । अष्टाक्षरा

अथ व्याहृतिगायत्री सप्तप्रणवयुक्ता अनया रीत्या पठनीया ।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।

एषा व्याहृतिगायत्र्यूनविंशत्यक्षरात्

अथ त्रिपदागायत्र्यादौ प्रणवयुक्ता पाठ्या ।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नःप्रचोदयात् ।

इति प्रणवयुक्ता चतुर्विंशत्यक्षरैषा त्रिपदा

चूड़ागायत्र्यादावन्ते पाठ्यैवम् ।

ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

इति चतुर्दशाक्षरा चूड़ा ।

आसां समष्टिः षष्ट्यक्षरा ।

## अथ ध्यानम्

कुन्देन्दुस्फटिकावदातसुतनुः शुभ्रांशुका स्रग्विणी
नानाभूषणभूषितानलमुखी मार्त्तण्डबिम्बस्थिता ।
रक्तश्यामलशुभ्रपीतचतुरास्या श्वेतराजीवदृक्
गायत्री मधुरं सदैव चतुरो वेदांश्चतुर्भिर्मुखैः ।१।
सा देवी कटकाक्षसूत्रकरका शङ्खादि संबिभ्रती
शूल चारुकपालमेवमभयाभीष्टं चतुर्भिः सदा ।
स्थानेष्वेषु यथोक्तरूपश्रुतिभिर्मन्त्राक्षरैश्चिन्तिता
सा देवी प्रपुनातु देवजननी ध्यायेत्रिलोकेश्वरीम् ।२।

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ततो हृदयं पठित्वा तदनन्तरं जपः, जपान्ते कवचं पठेत् ।

अथ षष्टयक्षरगायत्रीमन्त्रो यथा ।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रयोदयात् ।

ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् । इत्यनेन
यथाशक्ति जपेत् । ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वमिति जपसमर्पणम्।

इति वहिर्जपविधिः समाप्तः।

अक्षमालाः– स्फटिकेन्द्राक्षरुद्राक्षैः पुत्रजीवसमुद्भवैः ।
सुवर्णमणिभिः सम्यक् प्रवालैरथवाऽब्जकैः ।
अक्षमाला तु कर्तव्या देवी प्रीतिकरी परा ।।
प्रवालैरथ वा कुर्यादष्टाविंशतिवीजकैः ।
पञ्चपञ्चाशता वापि ह्यष्टोत्तरशताधिका ।।

स्फटिक, इन्द्राक्ष, रुद्राक्ष, पुत्रजीव ( जियोपोता ), प्रवाल ( मुंगा ) अब्जक (पद्मबीज), सुवर्ण इनमें से किसी की भी यथेष्ट २८, ५५ व १० मणियों द्वारा जपमाला बनावे । उनमें सब से बड़ा सुमेरु बनाना चाहिए प्रत्येक मणि के मध्य में एक २ ब्रह्म ग्रन्थि बना लेवें । कालिकापुराण

वर्णमाला (अक्षमाला):- अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं
ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं
थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं लं हं सं
षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं
जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं
उं ईं इं आं अं क्षं चं टं तं पं यं शं ।१०८।

२. करमालाः करमाला भी शास्त्रों में तीन प्रकार की उपलब्ध होती है

१. सर्वदेवसाधारणा करमाला । २. शक्ति करमाला । ३. त्रिपुर सुन्दरी करमाला । तीनों का विवरण चित्रसहित प्रस्तुत कर रहे हैं।

१. सर्वदेवसाधारणा करमालाः--

आरभ्यानामिकामध्यं पर्वाण्युक्तान्यनुक्रमात् ।
तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद्दशसु पर्वसु ।१।

मध्यमाङ्गुलिमूले तु यत्पर्वद्वितयं भवेत् ।
तं वै मेरुं विजानीयाज्जपे तं नाभिलङ्घयेत् ।२।
शतं भवेद्दशावृत्यानामाया मूलतः पुनः ।
तर्जनीमध्यपर्वान्तमष्टोत्तरशतं भवेत् ।३।

प्रत्येक देवता की प्रसन्नता के लिये करमाला में चित्र नं० १ में अनामिका अंगुलि के मध्यपर्व से प्रदक्षिण क्रमानुसार बाह्यमार्ग में तर्जनी के मूलपर्यन्त-दशपर्व की दशावृत्ति में १०० संख्या सम्पन्न हो जाती है। इसमें मध्यमा के आदिम दो पर्व मेरु का उल्लंघन करना निषिद्ध है। पुनः चित्र नं० २ के अनुसार अब अनामिका के मूलपर्व से आरम्भकर तर्जनी के मध्यम पर्व तक ८ संख्या मिलाकर १०८ की संख्या माला में अष्टोत्तरशती की पूर्ति में सहायक होती है।

अंगुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलंघनात् ।
पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥

२. शक्ति करमालाः—

आरभ्यानामिका मध्यं दक्षिणावर्तयोगतः ।
तर्जनीमूलपर्यन्तं मध्यमायास्त्रिपर्वतः ॥
जपित्वा दशपर्वान्तं दशावृत्याशतं भवेत् ।
तर्जन्यग्रद्वयंपर्व मेरुस्तं वर्जयेज्जपे ॥
अनामामूलमारभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेण च ।
मध्यमामूलपर्वान्तं जायतेऽष्टोत्तरं शतम् ॥
करमालासमाख्याता शक्तिभक्तिप्रदायिनी ॥

दिव्यशक्ति प्रीत्यर्थ शक्ति करमाला चित्र नं० १ के अनुसार अनामिका मध्यपर्व से आरम्भ कर प्रदक्षिण क्रम से मध्यमा के तीनों पर्वों से होकर तर्जनी के मूल पर्व पर्यन्त १० पर्वों की दश आवृत्तियों में १०० संख्या हो जाती है तर्जनी के अग्रिम दो पर्व मेरु के रूप मे त्यागे जाते हैं । पुनः अनामिका के मूल पर्व से आरम्भ कर शक्तिकरमाला चित्र नं० २ के अनुसार मध्यमा के मूलपर्व पर्यन्त ८ पर्वों के सम्पन्न होने पर १०८ अष्टोत्तरी शक्ति करमाला शक्ति भक्तिप्रदा मानी जाती है ।
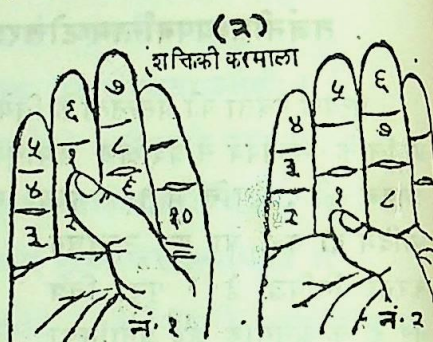
३. त्रिपुर सुरसुन्दरी करमाला:—

> **मध्यमा मूलपर्वादेः प्रादक्षिण्यमनुक्रमात् ।**
> **तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद्दशसु पर्वसु ॥**
> **अनामामध्ययोर्मध्यं मेरुं पर्वद्वयात्मकम् ।**
> **त्यक्त्वा मेरुं जपेद्भूयः कनिष्ठादि प्रदक्षिणम् ।**
> **तर्जनीमूलपर्यन्तमष्टोत्तरशतं भवेत् ।**
> **त्रिपुरसुन्दरीप्रेष्ठा श्रेष्ठास्यात्करमालिका ॥**

त्रिपुरसुन्दरी प्रीत्यर्थ मध्यमा अंगुलि से आरम्भकर सुन्दरी करमाला चित्र नं० १ के अनुसार प्रदक्षिण क्रम से तर्जनी के मूल पर्यन्त दशपर्वों की दश आवृत्तियों में १०० संख्या हो जाती है । मध्यमा और अनामिका के मध्य के दो पर्व मेरु होने से त्यागे जाते हैं । एवं कनिष्ठा के मूलपर्व से लेकर तर्जनी

मूलपर्यन्त सुन्दरी कर- माला चित्र नं० २ के अनुसार ८ संख्या मिलाकर १०८ संख्यात्मक अष्टोत्तरी माला सम्पन्न होती है।

प्रातर्नाभौ करं कृत्वा मध्याह्ने हृदि संस्थितम्।
सायं जपति नासाग्रे जपस्तु त्रिविधः स्मृतः॥

दानग्रहणतर्पणादौ करतीर्थानि:—

**कनिष्ठतर्जन्यङ्गुष्ठ मूलान्यग्रंकरस्य च।**
**प्रजापतिपितृब्रह्मदेवतीर्थान्यनुक्रमात्॥ याज्ञवल्क्यः**

१. **अग्नितीर्थ:**— करतल के मध्यभाग में **अग्नितीर्थ** पर ब्राह्मण को दान लेना दाता और ग्रहीता दोनों के लिये तारक होता है।

२. **प्रजापति (काय) तीर्थ:**— कनिष्ठा के मूल में 'प्रजापतितीर्थ' ऋषितर्पण में सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

३. **पितृतीर्थ:**— तर्जनी और अंगुष्ठमूल के मध्य में **पितृतीर्थ** पितृतर्पणार्थ माना

४. **ब्रह्मतीर्थ:**— अंगुष्ठ मूल में **ब्रह्मतीर्थ** गया है आचमन एवं चरणामृत ग्रहण में उपयुक्त होता है।

अथनीराजनावतारक्रमः

**आदौ चतुष्पादतले च देव्या द्विर्नाभिदेशे सकृदास्यमण्डले।**
**सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारमारार्तिकं भक्तजनः प्रकुर्यात्॥**

नीराजन (आरती) क्रम माला

सर्वप्रथम चार वार चरण कमलों में, दो वार नाभि मण्डल में, एक बार मुखमण्डल में एवं सातबार सर्वाङ्ग भगवान् के शरीर में भक्तिप्रिय भगवत्प्रेमी को आरती उतारनी चाहिए। इसी प्रकार दीपदर्शन में भी दीप को प्रत्यक्ष समीप रखकर फिर मस्तक व चरण मण्डल पर्यन्त एवं चरण कमलों से पुनः मस्तक पर्यन्त पारावतवत् (कबूत्तर) की तरह घुमाएं।

## ।। श्री वैष्णवीसहस्रनामसंस्तव ।।

# ।। तत्रादौ वैष्णवीपूजा प्रयोगः ।।

अथ मङ्गलाचरणम्:—

ॐकारं गरानेश्वरं गुरुवरं ब्रह्मैकवीजोत्तमं
विष्णोः स्वाक्षरमक्षरं त्रिशिखरं साम्बंस्वयं त्र्यम्बकम् ।
छन्दो योनिमथार्धमातृकमहंकारादि मूलं परं
नानावर्णमसेश्वरं ग्रहप्रभुं वन्दे विसर्गायणम् ।१।

आत्माभिषेकः -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा ।
यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।२।

आचमनत्रयम:—

ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः ।।

अङ्गन्यासः –

ॐ मनो वाक् प्राणचक्षुः श्रोत्र नाभि हृदय कण्ठ शिरः शिखा
बाहुभ्यां यशोबलम् ।

तिलकम्:—

गन्धद्वारं स्वमात्मानं सच्चिदानन्दरूपिणम् ।
करोमि तिलकं भक्त्या पूजाधिकार सिद्धये ।।

सूर्यायार्घ्यप्रदानम्: --

प्रातर्ब्रह्मऋगन्वितं सुयजुषा विष्णुं च माध्यन्दिनं
सायंसामनुतं त्रिसन्ध्यमरुणं मृत्युञ्जयंत्र्यम्बकम् ।।

मूलपर्यन्त सुन्दरी कर- माला चित्र नं० २ के अनुसार ८ संख्या मिलाकर १०८ संख्यात्मक अष्टोत्तरी माला सम्पन्न होती है।

प्रातर्नाभौ करं कृत्वा मध्याह्ने हृदि सस्थितम्।
सायं जपति नासाग्रे जपस्तु त्रिविधः स्मृतः॥

दानग्रहगतर्पणादौ करतीर्थाणिः—

**कनिष्ठतर्जन्यङ्गुष्ठ मूलान्यग्रंकरस्य च।**
**प्रजापतिपितृब्रह्मदेवतीर्थान्यनुक्रमात्॥ याज्ञवल्क्यः**

१. **अग्नितीर्थः**— करतल के मध्यभाग में **अग्नितीर्थ** पर **ब्राह्मण** को दान लेना दाता और ग्रहीता दोनों के लिये तारक होता है।

२. **प्रजापति (काय) तीर्थः**— कनिष्ठा के मूल में 'प्रजापतितीर्थ' ऋषितर्पण में सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

३. **पितृतीर्थः**— तर्जनी और अंगुष्ठ मूल के मध्य में **पितृतीर्थ** पितृतर्पणार्थ माना

४. **ब्रह्मतीर्थः**— अंगुष्ठ मूल में **ब्रह्मतीर्थ** गया है आचमन **एवं** चरणामृत ग्रहण में उपयुक्त होता है।
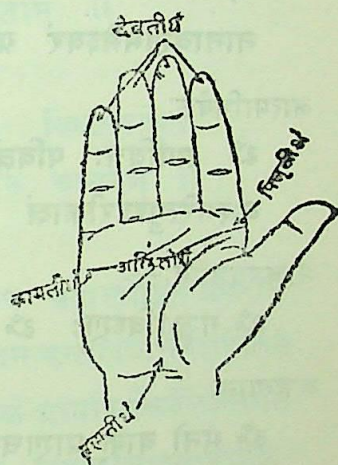
अथनीराजनावतारक्रमः

**आदौ चतुष्पादतले च देव्या द्विर्नाभिदेशे सकृदास्यमण्डले।**
**सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारमारार्तिकं भक्तजनः प्रकुर्यात्॥**

नीराजन (आरती) क्रम माला

सर्वप्रथम चार वार चरण कमलों में, दो वार नाभि मण्डल में, एक बार मुखमण्डल में एवं सातबार सर्वाङ्ग भगवान् के शरीर में भक्तिप्रिय भगवत्प्रेमी को आरती उतारनी चाहिए। इसी प्रकार दीपदर्शन में भी दीप को प्रत्यक्ष समीप रखकर फिर मस्तक च चरण मण्डल पर्यन्त एवं चरण कमलों से पुनः मस्तक पर्यन्त पारावतवत् (कबूत्तर) की तरह घुमाएं।

## ॥ श्री वैष्णवीसहस्रनामसंस्तव ॥

# ॥ तत्रादौ वैष्णवीपूजा प्रयोगः ॥

अथ मङ्गलाचरणम्:—

ॐकारं गणनेश्वरं गुरुवरं ब्रह्मैकवीजोत्तमं
विष्णोः स्वाक्षरमक्षरं त्रिशिखरं साम्बंस्वयं त्र्यम्बकम् ।
छन्दो योनिमथार्धमातृकमहंकारादि मूलं परं
नानावर्णमसेश्वरं ग्रहप्रभुं वन्दे विसर्गायणम् ।१।

आत्माभिषेकः —

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा ।
यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।२।

आचमनत्रयमः—

ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः ॐ गङ्गाविष्णुः ॥

अङ्गन्यासः —

ॐ मनो वाक् प्राणचक्षुः श्रोत्र नाभि हृदय कण्ठ शिरः शिखा
बाहुभ्यां यशोबलम् ।

तिलकम्:—

गन्धद्वारं स्वमात्मानं सच्चिदानन्दरूपिणम् ।
करोमि तिलकं भक्त्या पूजाधिकार सिद्धये ॥

सूर्यायार्घ्यप्रदानमः —

प्रातर्ब्रह्मऋगन्वितं सुयजुषा विष्णुं च माध्यन्दिनं
सायंसामनुतं त्रिसन्ध्यमरुणं मृत्युञ्जयंत्र्यम्बकम् ॥

नैंशेऽथर्वनुतं तुरीय पदजं मार्तण्डकं भैरवं
वैष्णव्याश्च सुदर्शनं ग्रहसखं शुक्लं भजे भास्करम् ॥

धूपः—

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

दीपः—

सुप्रकाशो महादीप सर्वशस्तिमिरापहः ॥
सबाह्याभ्यन्तरज्योमिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

पृथ्वीप्रार्थनाः—

पृथिव त्वया धृतालोका देवित्वं विष्णुनाधृता
त्व च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम् ॥

प्रतिज्ञासंकल्पः—

ॐ विष्णु विष्णुर्विष्णुः ॐ तत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणोद्वितीयपरार्धे विष्णु पादे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगेकलिप्रथम चरणे जम्बुद्वीपे भरतखण्ठे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे आद्याकुमारिका (वैष्णवी) क्षेत्रे जगन्नाथावतारेऽमुक-संवत्सरेऽमुकायनेऽमुकर्तौ अमुकमासेऽमुकतिथौ अमुकवासरेऽमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुक नामाहं त्रिगुणात्मिका ब्रह्माविष्णु महेश्वर रूपधारिणी वैष्णवीप्रीतिकामः त्रिपिण्डेश्वरी वैष्णवीदेव्याः पूजां करिष्ये ॥

स्वस्तीश गणेशस्तवः—

गङ्गोदञ्चितकन्धरं गणपतिं तीरोर्ध्वशुण्डाधरं
मार्तण्डद्युति वेदपरशु जलभूमोदांश्चदोर्भिधरम् ।

सिद्धिवृद्धियुतं प्रसन्नवदनं चञ्चत्तडिद्वाससं
विद्युद्वाटकिरीटि मूषकप्रभुंत्र्यक्षैक दन्तं भजे ॥

अथ द्वारपालदेवानांपूजा:—

विघ्नेशं वटुकं च क्षेत्रक पतिं संयोगिनी जाह्नवीं
कालिन्दीं च सरस्वतीं प्रियमथोधात्रीं विधात्रीं पराम् ।
शंखं पद्मनिधिं मतङ्गपदवीं मातङ्गिनीं देहलीं
भक्त्याहं प्रणमामि मंगलकरान् श्री द्वारपालान्सुरान् ॥

ध्यानम्:—

ब्राह्मी बाल सरस्वती भगवती यैषायुवा वैष्णवी ।
शैवी वृद्धसरस्वतीति त्रिगुणा दुर्गा स्वयं कालिका ॥
लांगूलानन वानरैः परिचिता राजाधिराजेश्वरी ।
जम्बुस्था भरतावनी मुकुटभूः साम्बावताङ्कारतम् ॥

देव्याआवाहनम्:—

आवाहयाम्यह देवीं त्रिंत्रिशत्कोटिकेश्वरीम् ।
त्रिपिण्डीं त्रिगुणाकारां विष्णुदेवींदृषद्वतीम् ॥

आसनम्: —

सर्वतोभद्रपीठस्थे मणिकूटेश्वरि ध्रुवे ।
रत्नसिंहासनासीने स्वासने प्रतिगृह्यताम् ॥

पाद्यम्:

मत्स्यरूपे त्रिकूटोत्ति व्योमगङ्गसमुद्भवं: ।
वैष्णवी छन्दसां मातः पाद्यमेतन्दृहाणमे ॥

अर्घ्यम्:—

कूर्मेश्लरि जगन्मातर्मन्दराचलमूलगे ।
मन्थोर्ध्वं वैष्णवीरूपे हस्तयोरर्घ्यमर्प्यते ॥

नैशेऽथर्वनुतं तुरीय पदजं मार्तण्डकं भैरवं
वैष्णव्याश्च सुदर्शनं ग्रहसखं शुक्लं भजे भास्करम् ॥

धूपः—

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

दीपः—

सुप्रकाशो महादीप सर्वशस्तिमिरापहः ॥
सबाह्याभ्यन्तरज्योभिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

पृथ्वीप्रार्थना: —

पृथ्वि त्वया धृतालोका देवित्वं विष्णुनाधृता
त्व च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम् ॥

प्रतिज्ञासंकल्पः —

ॐ विष्णु विष्णुर्विष्णुः ॐ तत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणोद्वितीयपरार्धे विष्णु पादे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगेकलिप्रथम चरणे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे आद्याकुमारिका (वैष्णवी) क्षेत्रे जगन्नाथावतारेऽमुक-संवत्सरेऽमुकायनेऽमुकर्तौ अमुकमासेऽमुकतिथौ अमुकवासरेऽमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुक नामाहं त्रिगुणात्मिका ब्रह्माविष्णु महेश्वर रूपधारिणी वैष्णवीप्रीतिकामः त्रिपिण्डेश्वरी वैष्णवीदेव्याः पूजां करिष्ये ॥

स्वस्तीश गणेशस्तवः—

गङ्गोदञ्चितकन्धरं गणपतिं तीरोर्ध्वशुण्डाधरं
मार्तण्डद्युति वेदपरशु जलभूमोदांश्चदोर्भिधरम् ।

वनमाला:—

आद्यगर्भे यज्ञनाथरूपे बौद्धकलेवरे ।
गृहाण स्वर्णगन्धाढ्यां वनमालां सुरेश्वरि ॥

धूप:—

कल्किरूप धरेऽश्वस्थे विष्णूत्तरकुलप्रिये ।
नन्दकासिधरे देवि धूपं जिघ्र सुगन्धितम् ॥

दीप:—

ज्वालामालाकुले बाले विश्वरूपस्वरूपिणि ।
साज्यं च वह्निनादीप्तं दीपं गृह्ण तमोहरे ॥

नैवेद्य:

त्रिसन्ध्ये त्रिस्वरे त्रिज्ये ब्रह्मविष्णु शिवात्मिके ।
नानाहृद्य रसोपेतं नैवेद्यं स्वीकुरुष्व मे ॥

उपायनम (भेंट) —

एलालवङ्ग सिन्दूर कुंकुमध्वज संयुतम् ।
नारिकेलफलं भक्त्या ह्यर्पयामि गुहेश्वरि ॥

दक्षिणाद्रव्यम्:—

प्रसन्नवदने देवि क्षीरोदार्णव – सम्भवे ।
साद्गुण्यार्थं मया भक्त्या सपादा दक्षिणार्प्यते ॥

नीराजनम् (आरती):—

द्वात्रिंशद्वर्तिकोपेतं कर्पूरेण प्रदीपितम् ।
नीराजनं मया तेऽद्य क्रियते भक्तिसंयुतम् ॥

पुष्पाञ्जलि: —

नानोद्यानतडागादि पुष्पजातिसमुद्भवाम् ।
पुष्पाञ्जलिं प्रयच्छामि वैष्णवी प्रीतये सदा ॥

प्रदक्षिणा: —

यानि कानि कुकृत्यानि नानाजन्मार्जितानि च ।
देव्याः प्रदक्षिणैकेव दहेत्तानि पृथक् - पृथक् ।।

प्रार्थना:—

आवाह्यासन वन्दिते पदजलैरर्घ्याचमैः स्नापिते ।
विद्युद्वस्त्र पवित्रगन्ध कुसुमैर्धूपैः सुदीप्तैरर्चिते ।।
नैवेद्यान्वितस्वर्ण दक्षिणवरैर्नीराजनैरर्जिते ।
सैकद्वित्रितुरीय पादक्रमणैः शरणं प्रपन्नोऽस्मिप्रते ।।

अनया पूजया सांगासपरिवारा ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका भगवती नारायणी वैष्णवी प्रीयतां न मम ।।

## ।। अथ षडर्णजपविधानम् ।।

अथैतेषां षडर्णमन्त्राणां ब्रह्मविष्णु महेश्वरा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि ब्राह्मी वैष्णवी माहेश्वरी दुर्गा देवताः विविधाभीष्टसिद्धये त्रिसन्ध्य निशीथे वा जपे विनियोगः ।।

प्रातर्ब्राह्मी मन्त्रः— ॐ ब्रह्मदेव्यैनमः ।।
मध्याह्ने वैष्णवी मन्त्रः— ॐ विष्णुदेव्यैनमः ।।
सायं माहेश्वरी मन्त्रः— ॐ शिवदेव्यैनमः ।।
निशीथे दुर्गा मन्त्रः— ॐ दुर्गा देव्यैनमः ।।

अथ न्यासः—

ॐ वि हृदयाय नमः (ॐ वि अंगुष्ठाभ्यां नमः) ।
ॐ ष्णु शिरसे स्वाहा (ॐ ष्णु तर्जनीभ्यां नमः) ।
ॐ दे शिखायै वषट् (ॐ दे मध्यमाभ्यां नमः) ।

ॐ व्यै कवचायहुम्  (ॐ व्यै अनामिकाभ्यां नमः) ।
ॐ न नेत्रत्रयाय वौषट्  (ॐ न कनिष्ठाभ्यां नमः) ।
ॐ मः अस्त्राय फट्  (ॐ मः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)

एवमन्य शक्तीनां पूर्वोक्त मन्त्राणां न्यासं कृत्वा ध्यानं कुर्यात् ॥

प्रातः पूर्वपिण्डी ब्राह्मीध्यानम्:—

गायत्रीं चतुराननां स्मितमुखीं रक्ताम्बरां लोहितां
बालामक्षधरां कमण्डलुकरां हंसासनास्रृग्धराम् ।
आयान्तीं रविमण्डलाद् द्युतिमतीं ब्राह्मीं हि ब्रह्मोद्भवां
प्रातर्वैष्णवीदक्षगां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम् ॥

माध्यन्दिनी पिण्डी वैष्णवीध्यानम्: --

सावित्रीं वरभूषणां सुयुवतीं मार्तण्ड बिम्बागतां
कुन्देन्दु स्फटिकाभनीलवपुषीं पीतांशुकां स्त्रग्धराम् ।
शङ्खालात – गदाम्बुजा – युधयजुर्माध्यन्दिनीमक्षधां
तार्क्ष्यस्थां प्रभवैष्णवीं भगवतीं वन्दे जगन्मातरम् ॥

सायंतनी शैवी ध्यानम —

शुद्धां शुक्ल सरस्वतीं शिवनिभां शैवीं वृषाधिष्ठितां
वृद्धां भास्करमण्डलासनगतां चन्द्रार्धचूडां पराम् ।
सामानन्द प्रदां सशूलडमरू – पाशान्नपूर्णेश्वरीं
साय वैष्णवीसव्यगां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम् ॥

निशीथेतुरीया दुर्गात्मिकासन्ध्यानम्: —

श्रीवत्सांक कुलीनषोडशकलां राधाप्रियां माधवीं ।
सूर्यांशादवतीर्ण द्वादशकलां सीताप्रियां राघवीम् ॥
यज्ञादांशसमुद्भवां दशकलां शक्तिप्रियां भार्गवीं ।
सिंहस्थां त्रिभवां तुरीय पदवीं वन्दे जगन्मातरम् ॥

## ॥ अथ श्रीवैष्णवीसहस्रनामस्तवः ॥

अस्य श्री वैष्णवी सहस्रनाम मालामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोगर्भितं शार्दूल विक्रीडित छन्दो ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकेति त्रिगुणा वैष्णवी देवता त्रिकूटेश्वरी वैष्णवी प्रीतये स्वाभीष्ट सिद्धयर्थे च जपे विनियोगः ॥

॥ अथध्यानम् ॥

आद्यां मेर्वासनस्थां श्रुतिमुखपठितामेकपादां सहंसां ।
मध्यां तार्क्ष्यासनस्थां द्विपदयजुभिर्वैष्णवैः स्तूयमानाम् ॥
सव्यां डिम्भासनस्थां त्रिपदनमितां सामगैर्गीयमानां ।
दुर्गां सिंहासनस्थां चतुरधिपदथाथर्वणैर्नौमि प्रीताम् ॥

### ॥ नाममालारम्भः ॥

वैष्णव्या प्रभवैष्णवी विष्णुवती विष्णुप्रिया वैष्णवी ।
जम्बुद्वीपभवा त्रिकूटमुकुटा राजाधिराजेश्वरी ॥
विष्णूर्जात्रिसुता त्रिदेवजननी श्रीरत्नसानूद्भवा ।
क्षीरोदार्णवसंभवाब्धिमथिनी मन्द्रोर्ध्वमूलाश्रिता ।१।

कौर्मी विष्णुमयी परा प्रथमजा कात्यायनी कामभूः ।
शक्तिः कौस्तुभधारिणी वसुमती कल्पद्रुमूलासना ॥
शंखेशी गरुडासना हयमुखी सप्ताश्ववाहप्रिया ।
मातङ्गी गजगामिनी शिवभवा पीयूषमन्दाकिनी ।२।

धेनुः कामदुघा सुरासुरप्रिया हेमाद्रिपुत्री त्वरा ।
चान्द्री चन्द्रमुखी गजाननप्रिया देवाङ्गनाऽऽह्लादिनी ॥
विष्णुब्रह्मशिवात्मिका द्युतिमती राहुस्वरूपाद्भुता ।
शारङ्गी विषभक्षिणी विषहरी धन्वन्तरिप्रेयसी ।३।

माया राहुशिरा बिमोहनकरी विष्णूद्भवा मोहिनी ।
कन्दुक्रीडनतत्परातिचपला छन्दःस्तुता वैन्दवी ॥
सिन्धूत्प्लावनसक्षमातिरुचिरा राहोर्मनोहारिणी ।
गुप्तामन्दरकन्दरान्तर्गुहा चक्रेश्वरी चक्रिणी ।४।
ज्योतिश्चक्रभवा नटेश्वरप्रिया कोषेश्वरीखड्गिनी ।
चक्रभ्रामणकारिणी द्रुतपदा राहोशिरश्छेदिनी ॥
गुह्या मन्दिरवासिनी भगवती द्वाःकैतवी सैतवी ।
दान्ता दैत्यक्षयंकरी रणनदी रक्षोहणी रोहिणी ।५।
शीर्षस्कन्धविभेदिनी सुवरदा स्कन्धान्तशापाङ्किनी ।
तुष्टाभीष्टप्रदायिनी सकरुणा राहुस्तुताऽऽमोदिनी ॥
सूर्योर्जा नटिनी त्रिलोकजननी सञ्ज्ञा त्रिमूर्तिः स्वधा ।
ब्राह्मी ब्रह्मप्रसूस्त्रिकूटगिरिजा शान्तिः क्षमा सादरा ।६।
त्र्यक्षा त्र्यक्षरवादिनी जलमयी शम्भूद्भवा शाम्भवी ।
सन्ध्या वेदप्रसूः प्रचण्डदहना चण्डी त्रिपिण्डीन्दिरा ॥
ओंकारेश्वरमातृका बलवती सप्तस्वरा त्रिस्वरा ।
भक्तिः भक्तिकरी त्रिकूटप्रभवा मेरूद्भवा जाम्बवी ।७।
भव्या भाग्यवती स्वमा स्वरमयी यज्ञेश्वरी भारती ।
विज्ञाता कुलकुण्डली सुगहना गुह्येश्वरी गुह्यका ॥
भौमा भूतिप्रदा त्रिदोषशमनी भौमेश्वरी भूमिका ।
कामाक्षी वनदेवता रसमयी गङ्गा प्रयागोद्भवा ।८।
गङ्गामूलनिवासिनी विधिनुता माध्यन्दिनी गीतिका ।
गीता ज्ञानमयी प्रदीपकलिका जीवाद्भुता वासवी ॥

विद्या पद्मभवा समाधिनिपुणा कल्पद्रुमालम्बिता ।
नीरक्षीर विभेदिनी स्वरकला हव्यादिनी वादिनी ।९।

विद्यादानकरी निरीक्षणकरी विद्याधरी शाङ्करी ।
कालिन्दी मकरन्दगन्धमधुपा माघेश्वरी पूर्णिमा ।।
रामा रामरमा प्रमाददहना धामात्मिका राधिका ।
रम्भा दम्भप्रभञ्जिनी गुणमयी चापान्विता शिञ्जिनी ।१०।

वह्लस्था ह्लदसंभवामृतमयी हैयङ्गवीनावनी ।
वीणा तारगता गजाननप्रसूर्मार्तण्डकुण्डोद्भवा ।।
वीरा क्षीरभवानिका दधिमुखी विन्ध्येश्वरी विन्ध्यजा ।
मेरूध्वाऽऽद्यकुमारिकाक्षवलया गणितातिनिकानामिका ।११।

अष्टाविंशतिका प्रभातनमिता बोधेश्वरी धीश्वरी ।
श्रीभंगंगृहिणी गजाननमुखी दुष्टग्रहध्वंसिनी ।।
सप्तद्वीपप्रभाविनी भयहरी प्रीतिः प्रदीप्तीश्वरी ।
नाडीचक्रगता हिरण्मयप्रभा ब्रह्माण्डरूपात्रयी ।१२।

विद्युद्दीप्तिनिभा प्रपञ्चमहिमा सिद्धेश्वरी सिद्धिदा ।
बुद्धिः शुद्धिकरी ध्रुवाभिमुखभूर्वधूर्धोरणी प्रेरणा ।।
साध्या सिद्धिप्रिया सुरेन्द्रवरदा शाकम्भरीखेचरी ।
गौरी सोमलता नगेश्वरसुता गङ्गावृतावर्तिनी ।१३।

लक्ष्मी राज्यप्रदाभिजित्प्रणयिनी नारायणी नारदा ।
विश्वाधारप्रदा मदालसहरा निद्रा सुभद्राद्रिजा ।।
जम्बुद्वीपप्रभा प्रभावजननी तविषी दूकूलावृता ।
स्वक्षारूढपदा सुदुर्गढभद्रा श्रीचन्द्रभागान्विता ।१४।

गङ्गावेष्टितकन्दरा परिधिभूः काश्मीरगासारिका ।
मुग्धामोहविनाशिनी सुवदना मन्दाकिनी व्योमगा ॥
वृन्दालास्य विलासिनी ध्रुवपदी देवी दया देविका ।
रेवा देवलपूजिता मधुमयी गन्धर्वयक्षार्चिता ।१५।

मेघाभा घनश्यामलात्रिनयना साम्बापुराधीश्वरी ।
वाधाघ्नी रवि-सोम-वह्निनयना रणवीरसिंहार्चिता ॥
योगध्यानप्रकाशिका सुखमयी ब्रह्मार्चिता यामिनी ।
माता षोडशमातृका घृतावती श्रीवत्सकुण्डोद्भवा ।१६।

कूटस्था त्रिकुटा त्रिकूटप्रकटा कोटिस्त्रिकूटासना ।
मीनाक्षी प्रवरा त्रिकूलकलिका सूर्यप्रभा मार्गदा ॥
अम्बा कष्टहरी कूहूः कलरवा तारस्वरा स्वर्गला ॥
हृष्टिः सृष्टिकरी मरीचिदुहिता नीलोत्पलाक्षाक्षरा ।१७।

दक्षाक्षयप्रदायिनी सुमनभूः सर्वाङ्गभूषावृता ।
श्रीखण्डाङ्गविलेपना विलग्ता ब्रह्माण्डभाण्डोदरा ॥
नानारूपधरा धरामरकृपा दुःस्वप्नविध्वंसिनी ।
सावित्री गरुडप्रिया जय करी क्षेमङ्करी श्रीकरी ।१८।

शूरा सैरिभमर्दिनी पुरहरी छत्रेश्वरी छत्रपा ।
मेधावृद्धिकरी रिपुक्षयकरी सम्भाषणे सिद्धिदा ॥
शान्ता ब्रह्मशिखा विवेकजननी सारस्वतेष्टंकरी ।
बाह्याडम्बर वर्जिता नवभवा शक्तिः स्वयंमुक्तिदा ।१९।

सीता वीरनुता प्रसादजनका चापोद्धृतिक्रीडिता ।
वैदेही जनकात्मजा क्षितिसुता स्वर्णाक्षमालार्चिता ॥

मुक्ताशुक्तिभवा विचित्रमहिमा वीरप्रिया सिन्धुजा
तन्वी कोमलपल्लवा स्वरलता स्फूर्तिप्रधानाक्षजा ।२०।
ऐन्द्री पर्वतभेदिनी पविधरा वज्रेश्वरी कान्तिदा ।
स्वान्तर्मार्गप्रदायिनी मधुभवा पुष्पासनाध्यासिनी ॥
माध्वीर्माहिषमर्दिनी कुवलया योगेश्वरीमाधुरी ।
नित्यानन्दकरी यजुः प्रणयिनी यज्ञोद्भवा यज्ञभूः ।२१।
राधारङ्गविहारिणी मधुमती मध्याद्रिजामाधवी ।
ब्राह्मी ब्रह्मविचारिणी शशिभृता कामेश्वरी जित्वरी ॥
माला सूत्रधरा विशेषप्रतिभा सिक्नीदुकूलावृता ।
स्वर्गङ्गा विरजा महेन्द्रप्रणता वाराणसी वाणधीः ।२२।
बालार्कप्रतिमा प्रभाकरमुखी चन्द्रानना भूसुता ।
सौम्या गौरवभूषणा शशि मुखी शुक्रश्वसाभार्गवी ॥
सूक्ष्मा हृष्टिप्रदा शरासनगता दैत्यार्दिनी तारिका ।
केतोः पुच्छगतोर्ध्वरन्ध्ररमणी तेजःप्रदा शंप्रदा ।२३।
लक्ष्यालक्ष्य प्रदायिनी द्विजनुता पूज्या सुवर्च्चस्वला ।
भीमा भूमिप्रदा चतुस्तनधरा तूर्यस्तनी तुण्डिका ॥
प्रातर्ब्रह्मवराभिजिद्धरिवरा सायं स्वयंभूवरा ।
तूर्या तूर्यवरा महाद्भुतकरी निम्लोचनी निम्लुचिः ।२४।
पुष्या वाहत्रयी पवित्रभवना यज्ञाङ्गिनी रङ्गिणी ।
कौमारी कुमुदा मुकुन्दभगिनी संसिद्धपीठोद्भवा ॥
ज्योतिष्पीठधरातिगुप्तभवना प्रत्येकपीठस्थिता ।
योगिध्यानगता दिगन्तमहिमा सिद्धा सुसिद्धस्तुता ।२५।

साङ्गानङ्गलक्रीडिता ध्रुवनुता श्रीपूर्णचन्द्रेश्वरी ।
रेखा मूलगता त्रिपर्वगहना श्रीराजराजेश्वरी ॥
भाविज्ञानप्रदायिनी स्मृतिभवा सूक्ष्मा मृणालप्रभा ।
काशी मोक्षप्रदा सुराङ्गणप्रिया धारा प्रवाहात्मिका ।२६।

विश्वस्ताम्बरगर्जिता सुदर्शना पातालमूलोद्भवा ।
गङ्गासागरसङ्गमा सुरनदी पूर्णामृता ताविषी ॥
गायत्री कमला स्वर्गगोचरचरा सिन्धूद्भवा सैन्धवी ।
स्वाती बिन्दुनिभा सदामृतकला पूर्णायुराशीः प्रदा ।२७।

पुण्या पुण्यस्थलेश्वरी नगभवा वेणी त्रिवेणी दनी ।
चन्द्रभूषणभूषिता प्रियवरा दृश्या सुरेज्येडिता ॥
देवेन्द्रप्रभवा त्रिलोकविभवा ज्वालामुखी कालिका ।
लोकानन्दकरी प्रतापविभवा रौद्रेश्वरी मुद्रिका ।२८।

दुग्धोदार्णवसम्भवा विधुनिभा विद्यार्णवा जम्बुभूः ।
पाञ्चाली रविचन्द्रजा वसुमती विद्यावती भामती ॥
विद्युत्पुञ्जप्रभा निगीर्णमहिमा भद्रेश्वरी जह्नवी ।
राज्येशित्वप्रदायिनी हरिभवा विघ्नेश्वरी विघ्नहा ।२९।

हंसारण्यविहारिणी कलिभवा विद्येश्वरी भैश्वरी ।
कृष्णा फाल्गुनसंभवा रतिनिभा छायेश्वरी फाल्गुनी ॥
कृष्णान्तः करणात्मिका गिरिभवा रामेश्वरी भ्रामिणी ।
मत्स्या वृद्धिमती कुलीनविभवा सिंहेश्वरी सिंहिका ।३०।

वाराही नरसिंहसृङ्गुल्मुखी मुख्यागुहा गोमुखी ।
गङ्गाद्वारप्रवेशिनी मलयजा नानाप्सरोराजिता ॥

गोप्या गोप्यगुहा गुहेश्वर प्रिया गुह्येश्वराऽऽराधिता ।
साशापाशविनोचिनी नरमदा नर्मादरा नर्मदा ।३१।

संक्रान्तिः परमेश्वरी खगप्रिया रेतस्वती रेवती ।
विश्रान्ता दनुमर्दनी क्रतुमुखी संयाबहव्यप्रिया ॥
दूर्वा दुःखप्रभञ्जिनी गुडप्रिया कापर्दक्रीडारता ।
बाला शैशवरञ्जिता मधुमुखी पुष्टांगयष्टिः स्फुरा ।२३।

आपोज्योतिरतीव तीव्रजवना सहस्राक्षशक्तिः शुचिः ।
गौरी कुण्डसमुद्भवा स्वरवती सर्वेश्वरी सौख्यदा ॥
श्वेतच्छत्रविराजिता शिखिमुखी हंसप्रिया धीप्रदा ।
सस्यश्यामलरञ्जिता प्रतिकृतिः पार्वत्यभूर्झर्झरा ।३३।

पीता पीतप्रभेश्वरी सुबगला वलगामुखी शतपथा ।
लाक्षालक्तकभूषिता शुकनसा भूभाक्षबिम्बेश्वरी ॥
रात्रीसूक्तक संस्तुता स्तवप्रिया गन्धप्रिया गन्धधा ।
नीलाद्रि प्रभवा त्रिकालनमिता कुब्जेश्वरी कुब्जिका ।३४।

रथ्या मोहविनाशिनी हलधरा विश्वम्भरार्तम्भरा ।
सत्या पूर्णरसात्मिकाभ्रकरुचिस्तीक्ष्णांशुतेजोधरा ।
स्तम्भाडम्बरमण्डिताधरमुखी स्वात्मा परात्मावधूः ।
स्वेच्छा शक्तिस्वरूपिणी गजमुखी रैभ्यार्चिताधर्मधूः ।३५।

द्वारस्था निधिपा प्रमेहशमनी दुर्नामरोगापहा ।
कुल्या दुग्धमती तृतीयनयना ह्रींविश्वकर्मप्रिया ॥
चित्रा शम्बरमर्दिनी गुहमुखी पञ्चाङ्गदेवी स्वधा ।
नादब्रह्मनिनादिनी धृतिध्वजा शार्दूलविक्रीडिता ।३६।

दुर्धर्षा हरिता प्रदीप्तवसना गण्डापहा गण्डकी ।
चामुण्डा गलगण्डजा शुकनिभा सिंहानना त्र्यम्बका ।
श्रेष्ठानन्दप्रसूवरीः सुललिता ग्रन्थेश्वरी शारदा ।
ख्याता नीलसरस्वती शिखिनिभा शिष्टा मराला..ना ।३७।

पूर्णानन्दविवर्धिनी व्रजसुता गोपालिका बालिका ।
बाहुस्था रविनन्दिनी ध्रुवसुता श्वेतातपत्राम्बिका ।।
मात्रा मोहमयी निपीतदहना विजया जया दुर्जया ।
पुष्पी बाणमयी सुनीतिरपरा जम्बुप्रिया मेदिनी ।३८।

आर्षा राजसुता महेन्द्रतनया लोकप्रिया कन्यका ।
सान्द्रा तत्ववती पुनीतसलिला मोक्षेश्वरी देवकी ।।
श्रद्धा लोमशि मोक्षदाद्रिविभवा रुद्रावती रुद्रिका ।
प्रेष्ठासूत्तरवाहिनी भवमुखी गोपाङ्गना प्राङ्गणा ।३९।

नीला नी कलेवरा कलिवरा गोवर्धनोद्धारिणी ।
कृष्या शृंगचतुष्टयी गहनभूः गोविन्दिका विन्दुका ।।
सान्द्रा मन्दिरवासिनी त्रिमुकुटा रत्नोदसम्मन्थिनी ।
शर्वाणी शिवमोहिनी प्रकटिता क्रीडाप्रिया सांख्यभूः ।४०।

गन्धद्वारमयी करीषविभवा गोमूत्रिका सूत्रिका ।
त्रिज्येशार्धशरीरिणी प्रियतमा देवेश्वरी खड्गिनी ।।
ऊर्ध्वा नम्रकलेवरा व्रजसुता धर्मार्थप्रीतिः प्रदा ।
स्थूला कुण्डलिका सदार्द्रसिकता विद्यातवी भूधरी ।४१।

विद्युद्दामविभूषणा त्रिषवणा विद्युल्लता धामिनी ।
पण्डा दण्डधरा प्रकाशसदना मदनेश्वरी मादिनी ।।

स्वर्वन्द्या गणना नवग्रहपदी भूर्ज्जेश्वरी भूरिदा ।
पञ्चस्था द्रुपदा विनष्टकुहका कोकेश्वरी कोकिला ॥
व्यासा नासिकवासिनी विधुधरा कुम्भेश्वरी माकरी ।
गौराङ्गा पृथिवी विनोदनिपुणा दैवी तुलाधीश्वरी ।४८।

वासिष्ठी श्रुतिसंस्तुता प्रतिपदा मौनेश्वरी माण्डवी ।
कीर्तिः प्रेमलता विधेयनिपुणा राशीश्वरी वाङ्मती ॥
रासानन्दकरी कलोलविभवा रासेश्वरी भास्वरी ।
शब्दब्रह्मस्वरूपिणी मधुरिमा माधुर्य्य पूर्णाबला ।४९।

साध्यारङ्कप्रिया प्रियाप्रियकरी श्रीनीलकण्ठप्रिया ।
स्वान्तर्दण्डगता महोदधिसुता शेषासना वासना ॥
द्रोणी वासुकिवेष्टिता प्रकृतिका कृत्येश्वरी कृत्तिका ।
नक्षत्रेश्वरसंभवा गुरुसुता पिण्डी सुरोजोद्भवा ।५०।

बैणी बाहुभवा स्थिरा पृथुमती जम्बूर्ध्वश्रृंगोद्भवा ।
साम्बस्थापितमन्दिरासनगता कल्किप्रिया विष्णुभा ॥
सूर्यज्ञा शिवरूपिणी मृडमयी शुक्रार्कजाशक्रभा ।
चन्द्राऽर्काग्निसुताकुजार्कजभवाधर्मस्वरूपाश्विनी ।५१।

राह्वर्कामृतभक्षिणी दनुसुता सूर्यार्किभूर्वारुणी ।
केतूदर्कभवा समीरणप्रिया पाशांकुशी वायवी ॥
सूर्येज्या धनदा कुबेरमहिमा पीयूषकुण्डोद्भवा ।
शुक्रार्कज्ञरुचिः सरोजवदना ब्रह्मेश्वरी पारदा ।५२।

ब्रह्मानन्द स्वरूपिणी दहरगा राहु्वर्कमन्दात्मजा ।
साक्षाच्छेषमयी सहस्रवदनानन्तस्वरूपा प्रभा ॥

पुष्टानिष्टविमर्दिनी श्रुतिनुता पूर्मण्डले मोक्षदा ।
धान्या तामरसामृतञ्जनप्रभा दुःखापहा संकटा ।४२।
कारागारविमुक्तिदा नृपनुता शृंगारमध्यस्थिता ।
भाण्डागारविवर्धिनी निधिभवा यक्षेश्वरी शंखिनी ।।
मान्या मेरुकुलेश्वरी धृतकला व्यालोलगण्डस्थला ।
दिव्यालोककरी वियोगहरिणी पुत्रेष्टियज्ञोद्भवा ।४३।
मूर्धन्यामृतवर्षिणी घृतस्रवा स्निग्धा सुषुम्णोर्ध्वगा ।
धर्मक्षेत्रगता विलासविधुरा गान्धारदेशोद्भवा ।।
श्रव्या दुष्टविनाशिनी जवभरा विद्योतिनी द्योतिनी ।
शाकल्या बलदायिनी गिरिनदी पिण्डीश्वरी पिण्डजा ।४४।
काशीराजसुता विरोधदमनी धिष्ण्या द्युतिराहुतिः ।
विघ्नध्वंसकरी गणेशवरदा सौदामिनी भामिनी ।।
दोग्ध्री देवनुता प्रजेशदुहिता दक्षात्मजा दक्षभूः ।
सन्तुष्टा सुरनन्दिनी सुरनदी वीणोद्भवामूर्छना ।४५।
यन्त्रस्था सकला कलेश्वरमुखी कालेश्वरी तालिका ।
तानाऽऽत्मा स्वरमण्डलेश्वरसुता तारेश्वरी ताड़िता ।।
सम्पूर्णा मणिकर्णिकानिलजवा दुर्गेश्वरी दुर्घटा ।
दुर्गा दुर्गविनाशिनी ध्रुवलता स्वाद्यान्नपूर्णेश्वरी ।४६।
प्रौढा द्वीपवती विशालनयना चिन्ताहरी भास्वरी ।
त्रिस्रोता मधुस्वादुलातिमृदुला विद्युच्छटामुद्रिता ।।
सद्यः शान्तिप्रदानवद्यचरिता दिव्यानना धामिनी ।
सत्या वेदवती वरिष्ठवनिता संयोगिता योगिता ।४७।

ज्योतिर्मण्डलसम्भवा ग्रहभवा पुष्पप्रदा पुष्टिपणी ।
पर्वात्मा वरवर्णिनी सुरहिता पीयूषदानक्षमा ।५३।

रक्षोमोहकरी तमःक्षयकरी ज्ञानार्णवा सार्णवा ।
मूलाधारगता सुवर्णहरिणी भा ब्रह्मरन्ध्रस्थिता ॥
स्वाधिष्ठानगता सरोजप्रभवा मणिपूः स्थितैरावता ।
मध्यानाहतसंस्थिता मृदुस्वरा तारा विशुद्धेश्वरी ।५४।

आज्ञाचक्रप्रबोधिनी सुबिरगा सहस्रारचक्रस्थिता ।
मान्धात्री वरदा विनोदकुशला रामेश्वरी वीरसूः ॥
छान्दोग्या त्रिपदा चतुष्पदयुता माला शिला विकृतिः ।
विच्छन्दावृतरूपिणी दशभुजा स्वच्छन्दलीलाकरी ।५५।

नन्दा कन्दरवासिनी मृदुपदा द्वारावती द्वारिका ।
पूर्णाशा जगदीश्वरी द्रुमपदा भद्रेश्वरी जुम्बका ॥
मुञ्जाला सुकरालिका घनपदा विजृम्भिका वीचिका ।
कुन्देन्दीवरसंभवा बहुपदा हंसासना द्रौपदी ।५६।

सौपर्णी प्रणवेश्वरी नवपदा श्रीबाणगङ्गेश्वरी ।
गुप्तश्रीर्मणिपर्वतेश्वरसुता देवीत्रिकूटेश्वरी ।

ॐ देवी त्रिकूटेश्वरी ॐ

एषाष्टाधिसहस्रधा पदगुणा शार्दूलविक्रीडिता ।
वैष्णव्याःस्तवमालिकात्र ग्रथिताप्रेमोपहारीकृता ।५७।

सुमेरौ पीठे वा चलदलतले वाप्यथ गृहे ।
त्रिसन्ध्यं रात्रौ वा विहितविधिना वाप्यविधिना ।।
नरो वा नारी वा पठति यदि भक्त्या प्रतिदिनं ।
त्रिकूटासाहस्रीं भवति स च विष्णोः प्रियगणः ।।

विप्रोऽधीते य एतां सकल श्रुतिगताम्मर्मजातान्स भिन्द्याद्
राजाप्येवं ससैन्यो निखिलकुवलयं स्वात्मसादातनोति ।।
वैश्योऽध्येता समृद्धः पशुकृषि विभवैर्जायते कर्मयोगी ।
शूद्रःश्रोतासुषेव्यो द्विजनृपवणिजांलब्धकीर्तिश्च भूयात् ।५६।

यं मेरुं द्युचराः प्रदक्षिणविधौ नित्यं समर्चापराः ।
मेढीभूतमतस्तमेव त्रिगुणा पीठं समाधिष्ठिता ।।
विश्वाकर्षणकारिणीभगवती सर्वविताराऽऽत्मिका ।
वाञ्छा कल्पलता त्रिकूटमुकुटा पायात्सदाभारतम् ।।

ॐ जय जय श्रीवैष्णवी सहस्रनामाला पाठेन
वैष्णवी जगदम्बा प्रीयतांनमम ।।

खिहाड़ियां वास्तव्य श्रीरघुनाथपुरी जम्बू नगरीय पं० श्रीचरणदात्मज पं० विहारीलाल वासिष्ठ विरचिता वैष्णवी सहस्रनाम माला सम्पूर्णा ।

# अथ शिवार्चनम्

गणेशपूजा — ओं गणानान्त्वागणपति ँ हवामहेप्रियाणान्त्वाप्रियपति ँ
हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम ॥
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।

प्रार्थना — ओं गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पतऽआनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम् ।

गौरीपूजा — ओं अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकाकाम्पीलवासिनीम् ॥

प्रार्थना — ओं गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।
अष्टापदी नवपदी बभूवुशी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ।

नंदीश्वर पूजा — ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः । पितरञ्च
प्रयन्त्स्वः ।

प्रार्थना— ॐ प्रैतुव्वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा । भरन्नग्निम्पुरीष्यमा-
पाद्द्यायुषः पुरा ।

वीरभद्र पूजा— ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ँसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।

प्रार्थना — ॐ भद्रो नो ऽअग्निराहुतोभद्रारातिः । सुभग भद्रो ऽअध्वरः ।
भद्राऽउत प्रशस्तयः ।

कार्तिकपूजनम्— ॐ यद्क्रन्दः प्रप्रमञ्जायमान ऽउद्यन्तसमुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽ उपस्तुत्यम्महि जातन्ते ऽअर्वन् ।

प्रार्थना— ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव ।
तन्न ऽ इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ।

कुबेर पूजा— ॐ कुविदङ्गयवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनु पूर्वं वियूय ।
इहे हैषांकृणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नमऽउक्तिं यजन्ति ।

प्रार्थना — वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषुविभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ।

**कीर्तीमुख पूजा** - असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय-स्वाहा दिवापतये स्वाहा ।

**प्रार्थना** — ॐ ओजश्चमे सहश्चम ऽ आत्मा च मे तनूश्चमे शर्म च मे वर्म च मेङ्गानि च मे स्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च मऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।

**आत्मनोऽङ्गन्यासः**—

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी ।
तया नस्तन्वाशन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ।। **शिखायाम्** ।।

अस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षे भवा ऽ अधि ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ।। **शिरसि** ।।

असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधिभूम्याम् ।
तेषाꣳ सहस्र योजनेव धन्वानि तन्मसि ।। **ललाटे** ।।

वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ।
प्रजावन्तः सचेमहि ।। **भ्रुवोर्मध्ये** ।।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।। **नेत्रयोः** ।।

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।। **तृतीयनेत्रे** ।।

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च
नमः कुल्याय च सरस्याय च नमोनादेयाय च वैशन्ताय च ।। **कर्णयोः** ।।

मानस्तोके तनये मान ऽआयुषि मानो गोषु मानोअश्वेषुरीरिषः ।
मानो वीरान्रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे ।। **नासिकयोः** ।।

अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ।। **मुखे** ।।

नमोवञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो
नमो निषङ्गिण ऽ इषुधिमते तस्कराणांम्पतये नमो
नमः सृकायिभ्योजिघाᳪ सद्भ्योनुष्णताम्पतये नमो
नमो सिमद्भ्योनक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः । **ग्रीवायाम्** ॥
तेषाᳪ सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ **कण्ठदेशे** ॥
नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥ **वाह्वोः** ॥
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाᳪ सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ **हस्तयोः** ॥
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय ।
नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च ॥ **अंगुलिषु** ॥
नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम ऽ उद्गुरमाणाय चा-
भिघ्नते च नम ऽआखिदते प्रखिदते च नम ऽ इषु कृद्भ्यो
धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳪ हृदयेभ्यो ।
नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम ऽआनिर्हतेभ्यः ॥ **हृदये** ॥
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रात पतिभ्यश्च वो
नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो
विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥ **पृष्ठे** ॥

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्त्रᳪ हेतयो ऽन्यमस्मन्निवपन्तुताः ॥ **उदरे** ॥
नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च ।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ **दक्षिणकुक्षौ** ॥
द्रापे ऽ अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहितः ।
आसाम्प्रजानाम्मेषां पशूनामाभेर्मा रोङ्मोचनः ॥ **वामकुक्षौ** ॥
हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्र भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवी-द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ **नाभौ** ॥
मीढुष्टम शिवतम शिवोनः सुमना भव ।
परमे वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृत्तिं
वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ॥ **कट्याम्** ॥

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तुमामाहि ꣳ सीः ।
निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥
**लिंगे** ॥

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरा महेमतीः ।
यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ **गुह्ये** ।
इषे त्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्यायध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय
भागम्प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मावस्तेन ऽईशत
माघश ꣳ सोध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौ स्यात् वह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥
**वृषणयोः** ॥

मानो महान्तमुतमानो ऽअर्भकम्मान ऽउक्षन्त मुतमान ऽउक्षितम् ।
मानो वधीः पितरम्मोत मातरम्मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥ **ऊर्वोः** ।
एषते रुद्रभागः सहस्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्व ।
स्वाहैषते रुद्रभाग ऽआखुस्ते पशुः ॥ **जान्वोः** ॥
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय नमः पूर्वजाय च
नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च । **जंघयोः** ।
नमो ह्रस्वाय च बामनाय च नमो वृहते च वर्षीयसे च ।
नमो वृद्धाय च सवृधे च नमो ऽग्र्याय च प्रथमाय च ॥ **गुल्फयोः** ॥
ये पथाम्पथि रक्षय ऽऐल वृदा ऽआयुर्युधः ।
तेषा ꣳ सहस्र योजने ऽव धन्वानि तन्मसि ॥ **पादयोः** ॥
अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातु धान्यो धराचीः परासुव ॥ **कवचे** ॥
नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः ।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमोदुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥ **अस्त्रे** ॥
विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवां २ उत ।
अनेशन्नस्य या इषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥ **धनुषि** ॥
यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिषा ऽइव ।
तन्न इन्द्रो वृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु ॥ **बाणे** ॥

विकिरिदद्रविलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्र ँ हेतयो ऽन्यस्मिन्निवपन्तु ताः ॥ खड्गे ॥
य एता वन्तश्च भूया ँ सश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।
तेषा ँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ दिग्बन्धनम् ॥
एवं न्यासविधिं विधाय शिवोऽहम् इति भावयेत् ।
एवमेव शिवलिंगे ऽपि न्यासविधिं कुर्वीत् ।
तत षोडशोपचारैः शिवार्चनं कुर्यात् ।

आवाहनम्— मानो महान्तमुतमानो ऽअर्भकम्मान ऽउक्षन्तमुतमानऽ उक्षितम् ।
मानो वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्रिया स्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥

पुष्पासनम्— या ते रुद्रशिवातनूरघोरा पापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥
पाद्यम् — यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे ।
शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहि ँ सीः पुरुषञ्जगत् ॥
अर्घ्यम् — शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमना ऽअसत् ॥
आचमनम् — अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातु धान्यो धराचीः परासुव ॥
स्नानम् असौ यस्ताम्रो ऽअरुण ऽउतवभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैन ँ रुद्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषा ँ हेडईमहे ॥
पयःस्नानम् — आप्या यस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णयम् ।
भवा व्वाजस्य सङ्गथे ॥

शुद्धस्नानम् — देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥
दधिस्नानम्— दधिक्राब्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखांकरत् प्रणऽआयु ँ षि तारिषत् ॥
शुद्धस्नानम् — देवस्य त्वा सवितुः०
घृतस्नानम् — घृतवतीभुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वीमधुदुघे सुपेशसा ।
द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते ऽअजरे भूरिरेतसा ॥

शुद्धस्नानम् देवस्यत्वा॰ असौ यस्ताम्रो ऽअरुण ऽउतबभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳहेड ईमहे

शर्करा स्नानम् — स्वादुः पवस्वदिव्यायजन्मनः स्वादुरिन्द्रायसुहवी तु न
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे वृहस्पतये मधुमांर ऽअदाभ्यः

शुद्धस्नानम्-- असौयो॰ देवस्यत्वा॰

पुनराचमनीयम् — अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च य तु धान्यों धराचीः परासुव॥

बस्त्रम् – ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म वरूथमासदत्स्वः।
वासो ऽअग्ने विश्वरूपꣳसंव्ययस्व विभावसो।

कटिवस्त्रम् — नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये ऽअस्य सत्वानो हन्तेभ्यो ऽकरन्नमः॥

यज्ञोपवीतम् — प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योंर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त ऽइषवः पराता भगवो वप॥

गन्धम् — युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य वृहतो विपश्चितः
विहोत्रा दधे वयुना विदेक इन मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा

अक्षत — अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रिया ऽअधूषत। अस्तोषतस्वभानवो
विष्ठयामती योजान्विन्द्रते हरी।

पुष्प — विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां २ ऽउत।
अनेशन्नस्य याऽइषव ऽ आभुरस्य निषङ्गधि॥

बिल्वपत्रम् — नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय

पुष्पमाला — याते हेति र्मीढुष्टमहस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥

सुगन्ध तैलं (अतरफुलेल)-अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुज्यायो हेतिं परिबाधमानः
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳसम्परिपातु विश्वतः

धूप—ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ॥

दीप — परिते धन्वनो हेतिरस्मा वृणक्तु विश्वतः ।
अथो य ऽ इषुधिस्तवारेऽऽअस्मिन्निधेहि तम् ॥

नैवेद्यम् — अवतत्यधनुष्ट्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखो नः सुमना असत् ॥

आचमनम् — अद्ध्यवो च दधिवक्ता प्रथमो देव्योभिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव ॥

मुखवासः — नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुतते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥

ताम्बूलम्— नमः र्णाय च पर्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमः ऽआखिदते प्रखिदते च नमः इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरेकेभ्यो देवानाँ हृदयेभ्यो नमो विचिन्त्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यों नम ऽआनिर्हतेभ्यः ॥

दक्षिणा — हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत् ।
स दाधार पृथिवीन्द्यामुतेमांङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ध्यानम् — शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम् ।
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम् ॥
नीलग्रीवं शशांकांकं नागयज्ञोपवीतिनम् ।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम् ॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिनम् ।
ज्वलन्तं पिंगलजटा शिखमुद्योत कारिणम् ॥
अमृतेनाप्लुतं हृष्टमुमादेहार्द्ध धारिणम् ।
दिव्यसिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम् ।
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम् ।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ॥
सर्वव्यापिनमीशानमेवं वै विश्वरूपिणम् ।
गौरी चतुर्भुजां चण्डीं त्रिनेत्रां मुकुटोज्ज्वलाम् ॥

पद्मदर्पणहस्तां च वरदाभयहस्तकाम ।
दिव्यवस्त्रपरीधानां दिव्यालङ्कारभूषिताम् ॥
प्रसन्नवदनां ध्यायेच्छिवोत्सङ्गे तु वामतः ।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत् ॥

**पुष्पोदकेनतर्पणम्**— ओं भवं देवं तर्पयामि । ओं शर्वं देवं तर्पयामि । ओं ईशानं देवं तर्पयामि । ओं पशुपतिदेवं तर्पयामि । ओं रुद्रं देवं तर्पयामि । ओं उग्रं देवं तर्पयामि । ओं भीम देवं तर्पयामि । ओं महान्तं देवं तर्पयामि । ओं देव देवं तर्पयामि । ओं ज्येष्ठाय नमः । पुनराचमनीयम् । ओं श्रेष्ठाय नमः । मधुपर्कः । मधुपर्कं गृहाणेश सर्वदा मधुपर्कपः । मधुपर्क प्रदानेन प्रीतोभव महेश्वर । ओं कालाय नमः गन्धः । ओं कलविकरणाय नमः पुष्पाणि । ओं सर्वभूतदमनायनम नमः धूपः । ओं मनोन्मनाय नमः दीपः । ओं भवोदभवाय नमः नैवेद्यम् ।

**पुष्पाञ्जलयः**— ओं भवाय देवाय नमः । ओं शर्वाय देवाय नमः । ओं ईशानाय देवाय नमः । ओं पशुपतये देवाय नमः । ओं रुद्राय देवाय नमः । ओं उग्राय देवाय नमः । ओं भीमाय देवाय नमः । ओं महते देवाय नमः । ओं देव देवायनमः । ओं भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः । ओं शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः । ओं ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः ओं पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः । ओं रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः । ओं उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः । ओं भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः । ओं महतो देवस्य पत्न्यै नमः । ओं देव देवस्य पत्न्यै नमः ।

ओं अघोरेभ्यो ऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः । ओं तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । ओं शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः । ओं उग्राय वायुमूर्तये नमः । ओं महादेवाय सोम मूर्तये नमः । ओं ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः । एवं सम्पूज्य ततः सहस्रघटैः स्नपनम् ।

## १—मङ्गलम्

सजयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ॥१॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥२॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥३॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥४॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥५॥

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम् ।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥६॥

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे ।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥७॥

अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः ।
अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणः ॥८॥

## २—श्रीविष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रम्

### अर्जुन उवाच

किं नु नाम सहस्राणि जपते च पुनः पुनः ।
यानि नामानि दिव्यानि तानि चाचक्ष्व केशव ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

मत्स्यं कूर्मं वराहं च वामनं च जनार्दनम् ।
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ॥२॥

पद्मनाभं सहस्राक्षं वनमालिं हलायुधम् ।
गोवर्धनं हृषीकेशं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम् ॥३॥

विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम् ।
दामोदरं श्रीधरं च वेदाङ्गं गरुडध्वजम् ॥४॥

अनन्तं कृष्णगोपालं जपतां नास्ति पातकम् ।
गवां कोटिप्रदानस्य अश्वमेधशतस्य च ॥५॥

कन्यादानसहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः ।
अमायां वा पौर्णमास्यामेकादश्यां तथैव च ॥६॥

सन्ध्याकाले स्मरेन्नित्यं प्रातःकाले तथैव च ।
मध्याह्ने च जपन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥७॥

## ३—श्री शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ।१।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ।२।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ।३।

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ।४।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ।५।

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।६।।

## ४—श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकारमाकाशवासं भजेऽहम् ।१।

निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं कृपालं गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ।२।

तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं मनोभूतकोटिप्रभासी शरीरम् ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा।३।

चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ।४।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशमखण्डं भजे भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयीशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ।५।

कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारिः ।
चिदानन्दसन्दोहमोहापहारी प्रसीद-प्रसीद प्रभो मन्मथारिः ।६।

न यावदुमानाथपादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्तिसन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवास ।७।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा देव तुभ्यम् ।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं प्रभो पाहि शापान्नमामीश शम्भो ।८।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।९।

## ५—देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च नजाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ।१।

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।२।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।३।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।४।।

परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।

इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ।५।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥

चिता भस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ।८।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥१२॥

## ६—भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥१॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहम् । गतिस्त्वं ॥२॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम् । गतिस्त्वं० ॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं० ॥४॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम् । गतिस्त्वं० ॥५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये । गतिस्त्वं० ॥६॥

विवादे विशादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि । गतिस्त्व ॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनःसदाजाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहम् । गतिस्त्वं० ॥८॥

## ७—श्री भगवतीस्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पापविनाशिनि बहुफलदे ।
जय शुम्भनिशुम्भकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे ।१।

जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावकभूषितवक्त्रवरे ।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे ।२।

जय महिषविमर्दिनि शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे ।
जय देवि पितामहविष्णुनते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते ।३।

जय षण्मुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनि शम्भुनुते
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धिकरे ।४।

जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिन दुःखहरे ।
जय व्याधिविनाशिनि मोक्षकरे, जय वाञ्छितदायिनि सिद्धिवरे ।५।

एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः ।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा ।६।

## ८—मङ्गलगीतम्

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए ।
कलितललितवनमाल जय जय देव हरे ।१।

दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए ।
मुनिजनमानसहंस जय जय देव हरे ।२।

कालियविषधरगञ्जन जनरञ्जन ए ।
यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे ।३।

मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए ।
सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे ।४।

अमलकमलदललोचन भवमोचन ए ।
त्रिभुवनभवननिदान जय जय देव हरे ।५।

जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए ।
समरशमितदशकण्ठ जय जय देव हरे ।६।

अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए ।
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे ।७।

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए ।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ।८।

श्रीजयदेवकवेरुदितमिदं कुरुते मुदम् ।
मङ्गलमञ्जुलगीतं जय जय देव हरे ।९।

## ९—रामाष्टकम्

कृतार्तदेववन्दनं दिनेशवंशनन्दनम् ।
सुशोभिभालचन्दनं नमामि राममीश्वरम् ।१।

मुनीन्द्रयज्ञकारकं शिलाविपत्तिहारकम् ।
महाधनुर्विदारकं नमामि राममीश्वरम् ।२।

स्वतातवाक्यकारिणं तपोवने विहारिणम् ।
करे सुचापधारिणं नमामि राममीश्वरम् ।३।

कुरङ्गमुक्तसायकं जटायुमोक्षदायकम् ।
प्रविद्धकीशनायकं नमामि राममीश्वरम् ।४।

प्लवङ्गसङ्गसम्मतिं निबद्धनिम्नगापतिम् ।
दशास्यवंशसंक्षतिं नमामि राममीश्वरम् ।५।

विहीनदेवहर्षणं कपीप्सितार्थवर्षणम् ।
स्वबन्धुशोककर्षणं नमामि राममीश्वरम् ।६।

गतारिराज्यरक्षणं प्रजाजनार्तिभक्षणम् ।
कृतास्तमोहलक्षणं नमामि राममीश्वरम् ।७।

हृताखिलाचलाभरं स्वधामनीतनागरम् ।
जगत्तमोदिवाकरं नमामि राममीश्वरम् ।८।

इदं समासितात्मना नरो रघूत्तमाष्टकम् ।
पठन्निरन्तरं भयं भवोद्भवं न विन्दते ।९।

## १०—सङ्कटनाशनगणेशस्तोत्रम्

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये ॥१॥

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३॥

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ॥५॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ।७।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ।८।

## ११—सूर्याष्टकम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ।१।
सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।२।
लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।३।
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।४।

बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च ।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।५।
बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम् ।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥६॥
तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःप्रदीपनम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥७॥
तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥८॥

## १२—चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्

कृत्वा यत्नं परधनहरणे मनो न दत्तं रघुपतिचरणे ।
प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते ।
दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः । भज० ।१।
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः ।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः । भज० ।२।
यावद्वित्तोपार्जनसक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः ।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे । भज० ।३।
जटिलो मुण्डी लुञ्चितकेशः काषायाम्बरबहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपि च न पश्यति लोको ह्युदरनिमित्तं बहुकृतशोकः । भज० ।४।
भगवद्गीता किञ्चिदधीता गङ्गाजललवकणिकापीता ।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम् । भज० ।५।
अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम् । भज० ।६।

बालस्तावत्क्रीडासक्तस्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः पारे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः । भज० ।७।

पुनरपि जननं पुनरपिमरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपयापारे पाहि मुरारे । भज० ।८।

पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः ।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुञ्चत्याशामर्षम् । भज० ।९।

वयसि गते कः काविकारः शुष्के नीरे कः कासारः ।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः । भज० ।१०।

नारीस्तनभरनाभिनिवेशं मिथ्यामायामोहावेशम् ।
एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचारय बारम्बारम् भज० ।११।

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः कामे जनन को मे तातः ।
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् भज० ।१२।

गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम् । भज० ।१३।

यावज्जीवो निबसति देहे कुशलं तावत्पृच्छति गेहे ।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये । भज० ।१४।

सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः ।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चति पापाचरणम् । भज० ।१५।

रथ्याचर्पटविरचितकन्थः पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः ।
नाहं न त्वं नायं लोकस्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः । भज० ।१६।

कुरुते गङ्गासागरगमनं व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन मुक्तिं न भजति जन्मशतेन । भज० ।१७।

## ॥ सर्वत्रोपयोगीपञ्चाङ्गम् ॥

विहारीलालशस्त्री वासिष्ठ

क (१) तिथिसाधनम्:— (अंग्रेजी तारीख से तिथिलाना)

चौपाई – ईश सुनु ग्रह भू से भगावे। शेष रुद्रगण आन हनावें।

महामारीच ताड़का ठाने। कवल तिथि सियाराम पछाने।

ईस्वी वर्ष संख्या को १९ का भाग दे शेष को ११ से गुणकर ३० का भाग देने पर शेष स्वर्णाङ्क आजाता है। उसी स्वर्णाङ्क में मार्चादि से गिनकर मास संख्या और वर्तमान मास की तारीख संख्या जोड़कर तीस से भाग देने पर शेष १५ से कम हो तो सिया ( शुक्लपक्ष ) की एवं १५ से अधिक हों तो राम ( कृष्ण पक्ष ) की तिथिएं समझना।

उदाहरण:— ३ मार्च १९९३ ई० के दिन कौन सी तिथि आयेगी ? ई० वर्ष संख्या १९९३ को १९ से भाग दिया तो शेष १७ को ११ से गुणदिया गुणनफल १८७ हुआ। इसे ३० से भाग देने पर शेष ७ सुवर्णाङ्क हुआ। इसी सात में मार्च की संख्या १ और वर्तमान तारीख की संख्या ३ जोड़ी ७+१+३ तो योग फल ११ हुआ एकादशी हुई ११ यही संकल्पादि में ग्रहण की जा सकती है।

ख (१) तारीख साधनम्:— ( तिथि से अंग्रेजी तारीखलाना )

चौपाई– ईश सुनु ग्रह भू से भगावे। शेष रुद्रगण आन हनावे।

संग मारीच तिथिद्वार घटावे। सियाराम जी ताड़का पावे॥

उसी सिद्ध स्वर्णाङ्क में मार्चादि मास संख्या मिला कर तिथि संख्या में घटावे न घटे तो तिथि संख्या में ३० और मिला लेवे फिर मास संख्या युक्त स्वर्णाङ्क को घटावे तो तारीख आजायेगी।

उदाहरण: जैसे गत उदाहरण में ७ स्वर्णाङ्क में मार्चादि मास संख्या १ जोड़ी तो ८ हुए। एकादशी तिथि संख्या ११ से ८ को घटाया तो ११−८=३ यही मार्च की अंग्रेजी तारीख है।

(२) वारसाधनम् :— (अंग्रेजी ईस्वी दिनाङ्क से बार ज्ञान)

कवित्तः— अतीत ईस सम्न लेई, चार सौं सो भाग देई,
लब्ध अब्द त्याग देई, शेष भागे सौं से ।
तीन गुणा लब्ध लीनी, शेषयुक्त पंक्ति चीन्ही,
शेष पुन आन लीनी, भाग देवे चौं से ।
लब्ध अब्द प्लुत जानी, पंक्तिमाहीं आनठानी,
वरसदिन वर्तमानी, पंक्ति माहीं ज्यों दे ।
सात का ही भाग दीना, रवि आदि वार लीना,
लब्ध उस का त्याग दीना, वार जानी शौं से ।
विहारीलाल वासिष्ठकृत

गत ईस्वी वर्ष संख्या को ४०० से भाग देकर लब्ध अप्लुत शताब्दी त्याग दे। शेष को १०० से भागदेकर लब्ध संख्या को ३ संख्या से गुणकर पंक्तिकी प्रथम संख्या हुई। फिर शेष को द्वितीय संख्या मान कर पंक्ति में रखे। फिर उसी शेष को ४ से भाग देकर लब्ध प्लुत वर्षों को तृतीय संख्या मानकर पंक्ति में रखें। वर्तमान ई० वर्षारम्भ जनवरी की पहिली तारीख से वर्तमान तारीख पर्यन्त दिनगण को चतुर्थ संख्या मान्कर पंक्ति में स्थापितकर पंक्ति की चारों संख्याओं को जोड़कर योगफल को ७ का भाग दें शेषतुल्य रवि आदि से गिनकर वार आजाएगा।

उदाहरणः — ३ मार्च १९९३ ई० को वार ज्ञानार्थ गत वर्ष संख्या १९९२ को ४०० का भाग दिया लब्ध ४ शताब्दियें अप्लुत (लीप रहित) त्याग दी। एवं शेष ३९२ को पुनः १०० से भाग देकर लब्ध ३ को ३ से गुणकर गुणनफल ९ पंक्ति की प्रथम संख्या हुई शेष ९२ को द्वितीय संख्या मानकर पंक्ति में रखा। पुनः उसी शेष ९२ को ४ से भाग देकर लब्धि २३ संख्या को प्लुत वर्ष मान कर तृतीय संख्या के रूप में पंक्ति में रखा। फिर १९९३ के बर्षारम्भ पहिली जनवरी से ३ मार्च तक ६२ दिन को चतुर्थ संख्या मानकर पंक्ति में रखा फिर पंक्तिगत चारों संख्याओं के योग का ९+९२+२३+६२=१८६ योगफल हुआ। इसी १८६ योगफल को ७ का भाग देकर लब्ध त्याग कर शेष ४ तुल्य रवि आदि से गिन कर चतुर्थ बुधवार आया।

## वर्तमान दिन की चन्द्रराशि लाना ।

चौपाई - कृष्णे पैंती शुक्ले पंज । तिथ कर दुगनी तिन के संग।

पञ्ज पञ्ज का भाग धरीजे । गिन संक्रान्ति चन्द्रमा लीजे ।

कृष्ण पक्ष में ध्रुवा ३५ और शुक्लपक्ष में ध्रुवक ५ रख लेना । वर्तमान तिथि को दूना करके उसमें अपने पक्षका ध्रुवा जोड़कर योगफल को ५ का भाग दें जितनी संख्या लब्ध आवे वैशाखादिमासों में मेषादि संक्रान्ति से लब्ध संख्या तुल्य गिनने पर चन्द्रराशि आजायेगी ।

उदाहरण :— ३ मार्च १९९३ ई० फाल्गुन शुक्ल दशमी को चन्द्रराशि लानी है। शुक्र पक्ष होने से ध्रुवांक ५ में दशमी १० तिथि को दूना किया तो १०×२=२० संख्या ५ ध्रुवे में जोड़ दी तो २०+५=२५ योगफल आया इसे पांचसे भाग दिया २५÷५=५ तो लब्धि ५ आई फाल्गुन में सूर्य कुंभ संक्रान्ति में होता है अतः कुंभ राशि से ५ लब्धि तुल्य संख्या तक गिना तो मिथुन राशि में चन्द्र आया । ठीक चन्द्रमा मियुन में था ।

### नक्षत्रज्ञान प्रकार

मास दामोदर दुगनकर तिथि युक्त करलेय ।
कृष्णपक्ष में अश्विनी शुक्ले स्वाती गणेय ।
दामोदर=कार्तिकसे गिनकर

### योगज्ञान

सौरनक्षत्र श्रवण सों लीजे । चन्द्र नक्षत्र पुष्यसे लीजे ।
दोनों तार एक करि जाने । विष्कम्भ से योग पछाने ॥

### करणज्ञान

तिथिं च द्विगुणीकृत्य एकहीनं च कारयेत् ।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥

# अथ परदेवीसूक्तम्

## ( सहस्राक्षरी दुर्गापाठः )

ॐ श्रीः । ओमस्य श्रीपरदेवीसूक्तमालामन्त्रस्य मार्कण्डेयमेधसावृषी गायत्र्यादिनानाविधानि छन्दांसि त्रिशक्तिरूपिणी चण्डिका देवता ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं ममचिन्तितमनोरथसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । मार्कण्डेयमेधसोऋषीभ्यां नमः शिरसि । गायत्र्यादिनानाविधच्छन्दोभ्यो नमो मुखे । त्रिशक्तिरूपिणी चण्डिका देवतायै नमो हृदि । ऐं बीजाय नमो गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमो नाभौ । मम-चिन्तितमनोरथसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः सर्वांगेषु । अथ करन्यासः । ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । क्लीं मध्यमाभ्यां नमः । ऐं अनामिकाभ्यां नमः । ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । क्लीं करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासं कृत्वा ऐं ह्रीं क्लीं इति दिग्बन्धः । अथ ध्यानम् ।

योगाढ्यामरकार्यनिर्जितमहत्तेजः समुत्तंसिनी
भास्वत्पूर्णशशांकचारुवदना नीलोल्लसद्भ्रूलता
गौरोत्तुङ्गकुचद्वया तदुपरि स्फूर्जत्प्रभामण्डला
बन्धूकारुणकायकान्तिरवताच्छ्रीचण्डिका सर्वतः ।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य परदेवीसूक्तं जपेत् ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौं ह्रूं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं स्त्रौं जय जय महालक्ष्मि जगदाद्यबीजे सुरासुरत्रिभुवन निदाने सर्ववरदाने दयांकुरे सर्वदेवतेजोरूपिणि महामहामहिमे महामहामाया-स्वरूपिणि विरंचिसंस्तुते विधिवरदे चिदानन्दे विष्णुदेहावृते महामोहमोहिनि ।१००। मधुकैटभदैत्यजिघांसिनि नित्यवरदानतत्परे महासुधाब्धिवासिनि महामहातेजोधारिणिसर्वाधारे सर्वकारणकारणे अचिन्त्यरूपे इन्द्रादिनिखिल निर्जरसेविते सामगानगायिनि पूर्णोदयकारिणि विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्दरि रक्तांशुके ।२००। सूर्यकोटिसंकाशे चन्द्रकोटिसुशीतले अग्निकोटि-दहनशीले यमकोटिक्रूरे वायुकोटिवहनशीले ओंकारनादबिन्दुरूपिणि निगमागम

र्वदायिनि महिषासुरनिर्दलिनि महाघोराट्टहासे धूम्रलोचनवधपरायणे चण्ड-मुण्डशिरश्छेदिनि रक्तबीजादि रुधिरशोषिणि ।३००। रक्तपानप्रिये महायोगिनि सर्वंतालभैरवादितुष्टिविधायिनि शुम्भनिशुम्भशिरश्छेदिनि निखिलासुरखादिनि त्रिदशराजदायिनि सर्वस्त्रीरत्नरूपिणि दिव्यदेहे निर्गुणे सगुणे सदसद्रूपधा-रिणि स्कन्दवरदे भक्तत्राणतत्परे वरे वरदे ।४००। सहस्राक्षरे अयुताक्षरे सप्तकोटिचामुण्डारूपिणि नवकोटिकात्यायिनि रूपे अनेकशक्त्यालक्ष्यालक्ष्य-स्वरूपे इन्द्राणि ब्रह्माणि रुद्राणि कौमारि वैष्णवि वाराहि शिवदूति ईशानि भीमे भ्रामरि नारसिंहिके त्रयस्त्रिंशत्कोटिदैवते अनन्तकोटिब्रह्माण्ड-नायिके चतुरशीति ५०० लक्षमुनिसंस्तुते सप्तकोटिमहामन्त्रस्वरूपे महाकाल रात्रिप्रकाशे कलाकाष्ठादिरूपिणि चतुर्दशभुवनआविर्भावकारिणि गरुडगामिनि क्रौं कार ह्रौं कार ह्रीं कार श्रीं कार स्त्रौं कार जूं कार सौं कार ऐं कार क्लीं कार ह्रीं कार ह्रौंकार नामबीज कूटनिर्मितशरीरे ६०० सकलसुन्दरीगणसेवित-चरणारविन्दे श्री महात्रिपुरसुन्दरि कामेशदयिते करुणारस कल्लोलिनि कल्पवृक्षाधःस्थिते मणिद्वीपावस्थित चिन्तामणि मन्दिरनिवासे चापिनि खड्गिनि चक्रिणि शूलिनि गदिनि शंखिनि पद्मिनि निखिलभैरवाराधिते समस्तयोग ७०० चक्रपरिवृते कालि कंकाले तारे तोतले सुताले ज्वालामुखि छिन्नमस्तके भुवनेश्वरि त्रिपुरे त्रिलोकजननि विष्णुवक्षःस्थलालंकारिणि अजिते अमिते अमराधिपे अनुपमचरिते गर्भवासादिदुःखापहारिणि मुक्तिक्षेत्रा-धिष्ठायिनि शिवे शान्ते कुमारीरूपे देवी ८०० सूक्तसंस्तुते दशशताक्षरे चण्डि चामुण्डे महाकालि महालक्ष्मि महासरस्वति त्रयीविग्रहे प्रसीद-प्रसीद मम सर्व-मनोरथान्पूरय पूरय सर्वारिष्टविघ्नान् छेदय-छेदय सर्वग्रहपीडां नाशय-नाशय ज्वररोगभयं विध्वंसय-विध्वंसय त्रिभुवनजीवजातं९००वश मानय-मानय मोक्षमार्गं दर्शय-दर्शय प्रकाशय-प्रकाशय अज्ञान तमोनिरसय निरसय धनधान्यादिवृद्धि कुरु-कुरु सर्वकल्याणानि कल्पय-कल्पय मांरक्ष-मांरक्ष सर्वा-पद्भ्योमाँ निस्तारय-निस्तारय सपरिवारं मां रक्ष मां रक्ष ममवज्रशरीरं१००० साधय-साधय ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा नमस्ते नमस्ते स्वाहा ॥

परं देव्या इदं स्तोत्रं यः पठेत्प्रयतो-नरः ।
सर्व सिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत् ।१।

संग्रामेषु जयेच्छत्रून् मातंगानिव केसरी ।
वशयेन्निखिलां ल्लोकान् विशेषेण महीपतीन् ।२।

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं देव्याः सूक्तमिदं परम् ।
तस्य विघ्नाःप्रलीयन्ते ग्रहपीड़ाश्च दारुणाः ।३।

ज्वरादिरोगशमनं परकृत्य निवारणम् ।
पराभिचार शमनं तीव्रदारिद्रयवारणम् ।४।

सर्वकल्याणनिलयं देव्याःसंतोषकारकम् ।
सहस्त्रावृत्तितो देवी मनोरथसमृद्धिदम् ।५।

द्विसहस्त्रावृत्तिजपात् सर्वसंकटनाशनम् ।
त्रिसहस्त्रावृत्तितस्तु वशयेद्राजयोषिताम् ।६।

शतत्रयं पठेद्यस्तु वर्षत्रयमतन्द्रितः ।
स पश्येच्चंडिकां साक्षाद्वरदानकृतोद्यमाम् ।७।

इदं रहस्यं परमं गोपनीयं प्रयत्नतः ।
न वाच्यं कस्यचिद्देवी निधानमिव सुन्दरी ।८।

इति डामरेश्वर तन्त्रे परं देवीसूक्त कथनम् ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।

## ॥ वैष्णवदेवी कवचम् ॥

### ॐ नवदुर्गायै वैष्णव्यै नमः ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमंलोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहिपितामह ।१।

ब्रह्मोवाच

वैष्णवी शैलपुत्री च वैष्णवी ब्रह्मचारिणी ।
वैष्णवी चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति वैष्णवी ।२।

वैष्णवी स्कन्दमातेति कात्यायन्यपि वैष्णवी ।
वैष्णवी कालरात्रीति महागौरीति वैष्णवी ।३।
वैष्णवी सिद्धदात्रीति नवदुर्गा हि वैष्णवी ।
इति प्रणव नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ।४।
अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गता ।५।
न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसंकटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःख भयं न हि ।
यैः स्मृता वैष्णवी भक्त्या तेषांवृद्धिश्च सात्विकी ॥
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥

वैष्णवार्गलस्तोत्रम्

ॐ या देवी स्तूयते नित्यं विबुधैर्वेदपारगैः ॥
सा मे भवतु जिह्वाग्रे ब्रह्मरूपा सरस्वती ॥

वैष्णवकीलकस्तोत्रम्

ॐ विशुद्ध ज्ञानदेहाय त्रिवेदी दिव्यचक्षुषे ।
श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे ॥

अथ नवार्णजपविधिः

अस्य नर्वाणमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरात्मकाः सुमेधामार्कण्डेय गौतमा-त्रिवशिष्ठव्यासाऋषयः प्रतिष्ठासुप्रतिष्ठागायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्ति-त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि प्रणवनागाग्निवाय्वाऽऽदित्य बृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वे-देवा देवताः ऐन्द्री कौमारी ब्राह्मीवाराही चामुण्डा वैष्णवी माहेश्वरी वैनायकी दुर्गाः शक्तयः अखिलमनोरथ सिद्ध्यर्थं जपे पाठे च विनियोगः ।

अत्र वृहस्पतिरेव सोम स्थाने प्रयुक्तः । सोमकुबेरबृहस्पतयोऽभिन्नाः ।

॥ अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥

ॐ ऐं हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लीं शिखायै वषट् । ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्

या दुर्गा मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मर्दिनी ।
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डदलिनी या रक्तबीजाशिनी ॥
या श्रीः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या ब्रह्मविद्याप्रदा ।
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥

नवार्ण जपमन्त्रः

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"

१०८ मालाद्वारा जप करे ॥

ॐ जगदम्बार्पणमस्तु ॥

ॐ

॥ अथ श्रीहनुमत्स्तोत्रम् ॥

श्रीराम उवाच

हनुमान् अंजनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः ।
रामेष्टः फाल्गुनसखः पिंगाक्षोऽमितविक्रमः ।१।

उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः ।
लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा ।२।

द्वादशैतानि नामानि कपीन्द्रस्य महाप्रभोः ।
सायंकाले जपेन्नित्यं यात्राकाले विशेषतः ।३।

भयानि तस्य नश्यन्ति सत्यं-सत्यं वदाम्यहम् ।
बुद्धिर्बलं तथा धैर्यं निर्भयत्वमरोगता ।४।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत्स्मरणादपि ।
मनोजवं मारुत तुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ।५।
अंजनीनन्दनं वीरं सीताशोकविनाशनम् ।
कपीन्द्रम् अक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयङ्करम् ।६।
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामाला रत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ।७।

इति श्रीहनुमत्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

## कुशण्डिका

पूजन के उपरांत कुशण्डिका करके अग्नि स्थापन करे । अग्नि से दक्षिण दिशा में ब्रह्मा को पूर्व दक्षिण क्रम से कुशासन पर उत्तर मुख करके बैठावे । फिर प्रणीता पात्र में जल भरकर कुशा से ढक कर ब्रह्मा का मुख दिखावे और अग्नि से उत्तर की तरफ कुशा के ऊपर धरे। फिर कुशकण्डिका के अनुसार कुशा विछावें । एक प्रोक्षणी पात्र धरें । घी का कटोरा धरें । मार्जन के लिए तीन कुशा गूंदकर उत्तर से पश्चिम की तरफ धरें । अंगूठे से तर्जनी के बराबर तीन लकड़ी धरें । फिर चावल से भरा हुआ पूर्णपात्र रखे। अनन्तर उसी दिशा में और वस्तु स्थापन करें । पवित्र छेदन कुशाओं से पवित्री की कुशा को प्रादेश मात्र छेदन करे । फिर ब्राह्मण पवित्री की कुशाओं सहित प्रणीता का जल हाथ से तीन बार प्रोक्षणी पात्रमें डाले । अनामिका और अंगूठे के अग्र भाग में पवित्रे की कुशाको पकड़ कर प्रोक्षणी पात्र में से तीन बार ऊपर को छींटा दे । फिर प्रणीता के जलसे प्रोक्षणी पात्र में तीन बार उसी कुशा से छींटा दे और प्रोक्षणी पात्र के जल का सब जगह छींटा लगावे । अग्नि और प्रणीता के मध्यमें प्रोक्षणी पात्र रखे । फिर घी का बर्तन अग्नि पर रखकर गरम करले । फिर स्रुवे को अग्नि से तपा ले और संमार्जन कुशाओं

को लेकर स्रुवे के आरम्भ में सिरे की कुशा लगावे। तीन लकड़ी घी में भिगो कर अग्नि में डाले।

ब्रह्मा से लेकर घुटने तक मौली रखे। फिर स्रुवे से नीचे लिखी आहुतियां घी की डाले। और आहुति से बचा हुआ घी प्रोक्षणी पात्र में भी डालता जाए।

**होमारम्भः**

ओं प्रजापतये स्वाहा। ओं इन्द्राय स्वाहा। ओं अग्नये स्वाहा। ओं सोमाय स्वाहा। ओं भूः स्वाहा। इदमग्नये। ओं भुवः स्वाहा। इदंवायवे। ओं स्वः स्वाहा। इदंसूर्याय। ओं भूर्भुवः स्वः इदंप्रजापतये नमम:।

ओं श्रीगणेशाय स्वाहा। ओं लक्ष्मीनारायणाभ्यां स्वाहा। ओं उमा-महेश्वराभ्यां स्वाहा। ओं वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां स्वाहा। ओं मातृभ्यः स्वाहा। ओं पञ्चोंकारेभ्यः स्वाहा। ओं नवग्रहेभ्यः स्वाहा। ओं अधिदेवेभ्यः स्वाहा। ओं प्रत्यधिदेवेभ्यः स्वाहा। ओं लोकपालेभ्यः स्वाहा। ओं वास्तुक्षेत्रपाल-योगिनीभ्यः स्वाहा। ओं प्रधानेष्टदेवाय स्वाहा। सूर्यार्घ्यः— ओं ह्रंस।

# आरती क्या है और कैसे करनी चाहिए?

आरती को 'आरात्रिक' अथवा 'आरार्तिक' और 'नीराजन' भी कहते हैं। पूजाके अन्तमें आरती की जाती है। पूजनमें जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है—

**मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।**
**सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥**

'पूजन मन्त्रहीनं और क्रियाहीन होनेपर भी नीराजन (आरती) कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।'

आरती करने का ही नहीं, आरती देखने का भी बड़ा पुण्य लिखा है। हरिभक्तिविलास में एक श्लोक है—

**नीराजनं च यः पश्येद् देवदेवस्य चक्रिणः।**
**सप्तजन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम्॥**

'जो देवदेव चक्रधारी श्रीविष्णुभगवान् की आरती (सदा) देखता है, वह सात जन्मोंतक ब्राह्मण होकर अन्तमें परमपदको प्राप्त होता है।,
विष्णुधर्मोत्तरमें आया है--

**धूपं चारात्रिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवन्दते ।**
**कुलकोटिं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम् ॥**

'जो धूप और आरती को देखता है और दोनों हाथोंसे आरती लेता है, वह करोड़ पीढ़ियों का उद्धार करता है और भगवान् विष्णुके परम-पदको प्राप्त होता है।'

आरती में पहले मूलमन्त्र (जिस देवता का जिस मन्त्र से पूजन किया गया हो, उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पाञ्जलि देनी चाहिये और ढोल, नगारे, शङ्ख, घड़ियाल आदि महावाद्योंके तथा जय जय कारके शब्दके साथ शुभ पात्रमें घृतसे या कपूरसे विषम संख्याकी अनेक बत्तियां जलाकर आरती करनी चाहिये ।

**ततश्च मूलमन्त्रेण दत्वा पुष्पाञ्जलित्रयम् ।**
**महानीराजनं कुर्याद् महावाद्यजयस्वनैः ॥**
**प्रज्वालयेत् तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा ।**
**आरात्रिकं शुभे पात्रे विषमानेकवर्तिकम् ॥**

साधारणतः पांच बत्तियों से आरती की जाती है। इसे 'पञ्चप्रदीप' भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियों से आरती की जाती है। कपूर से भी आरती होती है। पद्मपुराण में आया है—

**कुङ्कुमागुरुकर्पूरघृतचन्दननिर्मिताः ।**
**वर्तिकाः सप्त वा पञ्च कृत्वा वा दीपवर्त्तिकाम् ॥**
**कुर्यात् सप्तप्रदीपेन शङ्खघण्टादिवाद्यकैः ।**

'कुङ्कुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दनकी सात या पांच बत्तियां बनाकर अथवा दियेकी (रूई और घीकी) बत्तियां बनाकर सात बत्तियों

शङ्ख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिये ।

आरतीके पांच अङ्ग होते हैं —

> **पञ्च नीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीपमालाया ।**
> **द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा ॥**
> **चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम् ।**
> **पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधि ॥**

'प्रथम दीपमालाके द्वारा, दूसरे जलयुक्त शङ्ख, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदिके पत्तोंसे और पांचवें साष्टाङ्ग दण्डवत् से आरती करे' ।

'आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान्की प्रतिमाके चरणोंमें उसे चार बार घुमाये, दो बार नाभिदेशमें, एक बार मुखमण्डलपर और सात बार समस्त अङ्गोंपर घुमाये, । —

> **आदौ चतुः पादतले च विष्णोर्द्वौ नाभिदेशे मुखबिम्ब एकम् ।**
> **सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारानारात्रिकं भक्तजनस्तु कुर्यात् ॥**

यथार्थमें आरती पूजनके अन्तमें इष्टदेवताकी प्रसन्नताके हेतु की जाती है । इसमें इष्टदेवको दीपक दिखानेके साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है । आरतीके दो भाव हैं जो क्रमशः 'नीराजन' और 'आरती' शब्दसे व्यक्त हुए हैं । नीराजन ( निःशेषेण राजनम प्रकाशनम् ) का अर्थ है — विशेषरूपसे, निःशेषरूपसे प्रकाशित करना । अनेक दीप-बत्तियां जलाकर विग्रहके चारों ओर घुमानेका अभिप्राय यही है कि पूरा-का-पूरा विग्रह एड़ीसे चोटीतक प्रकाशित हो उठे — चमक उठे, अङ्ग-प्रत्यङ्ग स्पष्टरूपसे उद्भासित हो जाए, जिसमें दर्शक या उपासक भली-भांति देवताकी रूप-छटाको निहार सके, हृदयगम कर सके । दूसरा 'आरती' शब्द ( जो संस्कृतके आर्तिका प्राकृत रूप है और जिसका अर्थ है— अरिष्ट ) विशेषतः माधुर्य-उपासनासे सम्बन्धित है । 'आरती वारना'

का अर्थ है — आर्ति - निवारण, अनिष्टसे अपने प्रियतम प्रभुको बचाना। इस रूपमें यह एक तान्त्रिक क्रिया है, जिससे प्रज्वलित दीपक अपने इष्ट-देवके चारों ओर घुमाकर उनकी सारी विघ्न - बाधा टाली जाती है। आरती लेनेसे भी यही तात्पर्य है— उनकी 'आरती' (कष्ट) को अपने ऊपर लेना। बलैया लेना, बलिहारी जाना, बलि जाना, वारी जाना, न्योछावर होना आदि सभी प्रयोग इसी भावके द्योतक हैं। इसी रूप में छोटे बच्चोंकी माताएं तथा बहिनें लोकमें भी आरती ( या आरत ) उतारती हैं। यह **'आरती'** मूलरूपमें कुछ मन्त्रोच्चारणके साथ केवल कष्ट - निवारणके भावसे उतारी जाती रही होगी। आजकल वैदिक उपासनामें उसके साथ - साथ वैदिक मन्त्रोंका उच्चारण होता है तथा पौराणिक एवं तान्त्रिक उपासनामें उसके साथ सुन्दर - सुन्दर भावपूर्ण पद्य - रचनाएं गायी जाती हैं। ऋतु, पर्व, पूजाके समय आदि वेदोंसे भी आरती की जाती है।

## वैदिक आरती

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्॥
(यजुर्वेद ७ । १९)

ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठ स आ त्वेषं वर्तते तमः॥
(यजुर्वेध ३४ । ३२)

ॐ इदꣳहविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥
(यजुर्वेद १९ । ४८)

## आरती भगवान् श्रीसत्यनारायणजी की

जय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन-पातक-हरणा। जय०। टेक

रत्नजटित सिंहासन अद्भुत छबि राजे ।

नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजे । जय० ।

प्रकट भये कलि कारण, द्विजको दरस दियो ।

बूढ़े ब्राह्मण बनकर कञ्चन-महल कियो । जय० ।

दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी ।

चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी बिपति हरी । जय० ।

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं ।

सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर अस्तुति कीन्हीं । जय० ।

भाव-भक्तिके कारण छिन-छिन रूप धरयो ।

श्रद्धा धारण कीनी, तिनके काज सरयो । जय० ।

ग्वाल-बाल संग राजा वन में भक्ति करी ।

मनवाञ्छित फल दीन्हों दीनदयालु हरी । जय० ।

चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल, मेवा ।

धूप-दीप-तुलसी से राजी सत्यदेवा । जय० ।

( सत्य ) नारायणजी की आरति जो कोइ नर गावै ।

तन-मन-सुख-सम्पति मन-वाञ्छित फल पावै । जय० ।

## स्तुति भगवान् श्रीरामचन्द्र जी की

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम् ।
नवकंजलोचन, कज मुख कर-कंज पद-कंजारुणम् ॥१॥
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद-सुन्दरम् ।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुता-वरम् ॥२॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द दशरथ-नन्दनम् ॥३॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-खर-दूषणम् ॥४॥

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-भंजनम् ॥५॥

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर सांवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥६॥
एहि भांति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियं हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥७॥
सो०—जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥

## ॥ आरती श्री रघुवर जी की ॥

आरती रघुवर लाला की। सांवरिया नैन विशाला की। टेक
कमल कर धनुषबाण धारे, छवि लख कोटि काम हारे,
सलोने नयना रतनारे, अलक की वलन, पलक की चलन,
पीतपट हलन, लटक सुन्दर वनमाला की। टेक

संग सिय शोभा की खानी, विराजे जगत् जननी रानी,
प्रेम रस भक्ति की सानी, भरत से वीर, लखन रणधीर,
प्रजा के वीर शत्रुघन रूपरसाला की। टेक

सदा तुम दीनन हितकारी, अधम केवट शवरी तारी,
गीध की कर्मगति न्यारी, सुरन के ईश, कोशलाधीश,
रक्ष जगदीश शुभहृदय सुखपाला की। टेक

चरण चापत अंजनि के लाला, प्रेम रस बांटत दीन दयाल,
बरस रही पुष्पों की जयमाल, भक्त भय हरण, सदा सुख करण,
हरिले शरण, जानकी नाथ कृपाला की टेक
संवरिया नैन विशाला की, आरती रघुवर लाला की।

## आरती भगवान् कुंजबिहारी जी की

आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी॥ (टेक)
गले में बैजतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवनमें कुण्डल झलकाला, नन्दके आनन्द नन्दलाला॥ श्रीगिरधर०॥

गगन सम अंग, कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लसनमें ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चन्द्र-सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ।।
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनको तरसैं,
गगन सों सुमन रासि वरसैं,

बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोपकुमारी की। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ।।
जहां ते प्रगट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,

बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ।।
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दाबन वेनू,
चहूं दिसि गोपि ग्वाल धेनू,

हंसत मृदु मंद, चांदनी चंद, कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन दुखारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ।।
आरती कुंजबिहारीकी। श्रीगिरधर कृष्णमुरारीकी ।।

## श्रीराम - वन्दना

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य
राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश ।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र
दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि ।।

## आरती श्रीअम्बा जी की

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ।१। जय अम्बे०
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको ।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ।२। जय अम्बे०

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्त - पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै ।३। जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खडग खप्पर धारी ।
सुर - नर - मुनि - जन सेवत, तिनके दुखहारी ।४। जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चद्र दिवाकर सम राजत ज्योति ।५। जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर - घाती ।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ।६। जय अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।७। जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी ।
आगम - निगम - बखानी, तुम शिव पटरानी ।८। जय अम्मे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूं ।
बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू ।९। जय अम्बे०
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तनकी दुःख हरता सुख सम्पति करता ।१०। जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर - मुद्रा धारी ।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर - नारी ।११। जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती ।
(श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ।१२। जय अम्बे०
(श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति फल पावै ।१३। जय अम्बे०

## श्री जगदम्बा-वन्दना

अम्बा हास्यविलासिनी भगवती, बैठी हुई सामने,
देवैर्रचितपादपद्मयुगला, वीणा लिये हाथ में ।
धूपैः साधु सुधूपिताखिलतनु, गाती हुई ताल में,
देवानुक्तवती प्रसन्नवदना, मांगो जु है चाह में ।।

# आरती भगवान् जगदीश्वरजी की

ओं जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे ।।
भक्तजनोंके संकट छिनमें दूर करे । ओं।
जो ध्यावै फल पावै, दुख विनसै मनका । प्रभ०।
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका । ओं।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी । प्रभु०।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी । ओं।
तुम पूरन परमातम, तुम अन्तर्यामी । प्रभु०।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी । ओं।
तुम करुणाके सागर तुम पालन-कर्ता । प्रभ०।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता । ओं।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती । प्रभु०।
किस विधि मिलू दयामय ! तमको मैं कुमती । ओं।
दीनबन्धु दुखहर्ता तम ठाकुर मेरे । प्रभु०।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे । ओं।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा । प्रभ०।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतनकी सेवा । ओं।

# कमल नेत्र स्तोत्र

श्री कमल नेत्र कटि पीताम्बर, अधर मुरली गिरधरम् ।
मुकुट कुण्डल कर लकुटिया, सांवरे राधेवरम् ।१।
कूल यमुना धेनु आगे, सकल गोपियन मन हरम् ।
पीत वस्त्र गरुड़ वाहन, चरण सुख नित सागरम् ।२
करत केल कलोल निश दिन, कुंज भवन उजागरम् ।
अजर अमर अडोल निश्चल, पुरुषोत्तम अपरा परम् ।३।
दीनानाथ दयाल गिरिधर, कंस हिरणाकश हरम् ।

गल फूल माल विशाल लोचन, अधिक सुन्दर केशवम् ४।
बंशीधर वसुदेव छइया, बलि छल्यो श्री वामनम्।
जल डूबते गज राख लीनों, लंक छेद्यो रावनम् ।५।
सप्त दीप नवखण्ड चौदह, भुवन कीनों एक पदम् ।
द्रोपदी की लाज राखी, कहां लौ उपमा करम् ।६।
दीनानाथ दयाल पूरण, करुणा मय करुणा करम ।
कविदत्तदास विलास निशदिन, नाम जप नित नागरम् ।७।
प्रथम गुरु जी के चरण बन्दौं, यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ।
आदि विष्णु जुगादि ब्रह्मा, सेविते शिव शंकरम् ८।
श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव, कृष्ण यदुपति केशवम् ।
श्रीराम रघुवर, राम रघुवर, राम रघुवर राघवम् ।९।
श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव, वासुदेव श्री वामनम् ।
मच्छ - कच्छ वाराह नरसिंह, पाहि रघुपति पावनम् ।१०।
मथुरा में केशवराय विराजे, गोकुल बाल मुकुन्द जी ।
श्री वृन्दावन में मदन मोहन, गोपीनाथ गोविन्द जी ।११।
धन्य मथुरा धन्य गोकुल, जहाँ श्री पति अवतरे ।
धन्य यमुना नीर निर्मल, ग्वाल बाल सखावरे ।१२।
नवनीत नागर करत निरन्तर, शिव विरंचि मन मोहितम् ।
कालिन्दी तट करत क्रीड़ा, बाल अद्‌भुत सुन्दरम् ।१३।
ग्वाल बाल सब सखा विराजे, संग राधे भामिनी ।
बंशी वट तट निकट यमुना, मुरली की टेर सुहावनी ।१४

भज राघवेश रघुवंश उत्तम, परम राजकुमार जो ।
सीता के पति भक्तन के गति, जगत प्राण आधार जो ।१५।
जनक राजा पनक राखी, धनुष बाण चढ़ावहीं ।
सती सीता नाम जाके, श्री रामचन्द्र प्रणामहीं ।१६।
जन्म मथुरा खेल गोकुल, नन्द के हृदि नन्दनम् ।
बाल लीला पतित पावन, देवकी वसुदेववकम् ।१७।
श्रीकृष्ण कलिमल हरण जाके, जो भजे हरिचरण को ।
भक्ति अपनी देव माधव, भवसागर के तरण को ।१८।
जगन्नाथ जगदीश स्वामी, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।
द्वारिका के नाथ श्री पति, केशवं प्रणमाम्यहम् ।१९।
श्रीकृष्ण अष्टपदपढ़तनिशदिन, विष्णु लोक सगच्छतम् ।
श्रीगुरु रामानन्द अवतार स्वामी, कविदत्त दास समाप्तम् ।२०।

सो० प्रनवउं पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥

## श्रीहनुमत्-स्तवन

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥

अञ्जनीनन्दनं वीरं जाकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं ।
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ॥
आदाय तेनैव ददाह लङ्का ।
नमामि तं प्रञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेग जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम ॥

यत्र-यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र-तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं ममत राक्षसान्तकम् ॥

## श्रीराम - वन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

## श्री भगवन्नाम

पापानलस्य दीप्तस्य मा कुर्वन्तु भयं नराः ।
गोविन्दनाममेघौघैर्नश्यते नीरबिन्दुभिः ॥

( गरुड़पुराण )

'हे मनुष्यो ! प्रदीप्त पापाग्नि को देखकर भय न करो। गोविन्दनामरूप मेघों के जलविन्दुओं से इसका नाश हो जायेगा।'

पापोंसे छटकर परमात्माके परमपद को प्राप्त करने के लिये शास्त्रों में अनेक उपाय बतलाये गये हैं। दयामय महर्षियों ने दुःखकातर जीवों के कल्याणार्थ वेदों के आधार पर अनेक प्रकार की ऐसी विधियां बतलायी हैं, जिनका यथाधिकार आचरण करने से जीव पापमुक्त होकर सदाके लिये निरतिशयानन्द परमात्मसुख को प्राप्त कर सकता है। परन्तु इस समय कलियुग है। जीवन की अवधि बहुत थोडी है। मनुष्यों की आयु प्रतिदिन घट रही है। आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक तापों की वृद्धि हो रही है। भोगों की प्रबल लालसा ने प्रायः सभी को विवश और उन्मत्त बना रक्खा है। कामनाओं के अशेष कलङ्कसे बुद्धिपर कालिमा छा गयी है।

हमारी इस दुर्दशा को महापुरुषों ने और भगवद्भक्तों ने पहले ही जान लिया था, इसी से उन्होंने दयापरवश हो हमारे लिये एक ऐसा उपाय बतलाया, जो इच्छा करने पर सहज ही में काम में लाया जा सकता है। परन्तु जिसका वह महान फल होता है; जो पूर्वकाल में बड़े-बड़े यज्ञ, तप और दान से भी नहीं होता था, वह है श्रीहरिनाम का जप, कीर्तन और स्मरण। वेदान्तदर्शन के निर्माता भगवान व्यासदेवरचित भागवत में ज्ञानिश्रेष्ठ शुकदेव जी महाराज शीघ्र ही मृत्यु को आलिङ्गन करने के लिये तैयार बैठे हुए राजा परीक्षित से पुकार कर कहते हैं—

**कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महान् गुणः ।**
**कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसङ्गः परं व्रजेत् ।।**
**कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ।**
**द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ।।**

(१२। ३। ५१-५२)

'हे राजन् ! इस दोषों से भरे हुए कलियुग में एक महान् गुण यह है कि केवल श्रीकृष्ण के 'नाम-कीर्तन' से ही मनुष्य कर्मबन्धन से मुक्त होकर

परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। सत्ययुग में ध्यान से, त्रेता में यज्ञों से और द्वापर में परिचर्या से जो पद प्राप्त होता था वही कलियुग में केवल श्रीहरिनामकीर्तन से प्राप्त होता है।'

इसीलिये चार सौ वर्ष पूर्व बंगाल के नवद्वीप नामक स्थान में प्रेमावतार श्रीश्रीचैतन्यदेव ने अवतीर्ण होकर मुक्तकण्ठ से इसी बात की घोषणा की थी कि 'भय न करो, सबसे बड़ा प्रायश्चित और परमात्मा के प्रेमसम्पादन का परमोत्तम साधन 'श्रीहरिनाम' है।

शास्त्रों में नाम-महिमा के इतने अधिक प्रसङ्ग हैं कि उनकी गणना करना भी बड़ा कठिन कार्य है। इतना होते हुए भी जगत के सब लोग नाम पर विश्वास क्यों नहीं करते। नामका साधन तो कठिन नहीं प्रतीत होता। पूजा, होम, यज्ञ आदिमें जितना अधिक प्रयास और सामग्रियों का संग्रह करना पड़ता है, इसमें वह सब कुछ भी नहीं करना पड़ता।

नामके विस्तार में बड़ी बाधा पड़ती है, वह है नामको पापका साधन बना लेना।

पद्मपुराण का बचन है—

**नाम्नो बलाद् यस्य हि पापबुद्धिर्न विद्यते तस्य यमैर्हि शुद्धिः।**

जो नाम का सहारा लेकर पापोंमें प्रवृत्त होता है वह अनेक प्रकार की यम-यातना भोग करने पर भी शुद्ध नहीं होता।

**जो नर नामप्रताप बल, करत पाप नित आप।**
**बज्रलेप ह्वै जाय ते, अमिट सुदुष्कर पाप॥**

इसमें कोई सन्देह नहीं कि—

**परदाररतो वापि परापकृतिकारकः।**
**संशुद्धो मुक्तिमाप्नोति हरेर्नामानुकीर्तनात्॥**

(मत्स्यपुराण)

'परस्त्रीगामी और परपीडनकारी भी हरि-नाम-कीर्तन से शुद्ध होकर मुक्तिको प्राप्त हो जाता है।' इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि भागवत के

कथनानुसार चोर, शराबी मित्रद्रोही, स्त्री, राजा, पिता, गौ तथा ब्राह्मण की हत्या करनेवाला, गुरुपत्नीगामी और अन्यान्य बड़े-बड़े पापों में रत रहने वाला पुरुष भी भगवान् के नाम-ग्रहणमात्र से तत्काल मुक्त हो जाता है।

**पातक उपपातक महा, जेंते पातक और ।**
**नाम लेते तत्काल सब, जरत खरत तेहि ठौर ॥**

'पहले कितने भी बड़े-बड़े पाप सञ्चित क्यों न हों, सच्चे मनसे भगवन्नाम लेते ही वे सब अग्नि में ईंधन की तरह जल जाते हैं; परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि भगवन्नाम लेनेवालों को पाप करने के लिये छूट मिल जाती है। भगवान का नाम भी लेंगे और साथ-ही साथ मनमाने पाप भी करते रहेंगे, इस प्रकार की जिनकी कुवासना है, उनके लिये तो फल उलटा ही होता है। नाम-महिमा की दुहाई देकर पाप करने वाले को नरक में भी जगह नहीं मिलती। जो लोग जान बूझ कर धन के लोभ से चोरी करके, परस्त्रीगमन करके, क्रोध या लोभवश हिंसा करके, गुरु-शास्त्रों का अपमान करके, मद्यपान, म्लेच्छ-भोजनादि करके, स्त्रीहत्या-भ्रूणहत्या करके और झूठी गवाही देकर या झूठा मामला सजा करके 'राम-राम' कह देते हैं और अपना छुटकारा मान लेते हैं, उनके पापों का नाश नहीं होता । उनके पाप तो वज्रलेप हो जाते हैं । ऐसे ही लोगों को देखकर अच्छे लोग भी नाम-महिमाको अर्थवाद ( स्तुतिमात्र ) समझकर नामपरायण नहीं होते हैं ।

**अश्रद्दधाने विमुखेऽप्यशृण्वति यश्चोपदेशः शिवनामापराधः ।**

'अश्रद्धालु, नामविमुख और सुनना न चाहनेवाले को नाम का उपदेश करना कल्याणरूप नाम का एक अपराध है ।'

## नामके दस अपराध

बतलाये गये हैं—(१) सत्पुरुषोंकी निन्दा, (२) नामोंमें भेदभाव, (३) गुरुका अपमान, (४) शास्त्रनिन्दा, (५) हरिनाममें अर्थवाद (केवल स्तुतिमात्र है ऐसी कल्पना), (६) नामका सहारा लेकर पाप करना, (७) धर्म, व्रत, दान, और यज्ञादिके साथ नामकी तुलना, (८) अश्रद्धालु,

हरि-विमुख और सुनना न चाहने वाले को नाम का उपदेश करना, (९) नामका माहात्म्य सुनकर भी उसमें प्रेम न करना और (१०) 'मैं'-'मेरे' तथा भोगादि विषयों में लगे रहना।

नाम लेने में कदापि इस लोक और परलोक के भोगों की जरा-सी भी कामना नहीं करनी चाहिये।

जो लोग भगवन्नाम का साधारण बातों में प्रयोग करते हैं वे वास्तव में भगवन्नाम की अपार महिमा से सर्वथा अनभिज्ञ हैं या उसपर उनका विश्वास नहीं है।

## नाम-भजन के कई प्रकार

हैं—जप, स्मरण और कीर्तन ! इनमें सबसे पहले जपकी बात कही जाती है। परमात्मा के जिस नाम में रुचि हो, जो अपने मनको रुचिकर हो, उसी नाम की परमात्मा की भावना से बार-बार अवृत्ति करने का नाम जप है। जपकी शास्त्रों में बड़ी महिमा है। जपको यव माना है और श्रीगीता जी में भगवान् के इस कथन से कि 'यवानां जपयज्ञोऽस्मि' (यज्ञों में जपयज्ञ मैं हूं) जपका महत्त्व बहुत ही बढ़ गया है।

## कलिसन्तरणोपनिषद्

—में नाम-जपकी विधि और उसके फलका बड़ा सुन्दर वर्णन है, पाठकों के लाभार्थ उसे यहां उद्धृत किया जाता है।

**हरिः ॐ। द्वापरान्ते नारदो ब्रह्माणं जगाम कथं भगवन् गां पर्यटन् कलिं सन्तरेयमिति ।१।**

द्वापर के समाप्त होने के समय श्रीनारदजी ने ब्रह्माजी के पास जाकर पूछा कि 'हे भगवन् ! मैं पृथ्वी की यात्रा करनेवाला कलियुग को कैसे पार करूं?'

**स होवाच ब्रह्मा साधु पृष्टोऽसि सर्वश्रुतिरहस्यं गोप्यं तच्छृणु येन कलिसंसारं तरिष्यसि। भगवत आदिपुरुषस्य नारायणस्य नामोच्चारणमात्रेण निर्धूतकलिर्भवति ।२।**

'ब्रह्माजी बोले कि तुमने बड़ा उत्तम प्रश्न किया है। सम्पूर्ण श्रुतियों का जो गूढ़ रहस्य है, जिससे कलि-संसार से तर जाओगे, उसे सुनो। उस आदिपुरुष भगबान् नारायण के नामोच्चारणमात्र से ही कलि के पातकों से मनुष्य मुक्त हो सकता है।'

**नारदः पुनः पप्रच्छ। तन्नाम किमिति। स होवाच हिरण्यगर्भः।**

**हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।**
**हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥**

**इति षोडशकं नाम्नां कलिकल्मषनाशनम्।**
**नातः परतरोपायः सर्ववेदेषु दृश्यते॥**

**इति षोडशकलावृतस्य पुरुषस्य आवरणविनाशनम्।**

**ततः प्रकाशते परं ब्रह्म मेघापाये रविरश्मिमण्डलीवेति।३।**

'श्रीनादजीने फिर पूछा कि वह भगवान् का नाम कौन्-सा है?' ब्रह्माजीने कहा वह नाम है—

**हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।**
**हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥**

इन सोलह नामोंके उच्चारण करनेसे कलिके सम्पूर्ण पातक नष्ट हो जाते हैं। सम्पूर्ण वेदोंमें इससे श्रेष्ठ और कोई उपाय नहीं देखनेमें आता। इन सोलह कलाओंसे मुक्त पुरुषका आवरण (अज्ञानका परदा) नष्ट हो जाता है और मेघोंके नाश होनेसे जैसे सूर्यकिरणसमूह प्रकाशित होता है वैसे ही आवरणके नाश ब्रह्मका प्रकाश हो जाता है।

**पुनर्नारदः पप्रच्छ भगवन् कोऽस्य विधिरिति। तं होवाच नास्य विधिरिति। सर्वदा शुचिरशुचिर्वा पठन् ब्राह्मणः सलोकतां समीपतां सरूपतां सायुज्यतामेति।४।**

'नारदजी ने फिर पूछा कि हे भगवान्! इनकी क्या विधि है?' ब्रह्मा जी ने कहा कि (कोई विधि नहीं है। सर्वदा शुद्ध हो या अशुद्ध, नामोच्चारण

मात्र से ही सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य-मुक्ति मिल जाती है।'

**यदास्य षोडशकस्य सार्धत्रिकोटिर्जपति तदा ब्रह्महत्यां तरति।**
**स्वर्णस्तेयात् पूतो भवति। वृषलीगमनात् पूतो भवति।**
**सर्वधर्मपरित्यागपापात् सद्यः शुचितामाप्नुयात्।**
**सद्यो मुच्यते सद्यो मुच्यते इत्युपनिषत्।५।**

ब्रह्माजी फिर कहने लगे कि यदि कोई पुरुष इन सोलह नामों के साढ़े तीन करोड़ जप कर ले तो वह ब्रह्महत्या, स्वर्ण की चौरी, शूद्र-स्त्री-गमन और सर्वधर्मत्यागरूपी पापों से मुक्त हो जाता है। वह तत्काल मुक्ति को प्राप्त होता है। तत्काल ही मुक्ति को प्राप्त होता है।'

श्रीभगवान् बतलाते हैं—

**अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।**
**तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः॥**

(गीता ८।१४)

'जो पुरुष अनन्यचित होकर सदा-सर्वदा मुझे स्मरण करता है उस मुझे निरन्तर स्मरण करने वाले योगीके लिये मैं सुलभ हूं।

गोसाईंजी महाराज ने भी कहा है—

**कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।**
**तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥**

कल्याण चाहने वाले लोगों को चाहिये कि वे मन में विषयों के बदले धीरे-धीरे भगवान् को स्थान दें।

नियम कर लेना चाहिये कि मनसे इतने नाम-जप प्रति दिन अवश्य करेंगे। कम-से-कम उतना जप तो प्रतिदिन हो ही जाना चाहिए।

नाम-स्मरण करते-करते जब स्मरण की बान पड़ जाती है तब तो मन कभी उसे छोड़ता ही नहीं। स्मरण से क्या नहीं होता? यदि अन्तकाल में परमात्मा के नाम का स्मरण हो जाय तो उसके मोक्ष में जरा-सा भी सन्देह

नहीं रह जाता। भगवान् ने अर्जुन से कहा है कि—

**अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।**
**यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ।।**

'जो पुरुष मृत्युकाल में मुझे स्मरण करता हुआ शरीर त्यागकर जाता है वह मुझे ही प्राप्त होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं !'

जब मनुष्य किसी दुःखसे घबराकर जगत्के सहायकोंसे निराश होकर भगवान्से आश्रय-याचना करता हुआ जोरसे उनका नाम लेकर पुकारता है तब भगवान् उसी समय भक्तकी इच्छाके अनुकूल स्वरूप धारण कर उसे दर्शण देते और उसका दुःख दूर करते हैं । श्रीभगवान्के रामावतार और कृष्णावतारमें असुरोंके द्वारा पीड़ित सुर-मुनियोंने मिलकर पहले आर्तस्वरसे कीर्तन ही किया था ।

सबसे निराश होनेके बाद ही भगवान् की अनन्य स्मृति हुआ करती है। दुःशासन बड़े जोरसे साड़ी खींचता है । एक झटका और लगते ही द्रौपदीकी लज्जा जा सकती है द्रौपदीकी उस समय की दीन अवस्था हम लोगोंकी कल्पनामें भी पूरी नहीं आ सकती । महलोंके अन्दर रहनेवाली एक राजरानी, पृथ्वीके सबसे बड़े पांच वीरों द्वारा रक्षिता कुलरमणी रजस्वला-अवस्थामें बड़े-बूढ़े तथा वीर पतियोंके सामने नंगी की जाती हो, उस समय उसको कितनी मर्मवेदना होती है इस बातको वही जानती है। कवियोंकी कलम शायद कुछ कल्पना करे । खैर, द्रौपदीने निराश होकर भगवान्का स्मरण किया और वह व्याकुल होकर पुकार उठी—

**गोविन्द द्वारकावासिन् कृष्ण गोपीजनप्रिय ।**
**कौरवैः परिभूतां मां किं न जानासि केशव ।।**
**हे नाथ हे रमानाथ व्रजनाथार्तिनाशन ।**
**कौरवार्णवमग्नां मामुद्धरस्व जनार्दन ।।**
**कृष्ण कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्वभावन ।**
**प्रपन्नां पाहि गोविन्द कुरुमध्येऽवसीदतीम् ।।**

'हे द्वारकावासी गोविन्द ! हे गोपीजनप्रिय कृष्ण ! क्या मुझ
रवोंसे घिरी हुईको तू नहीं जानता ? हे नाथ; रमानाथ, व्रजनाथ,
व्रनाशक जनार्दन ! मुझ कौरवरूपी समुद्रमें डूबी हुईका उद्धार कर !
विश्वात्मा ! विश्वभावन कृष्ण ! हे महायोगी कृष्ण ! कौरवोंके बीच
हताश होकर तेरे शरण आनेवाली मुझको तू बचा !'

व्याकुलतापूर्ण नामकीर्तनका फल तत्काल होता है, जब सबकी आशा
ड़कर केवलमात्र परमात्मापर भरोसा कर उसे एक मनसे कोई पुकारता
तब वह करुणासिन्धु भगवान् एक क्षण भी निश्चिन्त और स्थिर नहीं
ह सकता । उसे भक्तके कामके लिये दौड़ना ही पड़ता है । नामकी
कार होते ही द्रौपदीके वस्त्रोंमें भगवान् आ घुसे, वस्त्रावतर हो गया !
स्त्रका ढेर लग गया । दस हजार हाथियोंका बल रखनेवाली वीर दुःशासन
ी भुजाएं फटने लगीं ।

भक्त सूरदासजी कहते हैं—

**सुन री मैंने निरबल के बल राम ।**
**पिछली साख भरूं संतनकी, आड़े संवारे काम ॥१॥**
**जब लगि गज बल अपनो बरत्यो, नेक सरचो नहि काम ।**
**निरबल ह्वै बल राम पुकारचो, आये आधे नाम ॥२॥**
**द्रुपद-सुता निरबल भइ ता दिन, तजि आये निज धाम ।**
**दुस्सासनकी भुजा थकित भई, बसनरूप भये स्याम ॥३॥**
**अप-बल तप-बल और वाहु-बल, चौथो है बल दाम ।**
**'सुर' किसोर कृपातें सब बल, हारेको हरिनाम ॥४॥**

इसी प्रकार गजराजकी कथा प्रसिद्ध है । वहां भी इसी तरहकी
व्याकुलतापूर्ण नामकी पुकार थी । यदि आज भी कोई यों ही सच्चे मनसे
व्याकुल होकर पुकारे तो यह निश्चय है कि उसके लोक-परलोक दोनोंकी
सिद्धि निश्चितरूपेण हो सकती है । इस बातका कई लोगोंको कई तरह
का प्रत्यक्ष अनुभव है । अतएव प्रातःकाल, सायंकाल, रातको सोते समय
भगवान्‌का कीर्तन अवश्य करना चाहिये । जहांतक हो सके कीर्तन निष्काम
एवं केवल प्रेमभावसे ही करना उचित है ।

प्रेमभरे कीर्तनमें कीर्तनके नायक भगवान् स्वयं उपस्थित रहते हैं। उनका यह प्रण है—

नाहं वसामि वैकुण्टे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ।।

( आदिपु० १९। ३५ )

'मैं वैकुण्ठमें या योगियोंके हृदयमें नहीं रहता। मेरे भक्त जहां मिलकर मेरा गान करते हैं मैं वहीं रहता हूं ।'

वामनपुराणका वचन है—

नारायणो नाम नरो नराणाँ
प्रसिद्धचौरः कथितः पृथिव्याम् ।
अनेकजन्मार्जितपापसञ्चयं
हरत्यशेषं श्रुतमात्र एव ।।

'पृथ्वीमें नारायण-नामरूपी नर प्रसिद्ध चोर कहा जाता है; क्योंकि वह कानोंमें प्रवेश करते ही मनुष्योंके अनेक जन्मार्जित पापोंके सारे सञ्चय को एकदम चुरा लेता है ।'

न नामसदृशं ज्ञानं न नामसदृशं व्रतम् ।
न नामसदृशं ध्यानं न नामसदृशं फलम् ।।

न नामसदृशस्त्यागो न नामसदृशः शमः ।
न नामसदृशं पुण्यं न नामसदृशी गतिः ।।

नामैव परमा मुक्तिर्नामैव परमा गतिः ।
नामैव परमा शान्तिर्नामैव परमा स्थितिः ।।

नामैव परमा भक्तिर्नामैव परमा मतिः ।
नामैव परमा प्रीतिर्नामैव परमा स्मृतिः ।।

नामैव कारणं जन्तोर्नामैव प्रभुरेव च ।
नामैव परमाराध्यो नामैव परमो गुरुः ॥

'नामके समान न ज्ञान है न व्रत है, न ध्यान है, न फल है, न दान है, न शम है, न पुण्य है, और न कोई आश्रय है । नाम ही परम मुक्ति है, नाम ही परम गति है, नाम ही परम शान्ति है, नाम ही परम निष्ठा है, नाम ही परम भक्ति है, नाम ही परम बुद्धि है, नाम ही परम प्रीति हैं, नाम ही परम स्मृति है; नाम ही जीवका कारण है, नाम ही प्रभ है, नाम ही परम आराध्य है और नाम ही परम गुरु है ।,

गोसाईंजी महाराज कहते हैं—

धन्य धन्य माता पिता, धन्य पुत्रवर सोइ ।
तुलसी जो रामहि भजें, जैसेहु कैसेहु होइ ॥
तुलसी जाके बदनते, धोखेहु निकसत राम ।
ताके पगकी पगतरी, मोरे तनुको चाम ॥
तुलसी भक्त श्वपच भलो, भजै रैन दिन राम ।
ऊंचो कुल केहि कामको, जहां न हरि को नाम ॥
अति ऊंचो भूधरनपर, भुजगनके अस्थान ।
तुलसी अति नीचे सुखद, ऊख अन्न अरु पान ॥

सब मिलकर बोलो श्रीभगवन्नामकी जय !

## रामतारकषडक्षरमहामन्त्रः ।

अस्य श्रीरामतारकषडक्षरमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीरामचन्द्रः परमात्मा देवता रां बीजं नमः शक्तिः रामायेति कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थं रामतारकषडक्षरमहामन्त्रजपे विनियोगः ।

### वर्णन्यासः

रां ब्रह्मरंध्रे । रां भ्रूमध्ये । मां हृदि । यं नाभौ । नं अण्डेषु । मः पादयोः ।

### करन्यासः ।

रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । रीं तर्जनीभ्यां नमः । रूं मध्यमाभ्यां नमः । रैं अनामिकाभ्यां नमः । रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अङ्गन्यासः ।

रां हृदयाय नमः । रीं शिरसे स्वाहा रूं शिखायै वषट् । रैं कवचाय हुम् । रौं नेत्रत्रयाय बौषट् । रः अस्त्राय फट् । भूर्भुवस्स्वरोमिति दिग्बंधः ।

## ध्यानम्

कालाम्भोधर कान्तिकान्तमनिशं वीरासनाध्यासितं ।
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरां रक्ताम्बुजं जानुनि ।
सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभं राघवं ।
पश्यतं मुकुटाङ्गदादि विबुधान् कल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे ।

मूल मन्त्रः—ओं रां रामाय नमः ।

## गायत्रीरामायणम् ।

चतुर्विंशत्सहस्राणि श्लोकानामुक्तवानृषिः ।
तथा सर्गशतान्पञ्च षट् काण्डानि तथोत्तरम् ॥ रा. बाल. स. ४ श्लो. २ ।

| चतुर्विशत्यक्षराणि | | काण्डम् सर्ग श्लो. पृ. |
|---|---|---|
| त | तपःस्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम् । | |
| | नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम् ।१। | बाल ।१।१।१। |
| स | स हत्वा राक्षसान् सर्वान्यज्ञघ्नान् रघुनन्दनः । | |
| | ऋषिभिः पूजितस्तत्र यथेन्द्रो विजये पुरा ।२। | ,, ।३०।२४।४८। |
| वि | विश्वामित्रः सरामस्तु श्रुत्वा जनकभाषितम् । | |
| | वत्स रामधनुः पश्य इति राघवमब्रवीत् ।३। | ,, ।६७।१२।८८। |
| तु | तुष्टावास्य तदा वंशं प्रविश्य स विशांपतेः । | |
| | शयनीयं नरेन्द्रस्य तदासाद्य व्यतिष्ठत ।४। | अयोध्या ।१५।१६।१३०। |
| व | वनवासं हि सङ्ख्याय वासांस्याभरणानि च । | |
| | भर्तारमनुगच्छन्त्यै सीतायै श्वशुरो ददौ ।५। | ,, ।४।१४।१७२। |
| रा | राजा सत्यं च धर्मश्च राजा कुलवतां कुलम् । | |
| | राजा माता पिता चैव राजा हितकरो नृणाम् ।६। | ,, ।६७।३४।२१५। |
| नि | निरीक्ष्य स मुहूर्तं तु ददर्श भरतो गुहम् । | |

उटजे राममासीनं जटामण्डलधारिणम् ।७। ,, ।६।९२५।२५६।

य यदि बुद्धिः कृता द्रष्टुमगस्त्यं तं महामुनिम् ।

अद्यैव गमने बुद्धिं रोचयस्व महामते ।८। अरण्य ।११।४४।३००।

भ भरतस्यार्यपुत्रस्य श्वश्रूणां मम च प्रभो ।

मृगरूपमिदं दिव्यं विस्मयं जनयिष्यति ।९। ,, ।४३।१८।१४५।

ग गच्छ शीघ्रमितो वीर सुग्रीवं तं महाबलम् ।

वयस्यं तं कुरु क्षिप्रमितो गत्वाद्य राघव ।१०। ,, ।७२।१७।३८९।

दे देशकालौ भजस्वाद्य क्षममाणः प्रियाप्रिये।

सुखदुःखसहः काले सुग्रीववशगो भव ।११। किष्किन्धा ।२२।२०।४३५

ब बन्दितव्यास्तपःसिद्धास्तपसा वीतकल्मषाः ।

प्रष्टव्या चापि सीतायाः प्रवृत्तिर्विनयान्वितैः ।१२। ,, ।४३।३३।४७८।

स सनिर्जित्यपुरीं लङ्कां श्रेष्ठां तां कामरूपिणीम् ।

विक्रमेण महातेजा हनूमान् कपिसत्तमः ।१३। सुन्दर ।४।१।५२२।

ध धन्या देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः ।

मम पश्यन्ति ये वीरं रामं राजीवलोचनम् ।१४। ,, ।२६।४१।५६०।

म मङ्गलाभिमुखी तस्य सा तदासीन्महाकपेः ।

उपतस्थे विशालाक्षा प्रयता हव्यवाहनम् ।१५। ,, ।५३।२७।६०९।

हि हितं महार्थं मृदुहेतुसंहितं व्यतीतकालायति संप्रतिक्षमम् ।

निशम्य तद्वाक्यमुपस्थितज्वरः प्रसङ्गवानुत्तरमेतदब्रवीत् ।१६। युद्ध ।१०।२८।६५३।

ध धर्मात्मा राक्षसश्रेष्ठः संप्राप्तोऽयं विभीषणः ।

लङ्कैश्वर्यमिदं श्रीमान् ध्रुवं प्राप्स्येत्यकण्टकम् ।१७। ,, ।४१।६८।७५०।

यो यो वज्रपाताशनिसन्निपातान्न चुक्षुभे नापि चचाल राजा ।

स रामबाणाभिहतो भृशार्तः चचाल चापं च मुमोच वीरः ।१८। ,, ।५९।१४१।७४४।

य यस्य विक्रममासाद्य राक्षसा निधनं गताः ।

तं मन्ये राघवं वीरं नारायणमनामयम् ।१९। ,, ।७२।११।७८२।

न न ते ददृशिरे रामं दहन्तमरिवाहिनीम् ।

मोहिताः परमास्त्रेण गांधर्वेण महात्मना ।२०। ,, ।९३।२६।८२६।

प्र प्रणम्य दैवतेभ्यश्च ब्राह्मणेभ्यश्च मैथिली ।

बद्धाञ्जलिपुटा चेदमुवाचाग्निसमीपतः ।२१। ,, ।९३।२६।८२६।

च चालनात्पर्वतस्यैव गणा देवस्य कम्पिताः ।
चचाल पार्वती चापि तदाश्लिष्टा महेश्वरम् ।२२। उत्तर ।१६।२६।६२१।

द दाराः पुत्रः पुरं राष्ट्रं भोगाच्छादनभोजनम् ।
सर्वमेवाविभक्तं नौ भविष्यति हरीश्वर ।२३। ,, ।३४।४१।६६७।

य यामेव रात्रिं शत्रुघ्नः पर्णशालामुपाविशत् ।
तामेव रात्रिं सीतापि प्रसूता दारकद्वयम् ।२४। ,, ।६६।१।१०१८।

## वेदोक्तराममन्त्रः ।

भद्रो भद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् ।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्नुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् ।। ऋग्वेद मं० १० सू० ३ मन्त्र ३ ।

## ।। श्रीआदित्यहृदयस्तोत्र ।।

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् ।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ।१।

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् ।
उपागम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा ।२।

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम् ।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ।३।

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
जपावहं जपन्नित्यमक्षयं परमं शिवम् ।४।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ताशोक – प्रशमनमायुर्वर्धन – मुत्तमम् ।५।

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ।६।

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः ।
एषा देवासुरगणांल्लोकान्पाति गभस्तिभिः ।७।

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः ।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपांपतिः ।८।

पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ।९।

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् ।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ।१०।

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोऽशुमान् ।११।

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः ।
अग्निगर्भोऽदितेःपुत्रः शंखः शिशिरनाशनः ।१२।

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः ।
घनवृष्टिरपां मित्रो विंध्यवीथी प्लवंगमः ।१३।

आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ।
कविर्विश्वो महातेजारक्तः सर्वभवोद्भवः ।१४।

नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः ।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तुते ।१५।

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ।१६।

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः ।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ।१७।

नमः उग्राय वीराय सारंगाय नमो नमः ।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोस्तुते ।१८।
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे ।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ।१६।
तमोघ्नाय हिमघ्नाय, शत्रुघ्नायामितात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ।२०।
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ।२१।
नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ।२२।
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाग्निहोत्रं च फल चैवाग्निहोत्रिणाम् ।२३।
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ।२४।
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कांतारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन्पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ।२५।
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यति ।२६।
अस्मिन्क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि ।
एव मुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ।२७।
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ।२८।

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ।२९।
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत् ।
सर्वंयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभत् ।३०।

अथ रविरवदन्निरीक्ष्यरामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः ।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ।३१।

## एकश्लोकी - रामायणम्

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेही हरणं जटायुमरणं सुग्रीव-सम्भाषणम् ।
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद् रावण-कुम्भकर्णहननं चैतद्धि रामायणम् ।

## एकश्लोकी - भागवतम्

आदौ देवकि-देवगर्भ-जननं गोपीगृहे वर्धनं
मायापूतन-जीवितापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम् ।
कंसच्छेदन - कौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनं
एतद्भागवतं पुराणकथितं श्री कृष्णलीलामृतम् ।।

## एकश्लोकी - महाभारतम्

आदौ पाण्डव धार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनं-
द्युते श्रीहरणं वने विचरणं मत्स्यालये वर्तनम् ।
लीला-गो-ग्रहणं रणे विहरणं सन्धिक्रियाजृम्भणं
पश्चाद् भीष्म-सुयोधनादि-हननं चैतन्महाभारतम् ।।

## एकश्लोकी - दुर्गा

या दुर्गा मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मर्दिनी ।
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डदलिनी या रक्तबीजाशिनी ॥
या श्रीः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या ब्रह्मविद्याप्रदा ।
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ।

## ग्रहजातकम्

सप्तमीभरणी सूर्ये चन्द्रेचित्रात्रयोदशी । (चतुर्दशी
उषाभौमे च दशमी धनिष्ठा नवमी बुधे ।
जीवोत्तरफारुद्रो(एकादशी)ज्येष्ठाभेनवमी भृगौ ।
पौष्णाष्टमीशनिर्जातः राहुर्भरणी पूर्णिमा ।
अमाऽऽश्लेषाभवः केतुः तिथि भं ग्रहजातकम् ।
(वैशाखेऽमातिथौ पौष्ण्ये शनिर्जात इतीरितम् ।
शनेर्जयन्ती साज्ञेया व्रतपूजां तदा चरेत् ।)
ग्रहजातक उद्वाहविद्याभ्यास कृषिक्रिया ।
प्रवेशं च प्रवासश्च प्रतिष्ठा व्रतदीक्षणम् ।
वाणिज्यं च विवादं च सेवादीनां क्रमेण च ।
वर्जयेत्सर्वकार्येषु तिथ्यृक्षग्रहजातकम् ।
विवाहेऽपि च वैधव्यं प्रवासे क्लेशमादिशेत् ।
गृहप्रवेशे दाहार्तिः सेवाभवति निष्फला ।
चैत्यध्वंसःप्रतिष्ठायां दीक्षायां व्रतहानिदम् ।
विद्यारम्भे च मूर्खत्वं कृषिश्च निष्फलोदिता ।
भस्मत्वं वस्त्रकार्येषु मुनिभिः परिकीर्तितम् ।

# आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

## शिवजी की आरती

जय शिव ओंकारा, स्वामी हर भज ओंकारा ।
भोले ऊपर जलधारा, शिव पारवती का प्यारा, भोले
ओढ़त मृगछाला, भोले गल मोतियन माला ।
संतो बोलो जय कारा ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, भोले भाले नाथ महादेव ।
अर्धांगी गौरां ॥ ओं हर हर हर महादेव ।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे । भोले०
हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजे । ओं हर०
दो भुज चार चतुर भुज अष्ट भुज तुम सोहे । भोले०
तीनों रूप निरन्तर त्रिभुवन जग मोहे । ओं हर०
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे । भोले०
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे । ओं हर०
अक्षमाला, वनमाला, रुण्डमाला धारी । भोले०
चन्दन मृगमद लेपन भाले शशि धारी । ओं हर०
कर में कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता । भोले०
जग हरता जग करता जग पालन करता । ओं हर०
गायत्री पारबती लक्ष्मी के वर विष्णु । भोले०
पारवती अर्धांगी शिव गौरां संगे । ओं हर०
ब्रह्माविष्णु सदाशिव तीनों एक सरूपा अन्तर न करसों । भोले०
हर २ जपते ब्रह्मा शिव २ रटते विष्णु भव सागर तरसों । ओं हर०
सच्चदानन्द स्वरूपा त्रिभुवन के राजे । भोले०
चारों वेद उचारें बन बन के राजे । ओं हर०

हाथों में कंगन कानों में कुण्डल गल मोतियन माला । भोले०
जटा में गंग विराजे औढ़त मृगछाला । ओं हर०
चौसठ योगन मंगल गावें नृत्य करे भैरो । भोले०
बाजे ताल मृदंगा और बाजें डमरू । ओं हर०
काशी में विश्वनाथ बिराजे नन्दा ब्रह्मचारी । भोले०
नित उठ भोग लगावें शिवजी के दर्शन पावे महिमा अति भारी। ओं हर०
शिव जी की आरती निसदिन जो नर गावे । भोले०
कहत शिवानन्द स्वामी मन मांगा फल पावे । ओं हर०
मात पिता तुम मेरे शरण पड़ूं मैं किसकी । भोले०
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी । ओं हर०
पारवती पर्बत में बस रही शंकर कैलाशा । भोले०
आक धतूर के भोजन भस्मी में वासा । ओं हर०

## ❀ उपसंहारः ❀

### अन्तिमकाव्यम् —

(श्री) पूर्णातमानो रसयुगनखे २०४६ वैक्रमे श्रावणे मा
गौरीकुण्डे पथिकसुखदं रम्य हर्म्यं विधाय ।।
कर्कस्थेऽर्के धवल दलभाक् पक्षतौ बुद्धवारे
योगेनान्त्ये जनुभुवि महादेवलोकं प्रपन्नाः ।।